Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीन

सिद्ध शाबर मन्त्र 201

[आकर्षण, वशीकरण, सम्मोहन, स्तम्भन, व्यापार में लाभ, नजरदोष एवं अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति के लिये सरल एवं सिद्ध शाबर मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र का संग्रह]

सम्पादन

प्रमोद कुमार शास्त्री

मो0 : 9837019062
जुगल किशोर भीमसैन (बुकसेलर)
धार्मिक पुस्तकें, कर्म काण्ड पुस्तकें
धार्मिक फोटो, सीनरी आदि उपलब्ध है।
पल्टन बाजार, निकट कोतवाली, देहरादून।

प्रकाशक :

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी-221001

फोन : 2392471, 2392543

सन् २०१२]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

सम्पादन—
प्रमोद कुमार शास्त्री

मुद्रक—
भारत प्रेस, वाराणसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शाबर मन्त्र साधकों हेतु आवश्यक नियम

मानव जीवन का क्षण-क्षण आवश्यकताओं और समस्याओं से घिरा हुआ है। किसी को धन चाहिए, किसी को सन्तान। किसी को रोग मुक्ति किसी को शत्रु पराभव। अभीष्ट की प्राप्ति ही मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र की समस्त साधना का उद्देश्य है।

जिन दश कर्मों के द्वारा मानव-जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण किया जाता है, उनके नाम इस प्रकार हैं।

१. शान्ति कर्म, २. पुष्टि कर्म, ३. उच्चाटन कर्म, ४. मोहन कर्म, ५. वशीकरण कर्म, ६. जृम्भण कर्म, ७. उच्चाटन कर्म, ८. स्तम्भन कर्म, ९. विद्वेषण कर्म और १० मारण कर्म।

जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य इन्हीं में से किसी न किसी कर्मों की पूर्ति हेतु प्रयास करता रहता है। स्पष्टता के लिए इन्हें इस प्रकार व्याख्यायित कर सकते हैं—

शान्ति कर्म

माया मोह से परे जब व्यक्ति आध्यात्मिक चिन्तन की कामना करता है, तो इस प्रयास में उसके द्वारा किये जाने वाले धार्मिक कार्य, पूजा, पाठ, जप, तप, व्रत, मन्त्रानुष्ठा शान्ति कर्म कहलाते हैं।

पुष्टि कर्म

पुष्टि का अर्थ पोषण करना होता है। जब कोई साधक अपनी किसी उपलब्धि को सुरक्षित या उसके संवर्द्धन के लिये प्रयास करता है तो उसे पुष्टि कर्म कहते हैं। वास्तव में शान्ति और पुष्टि कर्म में कोई विशेष भेद नहीं है। दोनों लगभग समान उद्देश्य होता है।

आकर्षण कर्म

किसी को अपनी ओर खींचना ही आकर्षण है। 'आ' उपसर्ग के द्वारा इसके अर्थ भाव में विशेषता पायी गयी है। कर्ष का अर्थ है—'खिंचाव'। इसी के द्वारा कर्षण क्रिया उत्पन्न हुई, जिसका अर्थ है—'खींचने की क्रिया'। अर्थात् आकर्षण का अर्थ होता है—'अपनी ओर खींचना या आकर्षित करना।' किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए अनेक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोहन कर्म

वह कर्म जिसके उद्देश्य में किसी के अपने प्रति मुग्ध करने का भाव निहित हो, मोहन कर्म कहलाता है। मोहन अथवा सम्मोहन यह दोनों एक ही भाव प्रदर्शित करते हैं। इसका दुरुपयोग भी हो सकता है। किसी को मुग्ध करके उसकी दिनचर्या अथवा सामाजिक पारिवारिक स्थिति में व्यतिक्रम उत्पन्न किया जा सकता है। इस कारण मोहन कर्म को कुछ निन्दनीय भी माना गया है।

वशीकरण कर्म

वशीकरण का तात्पर्य है—किसी व्यक्ति अथवा प्राणी को अपने वश में करना। जिन मन्त्रों के प्रयोगों से प्राणी मात्र को वश में किया जाता हो, वे सभी वशीकरण मन्त्र कहलाते है। इन मन्त्रों को प्रयोग मित्र एवं शत्रु दोनों पर किया जाता है। वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग ज्यादातर किसी स्त्री या पुरूष को अपने वश में करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेश्या, राजा, राज-कर्मचारी आदि को भी अपने वश में करने के लिए मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

जृम्भण कर्म

जृम्भण भी वशीकरण का एक अन्य रूप है। इन दोनों बहुत थोड़ा ही अन्तर है। वशीकरण में वशीकृत व्यक्ति साधक की इच्छानुसार सभी कार्यों को करता है। वह उसका मानसिक दास हो जाता है। ठीक यही स्थिति जृम्भण कर्म में भी होती है।

उच्चाटन कर्म

वह क्रिया साधन जिसके द्वारा अभीष्ट व्यक्ति का मन उचट जाय, उच्चाटन कर्म कहलाता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति में संशय, भ्रम, भय, अविश्वास, अनास्था, विरक्ति और अनिश्चितता की भावना जागृत हो जाती है।

उच्चाटन कर्म जिस व्यक्ति पर किया जाता है उसका बुद्धि सन्तुलन नष्ट हो जाता है। वह स्थिर-चित्त होकर न तो कहीं बैठ सकता है, न कोई कार्य ही कर सकता है।

स्तम्भन कर्म

जिस मन्त्र से साधक किसी व्यक्ति, पशु-पक्षी या गतिमान वस्तु या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र शक्ति को स्तम्भित कर देता है, वह प्रक्रिया 'स्तम्भन-कर्म' कहलाती है। इस क्रिया का सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर होता है।

बुद्धि को जड़, निष्क्रिय हतप्रभ करके व्यक्ति को विवेकशून्य, वैचारिक रूप से असमर्थ बनाकर उसके क्रियाकलापों को रोक देना, स्तम्भ कर्म की प्रमुख प्रतिक्रिया है। मुख्य रूप से स्तम्भन का प्रभाव व्यक्ति की किसी गतिविधि पर होता है और उसकी वह गति रूक जाती है। वह व्यक्ति चाहते हुए भी विवश जैसी स्थिति में आकर, उसे पूरा नहीं कर पाता।

विद्वेषण कर्म

किसी की प्रगति और समृद्धि को देखकर मानसिक पीड़ा का अनुभव करना मानव की मलिनता और दुष्टता का सूचक होता है। ऐसे व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं।

एक जो दूसरे की प्रगति को देखकर दु:खी होने के बाद स्वयं को भी वैसा बनने का प्रयास करते हैं और दूसरे वे जो दूसरे की प्रगति देखकर मानसिक पीड़ा के कारण उसकी प्रगति में अवरोध उत्पन्न करने के कार्य में संलग्न हो जाते हैं।

दूसरे के कार्य में बाधा उत्पन्न करने की भावना द्वेष कहलाती है। इसी द्वेष भावना का क्रियात्मक रूप विद्वेषण कर्म कहलाता है।

मारण कर्म

किसी व्यक्ति की मृत्यु के लिए मन्त्र-प्रयोग करना ही मारण कहलाता है। इससे एक प्राणी की हत्या होती है। इसलिए किसी भी उद्देश्य से किया गया मारण कर्म चाहे वह शास्त्रीय आधार (तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र) के द्वारा हो या शस्त्र द्वारा हमेशा निन्दनीय होता है।

उक्त मुख्य कर्मों के दस भेद तथा अनेक उपभेद कहे गये हैं। तन्त्र शास्त्र की सभी क्रियायें वस्तुत: छ: कर्मों (षट्कर्मों) के अन्तर्गत आती हैं।

इन षट्कर्मों को विधिवत् पूर्ण कर अति शीघ्र फल प्राप्त करने के लिए मनीषियों ने शाबर मन्त्रों की रचना की है। अत: इनके विषय में देवता, काल, दिशा, आसन आदि की सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेने के पश्चात् इनका साधन करना चाहिए—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक का आचरण

मन्त्र साधन के लिए साधक का मन्त्र के प्रति पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा होना आवश्यक है।

मन्त्र विद्या का प्रयोग कभी भी अपने स्वार्थ लाभ के लिए नहीं करना चाहिए।

साधक को मिथ्या भाषण, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार का त्याग कर मन्त्र साधन आरम्भ करना चाहिए।

स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर तीन दिन तक विधिपूर्वक पूजन, तीन रात्रि तक पृथ्वी पर शयन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके ही मन्त्र साधना प्रारम्भ करनी चाहिए।

अन्ध विश्ववासी, शंकाल, दुराचारी, अहंकारी, मिथ्यावादी, मूर्ख तथा अपवित्र व्यक्तियों के लिए विद्या फलदायी नहीं होती है।

किसी सुयोग्य गुरु से उचित निर्देश प्राप्त करके ही इस विद्या का प्रयोग करना चाहिए।

षट्कर्मों के देवता

किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले उस कर्म के देवता का विधिविधान से पूजा करना आवश्यक है।

शान्तिकर्म के देवता रति (कामदेव की पत्नी), वशीकरण के देवता सरस्वती, स्तम्भन के देवता लक्ष्मी, विद्वेषण के देवता ज्येष्ठा, उच्चाटन के देवता दुर्गा और मारण कर्म के देवता भद्रकाली हैं।

षट्कर्मों की दिशायें

शान्तिकर्म हेतु ईशान कोण, वशीकरण कर्म हेतु उत्तर दिशा, स्तम्भन कर्म हेतु पूर्व दिशा, विद्वेषण कर्म हेतु नैर्ऋत्य दिशा, उच्चाटन कर्म हेतु वायव्य दिशा तथा मारण कर्म हेतु आग्नेय दिशा की ओर मुँह करके आसन पर बैठना चाहिए।

षट्कर्मों के तिथि और वार

शान्ति कर्म द्वितीया, तृतीया, पंचमी और सप्तमी तिथि तथा बुधवार,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा सोमवार को करना प्रारम्भ करना चाहिए। ऐसे तो शान्ति कर्म किसी भी तिथि अथवा वार में प्रारम्भ किया जा सकता है; परन्तु यदि इसे उक्त तिथि और वार में प्रारम्भ करते तो विशेष फलदायी होता है।

वशीकरण कर्म दशमी, एकादशी, अमावस्या, नवमी एवं प्रतिपदा तिथि तथा रविवार एवं शुक्रवार को प्रारम्भ करना चाहिए।

स्तम्भन कर्म बुधवार अथवा सोमवार को पड़ने वाले पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा तिथि को प्रारम्भ करना चाहिए।

विद्वेषण कर्म शनिवार अथवा रविवार को पड़ने वाले पूर्णिमा तिथ को प्रारम्भ करना चाहिए। रविवार की रिक्ता तिथि इसके लिये उत्तम कही गई है।

उच्चाटन कर्म शनिवार को पड़ने वाले षष्ठी, चतुर्दशी, एवं अष्टमी तिथि को प्रारम्भ करना चाहिए।

मारण कर्म चतुर्दशी, अष्टमी एवं अमावस्या तिथि तथा शनिवार, मंगलवार एवं रविवार को प्रारम्भ करना चाहिए। मारण कर्म को अशुभ ग्रह के उदय होने पर करना शीघ्र फलकारक होता है।

षट्कर्मों को करने का समय

दिन के पूर्व भाग में वशीकरण, दिन के मध्य भाग में विद्वेषण तथा उच्चाटन, दिन के शेष भाग में शान्ति कर्म एवं पुष्टि कर्म तथा सन्ध्या काल में मारण कर्म करना चाहिए।

षट्कर्मों की लग्न

वशीकरण, शान्ति, पुष्टि तथा मारण कर्म के लिए मेष, कन्या, धनु और मीन लग्न में प्रारम्भ करना चाहिए।

स्तम्भन कर्म का प्रारम्भ वृश्चिक लग्न में करना चाहिए।

विद्वेषण और उच्चाटन कर्म का प्रारम्भ कर्क और तुला लग्न में करना चाहिए।

षट्कर्मों की मुद्रायें

शान्ति कर्म पद्म मुद्रा द्वारा, वशीकरण कर्म पाश मुद्रा द्वारा, स्तम्भन कर्म गदा मुद्रा द्वारा, विद्वेषण कर्म मुसल मुद्रा द्वारा, उच्चाटन कर्म वज्र मुद्रा द्वारा तथा मारण कर्म खड्ग मुद्रा द्वारा किया जाना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षट्कर्मों के हवन द्रव्य

शान्ति कर्म हेतु दूध, घी, पीपल आदि वृक्षों के पत्तों तथा गिलोय से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

पुष्टि कर्म हेतु बेलपत्र, घी, सफेद सरसों, लवण तथा चमेली के फूलों से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

आकर्षण कर्म हेतु प्रियंगु, बेल, चमेली के फूलों, पलाश के फूल तथा सेंधानमक से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

वशीकरण कर्म हेतु चमेली के फूलों से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

मोहन कर्म हेतु कौए के पंख से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

मारण कर्म हेतु धतूरे के बीज, बकरी का दूध, घी, कपास, मनुष्य की हड्डी, साध्य व्यक्ति के नाखून, सरसों के तेल, आक का दूध, काली मिर्च, पीपल, सेंहुड़ के दूध से हवन सम्पन्न करना चाहिए।

जप के नियम

जप के तीन प्रकार होते हैं—वाचिक, उपांशु तथा मानसिक।

जप करते समय मन्त्र को यदि कोई अन्य व्यक्ति भी सुन सके तो उसे 'वाचक जप' कहा जाता है।

जप करते समय मन्त्र यदि स्वयं को ही सुनाई दे तो उसे 'उपांशु जप' कहा जाता है।

जप करते समय होंठ और जीभ न चले अर्थात् केवल मन में ही ध्यान करते हुए जप किया जाय तो उसे 'मानसिक जप' कहा जाता है।

शान्ति कर्म, पुष्टि कर्म हेतु उपांशु जप करना चाहिए। मोक्ष साधन हेतु मानसिक जप करना चाहिए। मारणादि कर्म में वाचक जप करना चाहिए।

वशीकरण हेतु पूर्व दिशा की तरफ, अभिचारादि कर्म हेतु दक्षिण दिशा की तरफ, धन प्राप्ति हेतु पश्चिम दिशा की तरफ तथा आयु-रक्षा, शान्ति एवं पुष्टि कर्म हेतु उत्तर दिशा की तरफ मुख करके जप करना चाहिए।

बैठने योग्य आसन

मुँज, वस्त्र, कुशा अथवा चमड़े के श्रेष्ठ आसन पर बैठकर उपासना करने वाले को जप करने का यत्न करना चाहिये। काठ, पल्लव, बाँस, पत्थर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोबर, तृण से युक्त विषम और कठिन आसन को त्याग देना चाहिये, इसलिये कि इस तरह के आसन रोगोत्पादन के कारण होते हैं।

बाँस के आसन पर उपासना करने से दरिद्रता होती है। पत्थर के आसन पर उपासना करने से रोगोत्पत्ति की सम्भावना होती है। भूमि पर स्थित होकर उपासना करने से दुःख होने की सम्भावना होती है। लकड़ी के आसन पर बैठकर उपासना करने से दुर्भाग्य की प्राप्ति कही गयी है।

चतुर उपासना करने वाले को रूई, कम्बल, वस्त्र, रेशम, व्याघ्र चर्म, मृगचर्म अथवा कृष्ण मृगचर्म का आसन बनाना चाहिये। ये आसन सौभाग्य और सिद्धि को प्रदान करने वाले कहे गये हैं।

तृण के आसन पर उपासना करने से यश की हानि और पत्तों के आसन पर चित्त में भ्रान्ति उत्पन्न होती है। कृष्णमृगचर्म के आसन पर उपासना करने से ज्ञान की सिद्धि मिलती है।

रेशमी आसन पुष्टि तथा बेंत का आसन शान्ति प्रदान करने वाला होता है। बाँस का आसन रोग विनाश करने वाला और कम्बल का आसन दुःखनाशक होता है।

माला निर्णय

माला बनाने हेतु अरिष्ट तथा पुत्र जीवा के बीज, शङ्ख, पद्मकाष्ठ, मणि, कुशा की गाँठ, रुद्राक्ष आदि उत्तरोत्तर श्रेष्ठ माने जाते हैं।

स्फटिक अथवा मोती को सफेद धागे से गूँथ-गूँथ कर माला बनायी जानी चाहिये। सभी प्रकार के कर्मों की सिद्धि हेतु रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिये।

वैष्णव मन्त्र हेतु तुलसी की माला, महागणपति मन्त्र हेतु हाथी के दाँत की माला तथा त्रिपुरा मन्त्र के जप हेतु रुद्राक्ष अथवा रक्त चन्दन की माला श्रेष्ठ कही गई है।

रेखा से जप करने से आठ गुना तथा पुत्रजीवा की माला से जप सम्पादन पर दश गुना फल होता है। चन्दन और शंङ्ख की माला से जप सम्पादन से सौगुना और मूँगे की माला से जप सम्पादन से हजार गुना फल होता है। स्फटिक की माला से जप सम्पादन से लाख हजार गुना फल होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाँदी के गुटिकाओं की माला से दश लाख गुना, सोने के गुटिकाओं की माला से जप सम्पादन से करोड़ गुना फल होता है।

कुशा की गाँठ की गुटिकाओं तथा रुद्राक्ष की माला से जप सम्पादन पर अनन्त फल मिलता है।

रुद्राक्षों के मुख के साथ मुख तथा पूँछ के साथ पूँछ जोड़कर माला बनाना श्रेष्ठ है।

सत्कर्म के फल की सिद्धि हेतु गुटिकाओं को श्वेत धागे में गूँथ कर बनानी चाहिये। रेशमी सूत्र में गूँथी जाने वाली माला देवी के लिये प्रीतिकर कही गई है। वैष्णवों के लिये माला पद्मसूत्र से तथा शैवों के लिये माला ऊन और बल्कल के सूत्र से गूँथी जानी चाहिये। दूसरे देवताओं के मन्त्र के जप हेतु कपास के धागे में माला बनानी चाहिये।

रुद्राक्ष की माला से जप सम्पादन के बाद माला की सुमेरु गुटिका को पूर्ण घुमा दिया जाना चाहिये।

अपने बांयें हाथ से जपमाला को कभी नहीं स्पर्श करना चाहिये। यदि कोई अन्य व्यक्ति भी स्पर्श कर दे, तो माला की पुनः शुद्धि करनी चाहिये।

जपमाला को हाथ, सिर अथवा कण्ठ में धारण नहीं करना चाहिये।

जप के समय में जप सम्पादन के पश्चात् माला को विशुद्ध स्थान पर रख दिया जाना चाहिये।

रुद्राक्ष माला को अपने गुरु को भी नहीं दिखलाना चाहिये। माला को कम्पित करने से सिद्धि नहीं मिलती।

माला का हनन करने से अत्यधिक दुःख होते हैं। जप के समय माला से शब्द निकलने पर उपासक रोगी होता है।

जपकाल में माला हाथ से गिरने पर उपासक का विनाश समझना चाहिये।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
सिद्धिकर्म प्रयोग	**२५-४७**
काली सिद्धि मन्त्र	२५
हनुमान सिद्धि मन्त्र	३८
भैरव सिद्धि मन्त्र	३३
पीर सिद्धि के मन्त्र	३६
मुहम्मदा पीर का मन्त्र	३७
बिरहना पीर का मन्त्र	३८
गो जोगिन सिद्धि मन्त्र	३९
शौहा वीर सिद्धि मन्त्र	४०
वीर सिद्धि मन्त्र	४१
हाजरात सिद्ध मन्त्र	४२
वीरों की साधना का मन्त्र	४२
अगिया बैताल सिद्धि मन्त्र	४३
मसान सिद्धि मन्त्र	४४
हमजाद सिद्धि मन्त्र	४४
डाकिनी सिद्धि का मन्त्र	४४
सिद्ध हनुमान जंजीरा	४४
रक्षाकर्म प्रयोग	**४८-५३**
जंगली जीवों से रक्षा का मन्त्र	४८
देह रक्षा मन्त्र	४८
रक्षाकारी मन्त्र	४९
हजरत पैगम्बर अली की चौकी	४९
चोर से घर की सुरक्षा का मन्त्र	५०
गृह सुरक्षा के लिए कालिका सिद्ध मन्त्र	५०
घर की सुरक्षा का मन्त्र	५०
साधना में सुरक्षा का मन्त्र	५१
आत्म रक्षा मन्त्र	५१
ताली से रक्षा मन्त्र	५१
गर्भ रक्षा करने का मन्त्र	५२
मोहनकर्म प्रयोग	**५४-६५**
स्त्री मोहन मन्त्र	५४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
जगत् मोहन मन्त्र	५८
कूपजल मोहन मन्त्र	५९
महामोहन मन्त्र	६०
हवन मोहन मन्त्र	६०
तिलक मोहन मन्त्र	६१
सभा सम्मोहन मन्त्र	६२
लौंग मोहन मन्त्र	६२
फूल मोहन मन्त्र	६३
पान मोहन मन्त्र	६३
गुड़ मोहन मन्त्र	६५
आकर्षण कर्म प्रयोग	**६६-६८**
पुरुष आकर्षण मन्त्र	६६
सर्वजन आकर्षण मन्त्र	६६
आकर्षण मन्त्र	६७
वशीकरण कर्म प्रयोग	**६९-८३**
सर्ववशीकरण मन्त्र	६९
पति वशीकरण मन्त्र	७१
सिन्दूर वशीकरण मन्त्र	७३
चमत्कारी वशीकरण मन्त्र	७४
वशीकरण मन्त्र	७५
भूतनाथ वशीकरण मन्त्र	७६
त्रैलोक्य वशीकरण मन्त्र	७६
स्त्री वशीकरण मन्त्र	७७
राजवशीकरण मन्त्र	८२
स्वामी वशीकरण मन्त्र	८२
वेश्या वशीकरण मन्त्र	८२
प्रेत वशीकरण मन्त्र	८३
शत्रु वशीकरण मन्त्र	८३
स्तम्भन कर्म प्रयोग	**८४-१०५**
जल स्तम्भन मन्त्र	८४
अग्नि स्तम्भन मन्त्र	८५
अग्नि शान्त करने का मन्त्र	८७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
मुख स्तम्भन मन्त्र	८८
मेघ स्तम्भन मन्त्र	८८
पति स्तम्भन मन्त्र	८९
आसन स्तम्भन मन्त्र	८९
बुद्धि स्तम्भन मन्त्र	८९
विष स्तम्भन मन्त्र	९०
सिंह स्तम्भन मन्त्र	९३
बाघ स्तम्भन मन्त्र	९३
कड़ाही स्तम्भन मन्त्र	९४
तुरही स्तम्भन मन्त्र	९४
सर्प स्तम्भन मन्त्र	९५
गर्भ स्तम्भन मन्त्र	९६
शस्त्र स्तम्भन मन्त्र	९७
घाव स्तम्भन मन्त्र	९९
दृष्टि स्तम्भन मन्त्र	९९
हिंसक जीव-जन्तु स्तम्भन मन्त्र	१००
सेना स्तम्भन मन्त्र	१००
भूख स्तम्भन मन्त्र	१०१
बकरा स्तम्भन मन्त्र	१०१
चूहा-सूअर स्तम्भन मन्त्र	१०२
जलन स्तम्भन मन्त्र	१०२
निद्रा स्तम्भन मन्त्र	१०३
अखाड़ा स्तम्भन मन्त्र	१०३
नकसीर स्तम्भन मन्त्र	१०३
मोच स्तम्भन मन्त्र	१०४
लंगोट स्तम्भन मन्त्र	१०४
भूत उतारने का स्तम्भन मन्त्र	१०५
उच्चाटन कर्म प्रयोग	**१०६-११३**
उच्चाटन मन्त्र	१०६
रोग उच्चाटन मन्त्र	११२
विद्वेषण कर्म प्रयोग	**११४-११६**
स्त्री-पुरुष विद्वेषण मन्त्र	११४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
महाविद्वेषण मन्त्र	११४
सर्वजन विद्वेषण मन्त्र	११४
गृहवासी विद्वेषण मन्त्र	११५
मित्र विद्वेषण मन्त्र	११५
मारण कर्म प्रयोग	**११७-१२२**
मारण मन्त्र	११७
अश्व मारण मन्त्र	११८
मछली मारण मन्त्र	११८
शत्रु मारण मन्त्र	११८
विविध रोगनाशक मन्त्र	**१२३-१५०**
सर्वरोगहर निवारक मन्त्र	१२३
पीलियानाशक मन्त्र	१२३
दन्तपीड़ा निवारक मन्त्र	१२४
आधासीसी निवारक मन्त्र	१२४
सिरदर्द निवाकर मन्त्र	१२४
पेट दर्द निवारक मन्त्र	१२५
मिरगी रोग निवारक मन्त्र	१२५
स्तनों में दूध बढ़ाने का मन्त्र	१२५
मासिकधर्म पीड़ा निवारक मन्त्र	१२६
प्रसव पीड़ा निवारक मन्त्र	१२६
भूख-प्यास निवारक मन्त्र	१२६
बालरोग नाशक मन्त्र	१२६
मसानरोग नाशक मन्त्र	१२७
सर्वरोग नाशक मन्त्र	१२८
ज्वर नाशक मन्त्र	१२८
वायु नाशक मन्त्र	१३०
बाय रोग झाड़ने का हनुमान मन्त्र	१३१
बवासीर नाशक मन्त्र	१३१
अतिसार नाशक मन्त्र	१३२
कंठवेल नाशक मन्त्र	१३३
बाल नजर नाशक मन्त्र	१३४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
स्मरण शक्तिवर्द्धक मन्त्र	१३४
नेत्र रोग नाशक मन्त्र	१३५
नेत्र बाधा निवारण मन्त्र	१३७
नेत्र पीड़ा नाशक मन्त्र	१३८
नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान मन्त्र	१३८
नेत्र रोग नाशक हनुमान मन्त्र	१३८
आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र	१३९
कान दर्द दूर करने का हनुमान मन्त्र	१३९
कर्णरोग नाशक मन्त्र	१३९
रतौंधी झाड़ने का मन्त्र	१४०
रतौंधी नाशक मन्त्र	१४१
पसली रोग नाशक मन्त्र	१४१
आँव रोग नाशक मन्त्र	१४२
नाभि बैठाने का मन्त्र	१४३
बहती नाक रोकने का मन्त्र	१४३
दाद रोग नाशक मन्त्र	१४३
पशु रोग नाशक मन्त्र	१४४
अंडकोष रोग नाशक मन्त्र	१४४
हिचकी रोग नाशक मन्त्र	१४४
देह पीड़ा नाशक मन्त्र	१४५
विषनाशक मन्त्र	१४५
सुख प्रसव का मन्त्र	१४६
बाझपन दोष निवारक मन्त्र	१४७
मृतवत्सा दोष निवारक मन्त्र	१४७
संतान प्राप्ति मन्त्र	१४७
मासिकधर्म पीड़ा नाशक मन्त्र	१४९
नियमित मासिक-धर्म हेतु मन्त्र	१४९
मासिक विकार दूर करने का मन्त्र	१५०
गर्भ धारण का मन्त्र	१५०
विविध दोष निवारक मन्त्र	**१५१-१८२**
दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र	१५१
नजर झाड़ने का मन्त्र	१५१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
चुड़ैल भगाने का मन्त्र	१५३
डाकिनी दोष नाशक मन्त्र	१५३
टोने-टोटके नाशक मन्त्र	१५४
भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र	१५४
भूत भय नाशन मन्त्र	१५७
भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र	१५७
भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र	१५८
भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र	१५८
जादू-टोना नाशक मन्त्र	१५८
मूठ लौटाने का मन्त्र	१५९
मन्त्र की काट का मन्त्र	१५९
बंगला भाषी शाबरी मन्त्र	१६०
तंत्र वापसी का मन्त्र	१६०
गृह-बन्धन कालिका का मन्त्र	१६१
सर्व दोष निवारण मन्त्र	१६२
सर्वसंकट नाशक वन दुर्गा मन्त्र	१६२
आपत्ति निवारण मन्त्र	१६२
असामयिक मृत्यु भय निवारक मन्त्र	१६२
गृहबाधा शमन का मन्त्र	१६३
क्रोध दूर करने का मन्त्र	१६३
धनवृद्धि मन्त्र	१६३
अचानक धन प्राप्ति का मन्त्र	१६३
जिन्न भगाने का मन्त्र	१६३
वीर मुहम्मद मन्त्र	१६४
भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र	१६४
विपदा निवारक मन्त्र	१६४
चूहे भगाने का मन्त्र	१६४
सौभाग्यवर्द्धक मन्त्र	१६५
शीघ्र विवाहकारक मन्त्र	१६५
ऋद्धि-सिद्धिकरण मन्त्र	१६५
जुआ में जीतने का मन्त्र	१६६
भयनाशक मन्त्र	१६७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
दंगल (कुश्ती) जीतने का मन्त्र	१६७
मुकद्दमा जीतने का मन्त्र	१६७
चोर पकड़ने के लिए हनुमान मन्त्र	१६७
चोर पकड़ने का मन्त्र	१६९
चोर भय निवारण कालिका सिद्ध मन्त्र	१६९
गड़ा धन दीखने का मन्त्र	१७०
अकाल मृत्यु निवारक मन्त्र	१७०
निर्भीकता का मन्त्र	१७०
पशुओं के दुग्ध वृद्धि का मन्त्र	१७०
अन्न अधिक उपजाने का मन्त्र	१७१
बंधन मुक्ति मन्त्र	१७१
सर्व विघ्नहरण मन्त्र	१७१
क्रोध शान्ति का मन्त्र	१७१
तन्त्र माया नाशक मन्त्र	१७२
सर्प उत्कीलन का मन्त्र	१७३
हिंसक पशु भय निवारण मन्त्र	१७३
कार्यसिद्धि मन्त्र	१७३
सर्व-कार्य सिद्धिदाता हनुमान मन्त्र	१७४
सुख-शान्ति का मन्त्र	१७६
व्यापार वृद्धि मन्त्र	१७६
बंधा व्यापार करने का मन्त्र	१७८
रोजगार प्राप्ति के लिए माँ कालिका का पंच वाण	१७८
धन लाभ मन्त्र	१७९
महालक्ष्मी मन्त्र	१८०
प्रगतिकारक मन्त्र	१८०
वाचा सिद्धि मन्त्र	१८०
शत्रु शामक यंत्र	१८०
दरिद्रता नाशक मन्त्र	१८१
अधिक भूख लगने का मन्त्र	१८१
बन्धनकारी मन्त्र	१८१
भूत-प्रेत बोलने का मन्त्र	१८२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
यंत्र प्रयोग	**१८३-२६६**
सिद्धि प्राप्ति यन्त्र	**१८५-१८८**
सर्वकार्य सिद्धि के लिए यन्त्र	१८५
सर्वकार्य सिद्धिदाता यन्त्र	१८६
मनोरथ सिद्धि के लिए यन्त्र	१८७
रक्षा यंत्र	**१८८-१८९**
अमोघ बीसा रक्षा यन्त्र	१८८
बाल रक्षा के लिए यन्त्र	१८९
आत्मरक्षा बीसा यन्त्र	१८९
आकषर्ण यंत्र	**१९०**
आकर्षण के लिए यन्त्र	१९०
मोहन यन्त्र	**१९१**
स्त्री मोहन यन्त्र	१९१
राज्य मोहन यन्त्र	१९१
तशीकरण यन्त्र	**१९२-२१५**
पुरुष वशीकरण यन्त्र	१९२
वरवशीकरण यन्त्र	१९६
पति वशीकरण यन्त्र	१९६
स्त्री-पुरुष वशीकरण	२०१
स्त्री वशीकरण यन्त्र	२०२
मनचाही स्त्री प्राप्त करने के लिए यन्त्र	२१२
सर्वजन वशीकरण यन्त्र	२१३
शत्रु वशीकरण, मारण यन्त्र	**२१५-२२०**
शत्रु वशीकरण यन्त्र	२१५
शत्रु नाशक यन्त्र	२१९
शत्रु के घर में झगड़ने के लिए यन्त्र	२२०
शत्रु के घर क्लेश के लिए यन्त्र	२२०
विविध रोगनाशक यन्त्र	**२२१-२३६**
शीतला दूर करने के लिए यन्त्र	२२१
सर्वरोग निवारण के लिए यन्त्र	२२१
वायु गोला नाशक यन्त्र	२२२
ज्वर नाश के लिए यन्त्र	२२२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
स्त्री का दूध बढ़ाने के लिए यन्त्र	२२२
सिर दर्द दूर करने के लिए यन्त्र	२२३
कर्ण पीड़ा दूर करने के लिए यन्त्र	२२३
मसान रोग नाशक यन्त्र	२२४
कांच न निकलने का यन्त्र	२२४
बवासीर नाशक यन्त्र	२२५
गर्भ स्तम्भन के लिए यन्त्र	२२७
सुख से प्रसव होने का यन्त्र	२२८
सन्तान प्रदायक यन्त्र	२२९
पुत्रदाता यन्त्र	२३०
पीलिया नाशक यन्त्र	२३०
आधा शीशी की पीड़ा दूर करने का यन्त्र	२३१
उदर शूल नाशक यन्त्र	२३२
गर्भ रक्षा के लिय यन्त्र	२३२
हैजा रोग दूर करने के लिए यन्त्र	२३३
एकान्तर ज्वर दूर करने के लिए मन्त्र	२३३
इकतारा ज्वर नाशक यन्त्र	२३४
शीत ज्वर नाशक यन्त्र	२३४
बाल ज्वर नाशक यन्त्र	२३५
मिरगी, मूर्छा निवारक यन्त्र	२३५
शीतला साधक यन्त्र	२३६
सर्वरोग निवारक यन्त्र	२३६
विविध कार्य साधक यन्त्र	**२३७-२६६**
देवता को प्रसन्न करने का मन्त्र	२३७
प्रेत बाधा नाशक यन्त्र	२३७
भूत भय नाशक यन्त्र	२३८
भूत दूर करने के लिए यन्त्र	२३८
स्वप्न में भूत देखने के लिए यन्त्र	२३९
भूत न लगने का मन्त्र	२३९
भूत-प्रेत भगाने के लिए यन्त्र	२४०
रूठे व्यक्ति अथवा अधिकारी को वश में करने का यन्त्र	२४०
भूत-प्रेत निवारण के लिए यन्त्र	२४१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
प्रेत बाधा नाशक यन्त्र	२४१
प्रेत दूरीकरण यंन्त्र	२४२
देशाटन करने का यन्त्र	२४२
गुप्त रूप से धन प्राप्ति के लिए यन्त्र	२४३
लक्ष्मी प्राप्ति के लिए यन्त्र	२४३
धन की प्राप्ति के लिए यन्त्र	२४४
बहत्तरिया वशीकरण यन्त्र	२४४
पति-पत्नी में प्रेम के लिए यन्त्र	२४५
गृह दोष दूर करने का यन्त्र	२४५
हनुमान जी को प्रसन्न करने का यन्त्र	२४६
भूत-प्रेत देवी-यक्ष प्रसन्न करने का यन्त्र	२४६
अलिगंधा यक्षिणी प्रसन्न करने का यन्त्र	२४७
सास या ससुर के लिए यन्त्र	२४७
लोकप्रिय होने के लिए यन्त्र	२४८
अधिक अनाज के लिए यन्त्र	२४९
अनाज खराब न होने का यन्त्र	२४९
आम के वृक्ष पर फल अधिक लगने का यन्त्र	२५०
बाग में फल अधिक होने का यन्त्र	२५१
जुए में विजय दिलाने का यन्त्र	२५१
सौभाग्य वृद्धि कारक यन्त्र	२५२
अमोघ बीसा यंन्त्र	२५३
जलाशय निर्माण के लिए यन्त्र	२५३
कलह निवारण बीसा यन्त्र	२५४
वाहन प्राप्ति के लिए यन्त्र	२५४
मनोकामना पूर्ण करने के लिए यन्त्र	२५५
आग न लगने का यन्त्र	२५५
वैराग्योत्पत्ति धारण यन्त्र	२५६
दुर्भाग्य नाशक यन्त्र	२५७
स्वप्न भय नाशक यन्त्र	२५७
डाकिनी का यन्त्र	२५८
सर्पभय नाशक यन्त्र	२५८
अकाल मृत्यु दूर करने के लिए यन्त्र	२५९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
चोरी गया पशु वापस लाने का यन्त्र	२५९
बुरी नजर दूर करने के लिए यन्त्र	२६०
घर से गये मनुष्य को लौटाने का यन्त्र	२६०
रोजगार पाने का यन्त्र	२६१
व्यापार वृद्धि के लिए यन्त्र	२६१
व्यापार में लाभ के यन्त्र	२६२
कामना सिद्ध करने के लिए यन्त्र	२६२
बुद्धि बढ़ाने के लिए यन्त्र	२६३
विद्या और बुद्धि बढ़ाने के लिए यन्त्र	२६३
भय दूर करने के लिए यन्त्र	२६४
सर्वग्रहबाधा दूर करने के लिए यन्त्र	२६४
शत्रु भगाने का यन्त्र	२६५
मित्रता के लिए यन्त्र	२६५
भागे हुए को बुलाने का यन्त्र	२६५
राजसभा में आदर पाने के लिए यन्त्र	२६६
राज सम्मान प्राप्ति का यन्त्र	२६६
नवग्रह दोष शांति के यंत्र-मंत्रादि	**२६७-२८८**
सूर्य	२६७
चन्द्र	२६९
मंगल	२७२
बुध	२७४
गुरु	२७७
शुक्र	२७९
शनि	२८१
राहु	२८४
केतु	२८५
विविध रोग दोषादि निवारक तन्त्र	**२८९-३०७**
ज्वर नाशक तन्त्र	२८९
सिर दर्द निवारक तन्त्र	२८९
हिचकी आना	२९०
पतले दस्त अर्थात् अतिसार	२९०
चेचक का इलाज एवं सुरक्षा	२९०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
चर्म रोग निवारक तन्त्र	२९१
बवासीर नाशक तन्त्र	२९१
मिरगी रोग निवारक तन्त्र	२९१
जिगर-तिल्ली और अफारा	२९२
फोते छिटकना	२९२
हृदय रोग निवारक तन्त्र	२९२
दमा रोग निवारक तन्त्र	२९२
पथरी रोग निवारक तन्त्र	२९३
पीलिया निवारक तन्त्र	२९३
रक्तचाप निवारक तन्त्र	२९३
कामशक्ति वर्धक तन्त्र	२९४
लकवा रोग निवारक तन्त्र	२९४
दाँत दर्द निवारक तन्त्र	२९४
सर्प विषनाशक तन्त्र	२९४
मधुमेह नाशक तन्त्र	२९५
कुष्ठ रोग निवारक तन्त्र	२९५
सन्तान प्राप्ति के तन्त्र	२९५
पीड़ा रहित प्रसव कराने के तन्त्र	२९६
हिचकी रोकने के तन्त्र	२९६
पेट के विविध रोग निवारक तन्त्र	२९६
घबराहट रोकने का तन्त्र	२९६
गर्भ न ठहरने के तन्त्र	२९६
मूत्र बंदी निवारक तन्त्र	२९७
गर्भपात रोकने के तन्त्र	२९७
मोटापा बढ़ाने के तन्त्र	२९७
आँख का जाला ठीक करने का तन्त्र	२९८
घाव ठीक करने का तन्त्र	२९८
बालक का कम बोलना ठीक करने वाला तन्त्र	२९८
बिच्छू विषनाशक तन्त्र	२९८
चोर भय से मुक्ति के तन्त्र	२९८
दुर्घटना से रक्षा करने वाले तन्त्र	२९८
विपत्ति नाशक तन्त्र	२९९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
भूत बाधा एवं जादू टोना नाशक तन्त्र	२९९
शस्त्राघात से बचाने वाला तन्त्र	२९९
आयुवर्धक तन्त्र	२९९
धन लाभ के तन्त्र	२९९
कुत्ता काटने पर तन्त्र	२९९
भोजन को नजर से बचाने का तन्त्र	३००
खाना कम न पड़ने का तन्त्र	३००
बर्रे, मधुमक्खी काटने पर तन्त्र	३००
अफीम एवं शराब का नशा उतारने के तन्त्र	३००
गंजापन दूर करने के तन्त्र	३००
स्त्री रोग संबंधी तन्त्र	३००
मिचली रोकने के तन्त्र	३०१
खांसी ठीक करने का तन्त्र	३०१
रक्तदोष निवारक तन्त्र	३०१
अनिद्रा रोग निवारक तन्त्र	३०१
कमर दर्द निवारक तन्त्र	३०२
स्वप्नदोष निवारक तन्त्र	३०२
कान दर्द निवारक तन्त्र	३०२
होंठों के रोगनाशक तन्त्र	३०२
सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति के तन्त्र	३०२
डर समाप्त करने का तन्त्र	३०३
दुर्भाग्य को दूर करने का तन्त्र	३०३
व्यवसायिक सफलता का तन्त्र	३०३
पारिवारिक सुख-शान्ति के लिए तन्त्र	३०४
अभिचार कर्म निवारक तन्त्र	३०४
मनोकामना पूर्ति के तन्त्र	३०५
भयनाशक तन्त्र	३०५
बुरी नजर से बचाने वाले तन्त्र	३०५
घर के वास्तुदोष निवारक तन्त्र	३०६
विविध वनस्पति तन्त्र	**३०८-३१२**
गुञ्जा मूल तन्त्र	३०८
सफेद करवीर मूल तन्त्र	३०८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठांक
धतूर मूल तन्त्र	३०८
अमृत मूल तन्त्र	३०८
विष्णुक्रान्ता मूल तन्त्र	३०८
सुदर्शन मूल तन्त्र	३०९
बृहती मूल तन्त्र	३०९
सिद्धार्थ मूलतन्त्र	३०९
बट मूल तन्त्र	३०९
उदुम्बर मूल तन्त्र	३०९
सहदेवी मूलतन्त्र	३०९
कौमारी मूलतन्त्र	३०९
ताम्बूल मूल तन्त्र	३०९
कदली मूल तन्त्र	३१०
आम्र मूल तन्त्र	३१०
पलाश मूल तन्त्र	३१०
एरण्ड मूल तन्त्र	३१०
निम्ब बन्धक तन्त्र	३१०
जम्बू बन्धक तन्त्र	३१०
पिप्पल बन्धक तन्त्र	३११
सिरस बन्धक तन्त्र	३११
बिल्व बन्धक तन्त्र	३११
बदरी बन्धक तन्त्र	३११
भल्लातक बन्धक तन्त्र	३११
थोहर बन्धक तन्त्र	३११
कपित्थ (कैथ) बन्धक तन्त्र	३१२
अंकोल तन्त्र	३१२

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीन

सिद्ध शाबर मन्त्र

❀ सिद्धिकर्म प्रयोग ❀

[काली सिद्धि मन्त्र-१]

ॐ काली-काली महाकाली ।
इंद्र की बेटी ब्रह्मा की साली ।
कूचे पान बजावे ताली ।
चल काली कलकत्ते वाली ।
आल बांधूं ताल बांधूं और बांधूं तलैया ।
शिव जी का मंदिर बांधूं ।
हनुमान जी की दुहाई ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यह मन्त्रानुष्ठान इकतालीस दिवसीय है। साधक किसी भी नदी के तट पर अकेले में घी का दीपक प्रज्जवलित कर सुवासित धूप जलाकर ऋतु फल, मिठाई देवी को भेंट करके रोज मन्त्र की दो माला जप करे। यदि जप काल में माँ काली दर्शन दें तो साधक एक पान उल्टा और एक पान सीधा रखकर उस पर कपूर जलाए और अपने दाहिने हाथ की अनामिका उँगली का जरा सा खून धरती पर गिराए। इसके बाद माता काली से तीन वचन ले ले कि बुलाने पर वह प्रकट हों, मनोकामना पूर्ण करें और जनकल्याण का आशीर्वाद दें।

[काली सिद्धि मन्त्र-२]

क्रीं कालिका षोड़स वर्षीय जवान ।
हाथ में खड़ग खप्पड़ तीर कमान ।
गले नर मुंड माला रहे श्मशान ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आओ आओ माँ कालिके मेरा कहना मान ।
नहीं आए कालिका तो भैरव की दुहाई ।
शब्द सांचा, फुरो मंत्र खुदाई ।

उक्त मन्त्र महाकाली का अतिशक्तिशाली मन्त्र है। इसका जाप किसी भी शनिवार की अर्धरात्रि को बिना वस्त्र धारण किये हुये (निर्वस्त्र) किया जाता है। यह आम भक्तजनों के लिए नहीं है। अतः यहाँ सिर्फ ज्ञानार्थ ही इसका वर्णन किया गया है।

[काली सिद्धि मन्त्र-३]

ॐ काली-काली महाकाली ।
ज्यावे सीपी वलके डाहोली ।
दोनों हात से बजावे टाली ।
बाएँ भाट जा बसे काल भैरव ।
उसका काट-काट कौन रखा कनकाला ।
तोहू म्हानासूर येऊ का उज्याला कर ।
आला मछिन्द्र का सोटा कालभैरव का ।
पांव तुटा दूरा लाजी लूखा ।
किया हाला सती सके का बाँधूं ।
काल राखे गोरखनाथ सिंहनाथ ।
फुरे अडबंगी बोले ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र माता काली का रक्षाकारी शाबर मन्त्र है। इसे सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के समय जपकर जाग्रत करना चाहिए अथवा इक्कीस बार बोलकर ताली बजा देने से भी सभी प्रकार से रक्षा होती है।

[काली सिद्धि मन्त्र-४]

ॐ काली-काली महाकाली ।
इंद्र की बेटी ब्रह्मा की साली ।
हरी गोट पीरी सारी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मायके को बाँध सासरे को बाँध ।
औघट को बाँध गैल को बाँध
बार बार में से सोत सोत में से ।
बत्तीसउ दांत में से ऐंच खैंच के न ल्यावे ।
तो फेर महाकाली न कहावे ।
तीन पहर तीन घड़ी में नीलो धुंआ ।
पीरी रज उड़ा के न आवे ।
तो कालभैरव की सेज पै पग धरै ।

उक्त मन्त्र की एक माला नित्य इकतालीस दिनों तक जपनी चाहिए। जप के लिए साधक निर्जन अथवा एकान्त स्थान का चयन करे तथा माँ काली की मूर्ति अथवा विग्रह के समक्ष की जमीन गाय के गोबर से लीपकर, सिन्दूर का गोल टीका लगाए। अन्यथा उस स्थान पर ९ लौंग, मदिरा, मुर्गी का अण्डा, बकरे की कलेजी, पत्ता, फूल, फल एवं मिठाई रखे। सामने दीवार पर सिन्दूर से त्रिशूल अंकित करे। वर्णानुसार सामग्री को त्रिशूल के नीचे रखकर उसकी पूजा अर्चना करे। जप के बाद मांस-मदिरा से दशांश हवन करे। यह सभी क्रिया गुरु के निर्देशन में करनी चाहिए। विधिवत् करने से माँ काली साधक को प्रत्यक्ष दर्शन दे उसकी मनोकामना को पूर्ण करती हैं।

[काली सिद्धि मन्त्र-५]

ॐ सिंहो दत्तो बिकोवा ।
धड़ित धड़ धड़ात ।
ध्यायमान भवानी दैत्यनाम ।
देहनाशनाम तोड़यांति ।
सिरांसी रक्तां पिबंति ।
पिशाचा त्रिहाप त्रिहाप हसंति ।
खड़त खद खदात ।
त्रिरोष मम भद्रकाली ।
नौ नाथ चौरासी सिद्धन ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के बीच में बैठकर ।

काली मंत्र स्वाहा ।

उक्त मन्त्र भद्रकाली का है। यह मन्त्रानुष्ठान एकान्त अथवा श्मशान में अर्द्धरात्रि के बाद इकतालीस दिन में सवा लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। जपकाल में धूप, दीपक, नैवेद्य, मांस-मदिरा, बलि आदि की प्रक्रिया की जाती है। जाप करने से पहले साधक को रक्षा घेरा बना लेना चाहिए। जप का दशांश हवन करने पर भद्रकाली साधक को स्वयं दर्शन देती हैं। उस समय साधक भयभीत न हो बल्कि आशीर्वाद ग्रहण करे।

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-१]

ॐ ओंकार।
सत्र-मंगलवार।।
तेव्हां जन्मले।
ब्रीदवाद हनुमन्त।।
बिलखिला के पूत्र।
जय हो पूत्र।।
अलख डोंगर।
मुगढ्र पाणी।।
पाणी-पाणी।
मुख-चून-पाणी।।
जैसा बीर श्री राम।
चन्द्र जी का।।
काज करें।
वैसा ही काज।।
मेरा ही कीजिए।
अष्ट-भैरव की दुहाई।।

हनुमान जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए ४१ दिन तक प्रतिदिन एक माला का जप एवं दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होता है, फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी भी कार्य के लिए १०८ बार जप करने से साधक को अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-२]

अजरंग पहूनं ।
बजरंग पहनूं ।
सब रंग रखूं पास ।
दाएं चले भीमसेन ।
बाएं हनुमंत ।
आगे चले काजी साहब ।
पीछे कुल बलारद ।
आतर चौकी कच्छ कुरान ।
आगे पीछे तूं रहमान ।
धड़ खुदा, सिर राखे सुलेमान ।
लोहे का कोट तांबे का ताला ।
करला हंसा बीरा ।
करतल बसे समुद्र तीर ।
हांक चले हनुमान की ।
निर्मल रहे शरीर ।

यह मन्त्रानुष्ठान इक्कीस दिनों का है। साधक को इस अवधि में ब्रह्मचर्य नियम का पालन करना चाहिए। इस अनुष्ठान का प्रारम्भ किसी भी मंगलवार से करके प्रतिदिन कम से कम दस माला जपे। अनुष्ठान के पूर्ण हो जाने के बाद हनुमान जी किसी रूप में भी प्रकट होकर साधक को दर्शन देते हैं। उस दौरान साधक को अतिश्रद्धापूर्वक नमस्कार कर हनुमानजी से आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिये।

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-३]

उलटा बीर ।
बजरंग का पांव कर ।
नींसम कवटाल खाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारा कोस आघाड़ ।
सम तेरा कोस ।
पिच्छाड़-सम ।
आन पोहोंच रे उलटा ।
बीर बजरंग का पांव ।
जहाँ है वहाँ से लाव ।
इस काया पिंड के ।
बाला कू नव नाड़ी से ।
बहात्तर कोठड़ी से ।
रोम-रोम से ।
चाम-चाम से ।
गुद-गुद से ।
पकड़ के लाव ।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र का अनुष्ठान किसी भी मंगलवार अथवा शनिवार से आरम्भ करके इकतालीस दिनों तक करना चाहिए। इस अनुष्ठान काल में साधक ब्रह्मचर्य का पालने करे, मांस और मदिरा का त्याग करे। सबसे पहले साधक किसी साफ-सुथरे कमरे में हनुमानजी की मूर्ति को प्राण-प्रतिष्ठा कर स्थापित करे। फिर दाएँ हाथ में कुँए का जल लाकर मूर्ति को स्नान कराये। स्नान कराते समय कुएँ का जल का पात्र जमीन पर न रखे। स्नान कराने के बाद हल्दी, रोली, आकड़े के फूल, चीनी से बने नैवेद्य, सिन्दूर, उड़द (२१ दाने) से विधि-विधान से पूजन करे।

इसके पश्चात् आटे के दीपक में पाँच बत्तीयाँ देशी घी में भिंगोंकर जलाए और कपूर, गुग्गुल की धूप दिखाये। फिर सवा किलो आटे की रोटी बनाकर उस पर रखे तथा रोज एक माला जपे। जप के बाद जप का दशांश हवन करे। इस प्रकार साधक की साधना से हनुमान जी प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं और साधक की मनोभिलाषा को पूर्ण करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-४]

हनुमान जाग ।
किलकारी मार ।
तूँ हुंकारे ।
राम काज संवारे ।
ओढ़ सिंदूर सीता मइया का ।
तूँ प्रहरी राम द्वारे ।
मैं बुलाऊं तूँ अब आ ।
राम गीता तूँ गाता आ ।
नहीं आए हनुमान तो राजाराम,
सीता मइया की दुहाई ।
मंत्र सांचा फुरै खुदाई ।

उक्त मन्त्र का अनुष्ठान साधक किसी भी मंगलवार से आरम्भ करके पाँच मंगलवार तक करे। इस अवधि में ब्रह्मचर्य का पालन अति आवश्यक है। रात में नित्य दो माला जप करे तो हनुमानजी किसी भी रूप में साधक को दर्शन देकर उसकी मनोभिलाषा पूरी करते हैं।

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-५]

ॐ हनुमान पहलवान ।
वर्ष बारहा का जवान ।
हाथ में लड्डू मुख में पान ।
आओ आओ बाबा हनुमान ।
शब्द सांचा ।
पिण्ड साचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यह मन्त्रानुष्ठान तीन महीने का है। किसी भी मंगलवार अथवा शनिवार को ब्रह्मचर्य नियम का पालन करते हुये इस अनुष्ठान को आरम्भ करना चाहिये। इस दिन हनुमानजी को चोला, जनेऊ, लंगोट, खड़ाऊ, नारियल, लाल ध्वजा,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सात लड्डू व ऋतुफल अर्पित करें। साधक लाल रंग का कपड़ा पहन कर लाल चन्दन की दस माला प्रतिदिन जपे।

मंगलवार के दिन साधक हनुमानजी का उपवास रखे। गुड़-चने बच्चों में वितरित करे। जब अनुष्ठान पूरा हो जाता है तो हनुमान जी साधक को दर्शन देकर उसकी मनोकामना को पूरा करते हैं।

[हनुमान सिद्धि मन्त्र-६]

ॐ नमो देव लोक दिविख्या देवी ।
जहाँ बसे इस्माईल योगी ।
छप्पन भैरों । हनुमंत वीर
भूत प्रेत दैत्य को मार भगावें ।
पराई माया ल्यावे ।
लाडू पेड़ा बरफी सेब सिंघाड़ा पाक बताशा ।
मिश्री घेवर बालूसाई लोंग जोड़ा इलायची दाना ।
तेल देवी काली के ऊपर ।
हनुमंत गाजै ।
एती वस्तु मैं चाहि लाव
न लावे तो तैंतीस कोटि देवता लावें ।
मिरची जावित्री जायफल हरड़ें जंगी-हरड़ें ।
बादाम छुहारा मुफरें ।
रामवीर तो बतावें बस्ती ।
लक्ष्मण वीर पकड़ावें हाथ ।
भूत-प्रेत के चलावें हाथ।
हनुमंत वीर को सब कोऊ गाव ।
सौ कोसां का बस्ना लावे ।
न लावे तो एक लाख अस्सी हजार वीर ।
पैगंबर लावें ।
शब्द सांचा । पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस मन्त्र का जाप एकान्त जगत पर स्थिर अंधेरे कुँए के पास बैठ कर किया जाता है। सबसे पहले साधक पवित्र मिट्टी में सिन्दूर अथवा लाल रंग मिलाकर हनुमानजी की मूर्ति निर्मित करे। तत्पश्चात् चोला चढ़ाकर मन्त्र का जाप करे। मन्त्र का जाप नित्य इक्कीस दिनों तक दिन-रात करे। इस मन्त्र के जाप के प्रभाव से हनुमानजी साधक के सम्मुख प्रत्यक्ष होते हैं। यदि हनुमानजी स्वयं प्रत्यक्ष न हों तो सैक़ड़ों बादलों की गर्जना जैसी आकाशवाणी होती है। साधक को उसे ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और तीन वचन ले लेना चाहिए। हनुमानजी साधक की इच्छा निश्चय ही पूर्ण करते हैं।

[भैरव सिद्धि मन्त्र-१]

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र ।
कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे।
मेरा भेजा रक्षा करे।
आन बांधूं, बान बांधूं ।
फूल में भेजूं, फूल में जाय ।
कोठे जी पड़े थर-थर कांपे ।
हल हल हले ।
गिरि गिरि परे ।
उठि उठि भगे ।
बक बक बके ।
मेरा भेजा सवा घड़ी ।
पहर सवा, दिन सवा, मास सवा ।
सवा बरस को बावला न करे ।
तो माता काली की शय्या पे पग धरे ।
वाचा चूकै तो उमा सूखै ।
वाचा छोड़ कुवाचा करै ।
धोबी की नांद ।
चमार के कूंडै में पड़ै ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरा भेजा बावला न करे ।
तो रुद्र के नेत्र से आग की ज्वाला कढ़ै ।
सिर की जटा टूट भूमि में गिरे ।
माता पार्वती के चीर पे चोट पड़े ।
बिना हुकुम नहीं मारना ।
हे काली के पुत्र कंकाल भैरव ।
फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ।
सत्य नाम आदेश गुरु को ।

उक्त मन्त्र की प्रयोग एव साधन विधि पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार ही करे। मन्त्रानुसार के जप से भैरव देव साधक को स्वयं दर्शन प्रदान कर उसकी मनोभिलाषा पूर्ण करते हैं।

[भैरव सिद्धि मन्त्र-२]

ॐ गुरु जी! ॐ नमो आदेश गुरु को ।
काला भैरव काला केश, कानों मुंदरा ।
भगवा भेष मार-मार काली पुत्र
बारह कोस की मार भूतां हाथ कलेजी ।
खूंहां गेडिया, जहाँ जाऊं
भैरव साथ बारह कोस की
ऋद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की
सिद्धि ल्यावो, सूत्यो होय तो जगाय ल्यावो
बैठ्या होय तो उठाव ल्यावो ।
अनंत केसर को भारी ल्यावो ।
गौरां पार्वती की बिछिया ल्यावो ।
गेले की रस्तान मोय,
कुवें की पानिहारी मोय,
हटा बैठ्या बणियां मोय,
घर बैठी बणियानी मोय,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजा की रजवाड़ मोय,
महलां बैठी राणी मोय,
डाकिनी को साकिनी को
भूतणी को, पलीतणी को।
ओपरी को, पराई को लाग कूं।
लपट कूं, धूम कूं, धमका कूं।
अलीया को, पलीया को, चौड़ को।
चौगट को, काचा को, कलवा को,
भूत को, पलीत को।
जिन को, राक्षस को,
बैरियां से बरी कर दे
नजरां जड़ दे ताला।
इत्ता भैरव नहीं करे तो
पिता महादेव की जटा तोड़
तागड़ी करे, माता पार्वती का
चीर फाड़, लंगोट करे
चल डाकिनी-शाकिनी
चौडूं मैला बाकरा।
देस्यूं मद की धार।
भरी सभा में द्यू आने में
कहाँ लगाई थी बार
खप्पर में खाय, मुसाण में लोटे
ऐसे कुण काला भैरूं की पूजा मेटे,
राजा मेटे राज से जाय,
प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय,
जोगी मेटे ध्यान से जाय,
शब्द सांचा, ब्रह्म वांचा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चलो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यह भैरव साधना इकतालीस दिवसीय है। किसी भी शनिवार से रात के समय में मन्दिर अथवा त्रिकोण पत्थर को भैरव रूप मानकर तेल, पान, सिन्दूर, नारियल चढ़ाकर की जाती है। साधना काल में साधक प्रतिदिन सरसों के तेल का अखण्ड दीपक जलाए। कपूर, केसर, लौंग, छार-छबीला की धूप दे। प्रतिदिन निश्चित समय पर एक माला का जाप करे। अन्तिम दिन दशांश हवन करे तो भैरव स्वयं दर्शन देते हैं। उस समय साधक भयभीत न हो तथा भैरव देव को फूलों की माला पहनाकर लड्डू, बाटी-बाकला, पान, सुपारी, बकरे की कलेजी, शराब भेंट करे। यदि प्रत्यक्ष दर्शन न हों तो सारी सामग्री भैरव देव की मूर्ति को समर्पित कर दे। काले कुत्ते को साधना के समय में नित्य भैरव की प्रिय वस्तुएँ खिलाए। भैरव देव को काले कुत्ते अतिप्रिय हैं।

[पीर सिद्धि के मन्त्र]

बिस्मिल्लाह अर्रहमान निर्ररहीम ।
साह चक्र की बावड़ी ।
गले मोतियन का हार ।
लंका सौ कोट समुद्र सी खाई ।
जहाँ फिरे मोहम्मदा वीर की दुहाई ।
कौन वीर आगे चले ।
सुलेमान वीर चले ।
दुर्शनी वीर चले ।
नादिरशाह वीर चले ।
मुट्ठी पीर चले ।
नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
चलो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यह मन्त्र मुट्ठी पीर का मन्त्र है। इसकी साधना तीस दिवसीय है। तीस दिन में एक लाख मन्त्रों का जप किया जाता है। मन्त्र जप का आरम्भ किसी भी बृहस्पतिवार की रात से बबूल के पेड़ के नीचे पश्चिम की ओर मुख करके किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाना चाहिए। जप पूर्ण होने पर या बीच में मुट्ठी पीर प्रकट हो जाते हैं। उस समय साधक उन्हें प्रसन्न कर ले तो उसकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

[मुहम्मदा पीर का मन्त्र]

ॐ नमो हांकत युगराज फाटंता काया ।
जिस कारण युगराजा मैं तोको ध्याया ।
हुंकारत युगराज आया ।
गाजंत आया । घोरंत आया ।
सिर के फूल बखेरंत आया ।
और की चौकी उठावंत आया ।
अपनी चौकी बैठावंत आया ।
और का किवाड़ तोड़ता आया ।
अपना किवाड़ भेड़ता आया ।
बांधि बांधि किसको बांधी ।
भूत को बांधी ।
प्रेत को, देव दानव को बांधी ।
उड़ंत गड़ंत योगिनी बांधी ।
चौर चिरणागार को बांधी ।
तिरसठ कलुवा को बांधी ।
चौंसठ योगिनी को बांधी ।
बावन वीर को बांधी ।
द्वार को बांधी । हाट को बांधी ।
गले को बांधी । गिरारे को बांधी ।
किया को बांधी । कराया को बांधी ।
अपनी को बांधी । पराई को बांधी ।
मैली को बांधी । कुचैली को बांधी ।
पीली को बांधी । स्याह को बांधी ।
सफेद को बांधी । काली को बांधी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाली को बांधी ।
बांधी बांधी रे गढ़, गजनी के महमदा पीर ।
चलैं तेरे संग सत्तर सौ वीर ।
जो बिसरि जाएं तो सौ राजा हलाल जाएं ।
उलटी मार । पलटी मार ।
पछाड़ मार । धर मार ।
कब्जा चढ़ाय । सुड़िया हलाय ।
शीश खिलाय । शब्द सांचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र मुहम्मदा पीर का मन्त्र है। इस मन्त्र का जप सूर्यग्रहण काल में नदी के निर्जन तट पर अथवा उद्यान के एकान्त में अधिक से अधिक जपने से मुहम्मदा पीर साधक को दर्शन देकर उसकी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

[बिरहना पीर का मन्त्र]

पीर बिरहना । फूल बिरहना ।
धुं धुंकार सवा सेर का तोसा ।
वाय अस्सी कोस का धावा करे ।
सात सौ कुंतक आगे चले ।
सात सौ कुंतक पीछे चले ।
छप्पन सौ छुरी चले ।
बावन सौ वीर चले ।
जिसमें गढ़ गजनी का पीर चले ।
और की भुजा उखाड़ता चले ।
अपनी भुजा टेकता चले ।
सूते को जगावता चले ।
बैठे को उठावता चले ।
हाथों में हथकड़ी गेरे ।
पैरों में कड़ा गेरे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हलाल माहीं दीठ करे ।
मुरदार माहीं पीठ करे ।
बलवान नबी को याद करे ।
ॐ नमः ठः ठः स्वाहा ।

उक्त मन्त्र बिरहना पीर का मन्त्र है। साधक सूर्यग्रहण काल में इस मन्त्र का अधिक से अधिक जप करे। जप काल में सवा सेर मोहन भोग का हलवा सामने रखे और लोबान व देसी घी का दीप जलाकर रखे। जब बिरहना पीर खुश होकर साधक को दर्शन दे, तब साधक उन्हें चमेली के पुष्पों की माला पहना कर उनसे बातचीत भी कर सकता है। बिरहना पीर साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

[गो जोगिन सिद्धि मन्त्र]

आगारी जो गुरु यागे ।
जोगिन गुरु डंड बतियां ।
करिया बलईयां ।
री जोगन मुख अनरिता ।
गायति रही रतियां ।
गो जोगिन चल इन अकेलियां ।
गो मारो है तालियां ।
गो जोगिन बांधऊं नजरियां ।
गो जोगिन आ पहियां ।
ना आए तो दोहाई मइया बनिता की ।
दोहाई सलिमा पैगंबर की ।
दोहाई सलाई छू ।

गो जोगिन को माँ काली का ही एक रूप माना जाता है। इसे साधक जो आज्ञा देता है, यह उसकी आज्ञा का पालन करती हैं। उक्त मन्त्र को साधक किसी भी शुक्रवार की रात में रात भर जपे। जप काल में देसी घी का दीपक और लोबान के धूप जलाकर रखे। जब गो जोगिन खुश होकर साधक को दर्शन दे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब साधक चमेली के फूलों की माला या फूल गो जोगिन को पहना दे। यह माला साधक जप के समय अपने पास पहले से ही रख ले।

[शौहा वीर सिद्धि मन्त्र]

सोह चक्र की बावड़ी
डाल मोतियन का हार ।
पद्म निचानी नीकरी ।
लंका करे निहार ।
लंका सौ कोट समुद्र सी खाई ।
चले चौकी हनुमंत वीर की दुहाई ।
कौन कौन वीर चले ।
मरदाना वीर चले ।
सवा हाथ जमीन को सोखंत करना ।
जल को सोखंत करना ।
पय को सोखंत करना ।
पवन को सोखंत करना ।
लाग को सोखंत करना ।
चूड़ी को सोखंत करना ।
पलना को । भूत को । पलीत को ।
अपने वीर को सोखंत करना ।
मेवत उपात भाकी चंद्र कले नहीं ।
चलती पवन मदन सूतल करे ।
माता का दूध हराम करे ।
शब्द सांचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र का अनुष्ठान गुरूवार से प्रारम्भ करना चाहिए। साधक इक्कीस दिनों तक रात-दिन मन्त्र का जाप करे। जाप करते समय लोबान जलता रहना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इक्कीसवें दिन रात के समय शौहा वीर साधक को दर्शन देकर उसे मनचाहा वर प्रदान करते हैं।

[वीर सिद्धि मन्त्र]

काली काली महाकाली ।
इंद्र की बेटी, ब्रह्मा की साली ।
बालक की रखवाली ।
काले की जय काली ।
भैरों कपाली ।
जटा रातों खेलें ।
चंद हाथ कैडी मठा ।
मसनिया वीर । चौहटे लड़ाक ।
समानिया वीर । बज्रकाया ।
जिह करन नरसिंह धाया ।
नरसिंह फोड़ कपाल चलाया ।
खोल लोहे का कुंडा । मेरा तेरा बान फाटक ।
भूगोल बैठान ।
काल भैरों बाबा नाहर सिंह ।
अपनी चौकी बैठान ।
शब्द सांचा,
फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र का जप किसी भी शनिवार या रविवार की रात से आरम्भ करना चाहिए। जब तक वीर से साक्षात्कार न हो, तब तक मन्त्र जपना चाहिए। वैसे यह मन्त्रानुष्ठान इकतालीस दिवसीय माना गया है। इस काल में साधक नित्य रात में एक हजार आठ बार मन्त्र जपे। जप के समय सरसों के तेल का दीप व लोबान जलाए। वीर जब आशीर्वाद दें, तब कभी भी जरूरत पड़ने पर मन्त्र का सात बार उच्चारण करके जिस किसी पर भी फूंका जाएगा वह साधक का दास बन जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[हाजरात सिद्ध मन्त्र]

काला भैरों काला काल ।
काला भेज्या चारों धाम ।
काल्या काला कहां गया ।
मैंने भेज्या वहाँ गया ।
कौन को दिखाए,
भगे भगाए को रूठे रूठाय को ।
धरती में धन माल को ।
देव दानव को ।
चोर चौपाये को ।
जहां के तहां को न बताए तो ।
माता कालिका के खप्पर में जरे ।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

हाजरात सिद्धि के इस मन्त्रानुष्ठान में छोटे बालक अथवा बालिका को भी शामिल किया जा सकता है। इस मन्त्रानुष्ठान में काजल विशेष को हथेली पर अथवा नाखून पर एक रूपये के सिक्के की आकृति प्रमाण के रूप में लगाया जाता है। प्रारम्भ में काजल के वृत्त में प्रकाश की किरणें निकलती हैं, तत्पश्चात् नाग देवता दर्शन प्रदान करते हैं। उस काल में साधक नाग देवता को नमस्कार करके अपनी इच्छा को व्यक्त करे। तत्पश्चात् नाग देवता चलकर अथवा उड़कर उस स्थान पर जाते हैं, जिस स्थान के बारे में साधक के द्वारा जानकारी चाही गई है। हाजरात सिद्धि के बाद गड़े हुए धन, खोये हुए व्यक्ति के विषय में भी जाना जा सकता है।

[वीरों की साधना का मन्त्र]

लाइलाहाइल्लिल्लाह ।
हजरत वीर की सल्तनत को सलाम ।
वी आजम जेर जाल मश्वल कर ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेरी जंजीर से कौन-कौन चले।
बावन भैरों चलें।
चौंसठ योगिनी चलें।
देव चलें। विशेष चलें।
हनुमंत की हांक चले।
नरसिंह की धाक चले।
नहीं चले तो सुलेमान के बखत की दुहाई।
एक लाख अस्सी हजार पीर पैगंबर की दुहाई।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मन्त्र एक साथ अनेक वीरों की साधना का मन्त्र है। इस मन्त्र को अकेले कदापि नहीं करना चाहिए। इस मन्त्र का जप बृहस्पतिवार अथवा शुक्रवारसे आरम्भ करना चाहिए। साधना के समय सफेद रंग के कपड़े पहन कर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके मन्त्र का जाप करना चाहिए। यह सिर्फ बारह दिनों की साधना है। साधना काल में लोबान जलाए रखना चाहिए। बारहवें दिन जब वीर एक साथ उपस्थित हों तो उन्हें वचनबद्ध कर लेना चाहिए।

[अगिया बैताल सिद्धि मन्त्र]

ॐ नमो अगिया वीर बैताल।
पैठि सातवें पाताल।
लांघ अग्नि की जलती झाल।
बैठि ब्रह्मा के कपाल।
मछली, चील, कायली, गूगल, हरिताल।
इन वस्तां को लै चलि।
न लै चलै तो माता कालिका की आन।

इस मन्त्र को साधक होली की रात में मछली, चील, गूगल, हरिताल अपने समीप रखकर निर्जन स्थान में इस मन्त्र का अधिक से अधिक बार जप करे। जप के समय धूप व चर्बी का दीपक जलाए रखे। इससे खुश होकर अगिया बैताल अर्थात् अग्नि बैलाल साधक के सामने आता है और मन्त्र सिद्धि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का आशीर्वाद देता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक कुछ कंकड़ों पर मन्त्र को १०८ बार पढ़कर वह कंकड़ जिधर भी फेंकेगा, वहीं आग लग जाएगी।

[मसान सिद्धि मन्त्र]

ॐ नमो आठ खाट की लाकड़ी ।
मूंज बनी का कावा ।
मुवा मुर्दा बोले ।
न बोले तो महावीर की आन ।
शब्द सांचा फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र मसान जगाने का मन्त्र है। मसान जगाने के लिए साधक एक बोतल शराब, लोबान, छार-छबीला, चमेली के पुष्प, कपूरीकचरी, लौंग, इत्र, आटे का दीपक आदि वस्तुओं लेकर रात में श्मशान जाए। वहाँ जाकर लोबान की धूप और चौमुखा दीपक ज़लाकर मन्त्र का एकाग्रता से जप करे। कुछ देर के बाद मसान जागकर हाहाकार मचाने लगेगा। उस समय साधक भयभीत न हो; बल्कि धैर्य रखते हुए मसान पर इत्र छिड़के और शराब से अर्घ्य दे। ऐसा करने पर मसान साधक के समक्ष साक्षात् प्रकट हो जाएगा। मसान के प्रकट होने पर साधक चमेली के फूल बरस कर मसान का स्वागत करे तथा नमस्कार करके बची सामग्री भी उसे अर्पित कर दे। खुश होने पर मसान साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

[हमजाद सिद्धि मन्त्र]

आगम निगम की खबर लगावे ।
सोऽहं पारब्रह्म को नमस्कार ।

यह मन्त्र अनुष्ठान चालीस दिवसीय है। इस समय साधक प्रतिदिन मन्त्र को पच्चीस हजार बार जपे। इस प्रकार हमजाद सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् साधक एक ही जगह पर बैठा-बैठा दूर देश तक की खबर जान सकता है।

[डाकिनी सिद्धि का मन्त्र]

ॐ स्यार की खवासिनी ।
समंदर पार धाई ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आव, बैठी हो तो आव।
ठाडी हो तो ठाडी आव।
जलती आ। उछलती आ।
न आए डाकिनी तो जालंधर पीर की आन।
शब्द सांचा। पिंड काचा।
फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा।

साधक इस मन्त्रानुष्ठान को घर के शान्त कक्ष अथवा निर्जन चौराहे पर करे। साधना के वक्त डाकिनी की तृप्ति के लिए मांस-शराब पास में रखे। दीपक चर्बी का जलाए। मन्त्र की दस माला जप ले, तब हाथ में पीली सरसों लेकर मन्त्राभिमन्त्रित कर सब दिशाओं में फेंक दे और फिर से मन्त्र-जप आरम्भ शुरू कर दे। ऐसा करने से आस-पास की सभी डाकिनियाँ साधक के पास दौड़ी चली आएंगी।

[सिद्ध हनुमान जंजीरा-१]

ॐ गुरु जी हनुमन्ता बलवन्ता जेने तात तेल चन्डता जे नर आवे मार-मार करन्ता ते नर पाय पड़न्ता इन्ह कहाँ से आयो? मेरु पर्वत से आयो कोण लायो?

गौरी-पुत्र गणेश लायो कोण के काज? वीर हनुमान् के काज हनुमान् बंका मारे डंका गुरु चोट डाकणी-साकणी माथे हाँक वगाडे वीर हनुमन्ता कागज-पत्र-रोल-सोल-मोल जती-सती की मदद मति संज्ञा माथे फारगती चल-चल कर जहाँ पड़े डेरी पड़े जले थले नवकुल नाँग की आज्ञा फिरे मेरा शब्द फिरे।

श्री राम चन्द्र की आज्ञा फिरे सबद सांचा, पण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इल-इल-महा-इल बोलते की जीभ कील चलते का पाँव कील मारते का हाथ कील देखते की नजर कील मुए की कबर कील भूत बाँध, पलीत बाँध बाँधने वाला हनुमान् कहाँ से आया?

कली कोट से आया सब हमारा विध्न हरता आया जैसा रामचन्द्र का काज सुधार्या तेसा काज हमारा सुधारी मेरा शब्द फिरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री रामचन्द्र की आज्ञा फिरे शब्द सांचा, पण्ड कांचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा उत्तर खण्ड से जोगी आया साथे हनुमान वीर लाया अताल बाँधू, पाताल बाँधू पर मन बाँधू चार मन बाँधू चोरा बाँधू, चौंटा बाँधू भूत बाँधू, चौंटा बाँधू भूत बाँधू, पलीत बाँधू डाकनी बाँधू, साकणी बाँधू दश मस्तक वाला रावण बाँधू सबद सांचा, पण्ड कांचा चलो मन्त्र ईश्वरी वांचा

इस जंजीरे का नित्य हनुमान विषयक नियम मानते हुए जप करने से श्री हनुमान जी साधक की सर्व-प्रकार से रक्षा करते हैं तथा उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

[सिद्ध हनुमान जंजीरा-२]

ॐ वीर बज्र हनुमताय नमः
चलो राम दूताय नमः
चलो बाँध लोहे का गदा
वज्र का कछौटा
पान-तेल-सिंदूर की पूजा
ओं खं खं खं खट पवन पतंग।
ओं चं चं चं कहसि कुबेर
भैरव कील, मसान कील।
देव कील, दानव कील, दैत्य-
कील, ब्रह्म-राक्षका कील।
छल-छिद्र मेंद कील, नाफ-
की तिजारी कील, देव-अचल-
चल कील, पृथ्वी कील, मेघ-
कील, मेरे ऊपर घात करे।
छाती फाट के मरैं, माता-
अंजनी की दुहाई, सूर्य-वंशी-
राजा राम चन्द्र की दुहाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जती लक्ष्मण की दुहाई।
शब्द साँचा, पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

यह सिद्ध हनुमान जंजीरा है, जो साधक इस जंजीरे का नित्य जाप श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रख श्रद्धा से करता है तो हनुमान जी की साधक पर असीम कृपा बनी रहती है तथा उसके समस्त संकटों का नाश होता है।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ रक्षाकर्म प्रयोग ❀

[जंगली जीवों से रक्षा का मन्त्र-१]

बाघ बिजुरी सर्प चोर चारिउ बांधौ एक ठौर धरती माता आकाश पिता रक्ष रक्ष श्री परमेश्वरी कालिका की वाचा दुहाई महादेव की ।

किसी भी जगह पर सोते या रहते समय इस मन्त्र को बोलकर तीन बार ताली बजा देने से साँप, चोर, बिजली, जंगली जीवों का डर नहीं रहता।

[जंगली जीवों से रक्षा का मन्त्र-२]

खाट पडण धरती मरण या देहिं नारायण आपके शरण, ईश्वर की चौकी ब्रह्मा का ताला जहां सोवै वहां राम रखवाला आस्तिक आस्तिक चोर सर्प भय सब नास्तिक ।

साधक किसी भी स्थान पर सोये। इस मन्त्र को तीन अथवा सात बार सोने से पहले उच्चारण कर ताली बजा देने से चोर, सर्प, जहरीले जीवों के काटने का भय नहीं रता।

[देह रक्षा मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु को वज्र वज्री वज्र किवाड़ वज्री मैं बांधा दशों द्वार जो घाले घात उलट वेद वाही को खात पहली चौकी गणपति की दूजी चौकी हनुमंत की तीजी चौकी भैरव की चौथी चौकी राम रक्षा करने की श्री नरसिंह देव जी आए शब्द सांचा, पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को ।

यह मन्त्रानुष्ठान किसी भी शनिवार से आरम्भ करके इक्कीस दिनों तक करना चाहिए। साधक अपने सामने तेल का दीप, गुग्गुल जलाए और ऋतु फल, मिष्ठान्न आदि रखकर नित्य सुबह दो हजार दो सौ अड़सठ (२२६८) बार मन्त्र का जाप करे। मन्त्र सिद्ध होने पर प्रयोग के समय एक सौ आठ बार भभूत पर मन्त्र पढ़कर उस भभूत को शरीर पर लेप ले। ऐसा करने से शरीर हर प्रकार से सुरक्षित रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[रक्षाकारी मन्त्र-१]

ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिंड हमारा पैठा ईश्वर की कुंजी ब्रह्मा का ताला मेरे आठों याम का यती हनुमंत रखवाला ।

किसी भी तरह का संकट आने पर इस मन्त्र को तीन या इक्कीस बार उच्चारण करने से सभी प्रकार से रक्षा होती है।

[रक्षाकारी मन्त्र-२]

झाड़ि झाड़ि कापड़पिंदि वीर मुष्टे बांधि बाल बुले एलाम मशान भूम होते भैरव काटार होते लोहार बाड़ी बाम होते चामदड़ि आज्ञा दिल राजा चुड़े होते लोहार किला मुद्‌गर धिनि बिगलि घुंडिकर आज्ञे राजा चुडंगर आज्ञे विग्लि घुंडि ।

उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींचने से रक्षा होती है। ओझाओं में यह मन्त्र बहुप्रचलित है।

[रक्षाकारी मन्त्र-३]

ॐ कालिका खड़ग खप्पड़ लिये ठाढ़ी जोत तेरी है निराली पीती भर भर रक्त प्याली कर भक्तों की रखवाली न कर रक्षा तो महाबली भैरव की दुहाई ।

ऊपर लिखे गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपनी ही छाती पर फूंक मारने से सभी प्रकार से रक्षा होती है। इसका जप करते हुए दूसरे को झाड़ा भी दिया जा सकता है।

[हजरत पैगम्बर अली की चौकी]

याही सार-सार-सार, जिन्न देव पारी नवस्कफार, एक खाय दूसरे को फार, चहुं ओर अमिया पसार, मलायक अस चार दुहाई दस्तखे जिब्राइल, बाईं वे खैभि काइल, दाईं दस्न दस्न, हुसैन पीठ, खेई खेई, आमिल कलेजे राखे इज्राइल दुहाई मुहम्मद अलोल्लाह इलाह की, कंगूर लिल्लाह की खाई, हजरत पैगंबर अली की चौकी, तख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह एक मुस्लिम शाबर मन्त्र है। यह श्रेष्ठ करने वाला मन्त्र है। कोई भी साधना करने से पहले साधक इस मन्त्र को पढ़कर सात बार ताली बजाए या सुरक्षा रेखा भी खींची जा सकती है।

[चोर से घर की सुरक्षा का मन्त्र]

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा चोर बंधय ठः ठः ।

उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध करें। तत्पश्चात् प्रयोग काल में मन्त्र को मिट्टी पर सात बार पढ़कर मिट्टी घर के दरवाजे के पास की जमीन पर दबा देने से चोरों से घर की सुरक्षा होती है।

[गृह सुरक्षा के लिए कालिका सिद्ध मन्त्र]

ॐ उत्तरा-खण्ड की काली उत्तर को बाँध पूरब को बाँध पच्छिम को बाँध दक्खिन को बाँध आगा बाँध पीछा बाँध घर के चारों कोने बाँध मेरी बाँध न बँधे तो काली माई की फिरै दुहाई शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मन्त्र का अनुष्ठान इक्कीस दिन का है पुस्तक में कही विधि के अनुसार उक्त मन्त्र को सिद्ध करें फिर एक मिट्टी का सकोरा (कुज्जा या पुखा) ग्रहण कर उसकी पेदा (तली) में छोटा छिद्र करें फिर उसमें शराब, दूध, गौमूत्र भरकर मन्त्र का जाप करते हुए सकोरे को हाथ में ग्रहण कर घर के सात चक्कर लगायें, फिर चार निम्बू व चार बड़ी लम्बी कीलें लेकर घर के चारों कोनों में चारों निम्बुओं को धरती में दबाकर उनके ऊपर कीलें ठोक दें तो घर सदा के लिए अभिचार कर्मों से सुरक्षित रहेगा।

[घर की सुरक्षा का मन्त्र]

हाट चलते बाट बांधूं बाट चलते घाट बांधूं
स्वर्ग में राजा इंद्र बांधूं, पाताल में वासुकी नाग बांधूं
शिकाली बाणन तोड़ के मछली मारूं टेंगरामाछी मारूं
गाछ फूटे डाल कारूं फूल उठे तार खाई बन
किए उजार आगे आये बांधूं पाछू आये बांधूं बाएं
दाएं बांधूं यह बंधन को बांधत ईश्वर महादेव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बांधूं देव हम घर में सहदेव हम सोच रहेऊं
अकेल लोहे के दो कड़ा मांस का पत्थर होवे
काटे कूट बड़े, पिता की धर्म दुहाई ।

उक्त मन्त्र को साधक शुद्ध स्थान की मिट्टी लेकर इस मन्त्र को सात बार मिट्टी पर पढ़े तथा वह मिट्टी घर की सब दिशाओं में फेंक दे तो मन्त्र के असर से घर हर तरह से सुरक्षित रहेगा।

[साधना में सुरक्षा का मन्त्र]

छोटी-मोटी थमंत वार को वार बांधे, पार को पार बांधे, मरघट मसान बांधे, टोना और टंवर बांधे, जादू वीर बांधे, दीठ और मूठ बांधे, बिच्छू बांधे और सांप बांधे, भेड़िया-बाघ बांधे, लखूरी सियार बांधे, अस्सी-अस्सी दोष बांधे, कालिका लिलार बांधे, योगिनी संहार बांधे, ताडिका कलेज बांधे, उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम बांधे, मरी मसानी बांधे और बांधे डायन भूत के गुण, लाइल्लाह को कोट इल्लल्लाह की खाई, मुहम्मद रसूल्लिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई ।

उक्त मन्त्र किसी भी शुभ मुहूर्त्त या महानिशाकाल में एक हजार बार जपने से सिद्ध हो जाता है या फिर सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण आरम्भ होने से खत्म होने तक लगातार जपकर सिद्ध किया जा सकता है। इस मन्त्र की विशेषता यह है कि १०-१५ मिनट एकाग्र भाव से लगातार जपने पर भी यह मन्त्र सहज ही सिद्ध हो जाता है। इसका प्रयोग किसी भी साधना में एक बार कर लेने पर साधना विघ्नरहित पूर्ण होती है।

[आत्म रक्षा मन्त्र]

''ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्''

उपरोक्त मन्त्र का नित्य पाँच सौ बार जाप करने से साधक को समस्त सुख प्राप्त होते हैं और आत्मभय से दूर होकर व्यक्ति ''निर्भय'' हो जाता है।

[ताली से रक्षा मन्त्र]

ॐ काली काली महाकाली ।
इंद्र की बेटी ब्रह्मा की साली ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उड़ बैठी पीपल की डाली ।
दोनों हाथ बजावै ताली ।
जहां जाये वज्र की ताली ।
वहां न आवे दुश्मन की हाली ।
दुहाई कामरू कामाक्षा नैना योगिनी की ।
ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की ।
दुहाई वीर मसान की ।

यह स्वत: सिद्ध मन्त्र है। इस मन्त्र को सात बार पढ़कर तीन ताली बजा देने से ही सभी प्रकार से रक्षा होती है।

[गर्भ रक्षा करने का मन्त्र-१]

ॐ नमो भगवते महारौद्राय गर्भ स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् रविवार को पुष्य नक्षत्र काल में काले धतूरे की जड़ उखाड़कर लाए तथा साधक उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करे और काले धतूरे की जड़ को गर्भवती स्त्री के कमर में धारण करा दे ऐसा करने से स्त्री के गर्भ की रक्षा होती है।

[गर्भ रक्षा करने का मन्त्र-२]

ॐ नमो कामरूप कामाख्या देवी जल बांधूं जलवाई बांधूं बांध दूं जल के तीर पांचों दूत कलुआ बांधूं बांधूं हनुमंत वीर सहदेव की धनुवा अर्जुन का बाण रावण रण को थाम ले नहीं तो हनुमंत की आन शब्द सांचा, पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। मन्त्रसिद्धि के पश्चात् स्त्री को झाड़ा देते हुए स्त्री के सिर से पैर तक लम्बा लाल धागा लेकर उक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करे और धागा में इक्कीस ही गाँठ लगाए और इस धागे को स्त्री को धारण करा दे। इस क्रिया को विधिवत् करने से स्त्री के गर्भाशय का विकार दूर हो जाता है और स्त्री न केलव गर्भ धारण करती है अपितु गर्भ भी सभी प्रकार से सुरक्षित हो जाता है।

[गर्भ रक्षा करने का मन्त्र-३]

ॐ रुद्राभी द्रव हो हा हा ह ओ का ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि साधक किसी भी रविवार को गर्भवती स्त्री के पास बैठे और गूगल की धूनी देकर उक्त मन्त्र का एक सौ इक्कीस बार जप करे तो गर्भ की रक्षा होती है।

[गर्भ रक्षा करने का मन्त्र-४]

ॐ नमो गंगा उकारे गोरख वहा घोरघी पार गोरख बेटा जाय जयद्रुत पूत ईश्वर की माया दुहाई महादेव की ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् कन्या के हाथ से कते सूत को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करे और सूत को गर्भवती स्त्री को धारण करा दे। ऐसा करने से गर्भ की रक्षा होती है अर्थात् गर्भ गिरता नहीं है।

[गर्भ रक्षा करने का मन्त्र-५]

ॐ नमः आदेश गुरु का ।
ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख ।
नारसिंह यती मोसते बांधि राख ।
श्री गोरखनाथ कांखते बांधि राख ।
हपूलिका राजा सुंडो से बांधि राख ।
दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राख ।
थमे गर्भ ओ बांधे घाव ।
थामे माता पार्वती यह गंडो बांधूं ईश्वर यती ।
जब लग गंडो कंठ पर रहे ।
तब लग गर्भ काया में रहे ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक मन्त्र सिद्ध करने के बाद गर्भवती स्त्री के सिर से पैर तक लम्बाई का धागा लेकर उक्त मन्त्र से इकतीस बार अभिमन्त्रित कर ले। इसके बाद साधक धागे में सात गाँठें लगाए और पुनः सात बार उक्त मन्त्र का मन्त्रोच्चारण करे और उस धागे को गर्भवती स्त्री को धारण करा दे। इस प्रकार करने से स्त्री के गर्भ की रक्षा होती है अर्थात् गर्भ नहीं गिरता।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ मोहनकर्म प्रयोग ❀

[स्त्री मोहन मन्त्र-१]

ॐ भगवती भग भागदायिनी 'देवदत्तीं' मम मोहय कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के लिए साधक गुरुवार को प्रसन्न भाव होकर थोड़ा-सा नमक ले और उसे सात बार उक्त मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे। फिर साधक जिस स्त्री को मोहित करना चाहता है उस स्त्री के खाने-पीने की चीज़ों में उस नमक को मिलाकर दे दे। ऐसा करने से वह स्त्री साधक पर तन-मन-धन से मोहित हो जाएगी। साधक 'देवदत्ती' की जगह इच्छित व्यक्ति का नाम बोलता जाय।

[स्त्री मोहन मन्त्र-२]

ॐ नमो आदेश गुरु को कामरू देश कामाक्षा देवी तहा बैठे इस्माईल जोगी, जोगी के आंगन फूल क्यारी फूल चुन-चुन लावे लोना चमारी फूल चल फूल-फूल बिगसे फूल पर बीर नरसिंह बसे जो नहीं फूल का विष कबहुं न छोड़ें मेरी आस मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ मुहूर्त में अपनी क्षमता के अनुरूप जपकर सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्धि के बाद साधक पुष्प को सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उस स्त्री पर फेंके जिसे साधक मोहित करना चाहता है, तो वह स्त्री साधक पर मोहित हो जाती है। पुष्प कोई भी ले सकते हैं। यदि साधक गुलाब का पुष्प ले तो यह अति उत्तम है।

[स्त्री मोहन मन्त्र-३]

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को यह गुड़ राती यह गुड़ माती यह गुड़ आवे पड़ती जो मांगूं वही पाऊं सोवत तिरिया को जगाय लाऊं चल अगिया बैताल 'अमुक' हृदय पैठ घलावै चाल निशि लो चैन न दिन को सूख, घूम फिर ताके मुख जब मकड़ा मकड़ा से टले तो माथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फार दो टूक पड़े । माला कलवा काली एक कलवा सोइ धाय चाटे मेरा तलवा आंख के पान कवारी इसे धन और यौवन से खरी पियारी रेन रंग गुड़ में लसे शीघ्र 'अमुक' आवे फलाना पास हनुमंत जी की शक्ति फुरो ईश्वरो वाचा ।

साधक उक्त मन्त्र को प्रतिदिन इक्कीस बार सात दिन तक जप करे। जप शनिवार से शनिवार तक करना चाहिए तथा हनुमानजी की विधिवत् पूजा अर्चना करनी चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर मन्त्र के प्रयोग के समय जरा-सा गुड़ में अनामिका उंगली के खून की कुछ बूँदें मिलाकर उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलकर गुड़ को अभिमन्त्रित कर ले। फिर साधक वह गुड़ जिस भी स्त्री को खिलाएगा, वही स्त्री साधक पर पूर्ण रूप से सम्मोहित हो जाएगी।

[स्त्री मोहन मन्त्र-४]

ॐ नमो काला कलुवा काली रात ।
निश की पुतली माझी रात ।
काला कलुवा घाट बाट ।
सोती को जगाय लाओ ।
बैठी को उठाय लाओ ।
खड़ी को चलाय लाओ ।
मोहिनी योगिनी चल ।
राज की ठाऊं 'अमुकी' के तन में चटपटी लगाओ ।
जीया ले तोड़ ।
जो कोई इलायची हमारी खावे ।
कभी न छोड़े हमारा साथ ।
घर को तजे बाहर को तजे ।
हमें तज और कने जाई ।
तो छाती फाट तुरंत मर जाई ।
सत्य नाम आदेश गुरु का ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में या गुरु पुष्य योग में एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। जप का दशांश एक सौ आठ बार होम कर साधक इलायची को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ले। फिर साधक यह इलायची जिस भी स्त्री को मोहित करना चाहता है, उसे खिला दे तो वह स्त्री साधक पर मोहित हो जाएगी। साधक 'अमुकी' के जगह उस स्त्री का नाम उच्चारण अवश्य ही करे, जिसे वह सम्मोहित करना चाहता है।

[स्त्री मोहन मन्त्र-५]

ॐ नमो मनमोहिनी मोहिनी चला ।
गैर के मस्तक धरा तेल का दीपक जला ।
जल मोहुं थल मोहुं मोहुं सारा जगत ।
मोहिनी रानी जा शैया पै ला ।
न लाए तो गौरा पार्वती की दुहाई ।
लोना चमारी की दुहाई ।
नहीं तो वीर हनुमान की आन ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को दीपावली की रात्रि को जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक चमेली का तेल लेकर उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ले। फिर वह तेल मनचाही स्त्री पर डाल दे तो वह स्त्री साधक पर मोहित हो जाएगी।

[स्त्री मोहन मन्त्र-६]

काला कलुवा चौंसठ वीर ताल भागी तोर जहां को भेजूं वहीं को जाय मांस-मज्जा को शब्द बन जाए अपना मारा आप दिखाय चलत बाण मारूं उठत मूठ मारूं मार मार कलुवा तेरी आस चार चौमुखा दीया मार बादी की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे माता का दूध पिया हराम ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ले। फिर साधक जिस स्त्री को सम्मोहित करना है उसके बाएं पैर की मिट्टी लेकर सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसके सिर पर डाल दे। यदि साधक ऐसा करे तो वह स्त्री साधक पर तन-मन-धन से मोहित हो जाएगी।

[स्त्री मोहन मन्त्र-७]

ॐ नमो त्रिजट लम्बोदर वद वद अमुकीं मोहय मोहय स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी ग्रहण के समय एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक जरा-सा मल लेकर एक सौ आठ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सोने के समय अपने सिरहाने रखकर सो जाए। तत्पश्चात् अर्द्धरात्रि में उठकर वह जल पी जाए। यह क्रिया साधक प्रतिदिन इकतालीस दिन तक करे। 'अमुकी' के जगह पर उस स्त्री का नाम बोले जिसे वह मोहित करना चाहता है। यह एक विलक्षण मन्त्र है। अत: अधिक आवश्यकता पड़ने पर ही इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

[स्त्री मोहन मन्त्र-८]

ॐ नमो आकाश की योगिनी पाताल नाग ।
उठि हनुमंत जी 'फलानी' को लाग ।
परै न निद्रा बैठे न सुख ।
जो वो देखे न मेरो मुख ।
तब तक नहिं परै हिये में सुख ।
लाउ जो वाकू पियो ।
मोहि दीखै ठंडी हो जाय ।
आवत न काहू दिखाय ।
आउ आउ मेरे आगे लाउ ।
न लावै तो गुरु गोरखनाथ की आन ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्ध करने के बाद जब आंधी चल रही हो तो एक लौंग मुँह में रखकर प्रयोगार्थ खुली जगह पर खड़ा होकर उक्त मन्त्र को एक ही सांस में सात बार जपे और हाथ फैलाकर आंधी की मिट्टी को मुट्ठी में भर ले। तत्पश्चात् साधक ने जो लौंग मुख में रखी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, उसे निकालकर इस मिट्टी में पीस ले तथा मन्त्र से एक बार पुनः सात बार अभिमन्त्रित करके उस स्त्री के सिर पर डाल दे, जिसे साधक मोहित करना चाहता है। ऐसा करने से साधक उस स्त्री को इस प्रकार मोहित कर लेगा कि वह स्त्री उससे अलग होने का नाम ही नहीं लेगी। साधक 'फलानी' की जगह पर उस स्त्री का नाम अवश्य उच्चारित करे जिसे वह मोहित करना चाहता है।

[जगत् मोहन मन्त्र-१]

ॐ नमो सर्व जीव वशं कराय कुरु कुरु स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ मुहूर्त्तका चयन कर एक लाख बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के लिए पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ उखाड़कर ले आए तथा उसे सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने दाहिने हाथ में बाँध ले। इसके प्रभाव से साधक के व्यक्तित्व में निखार आ जाता है और वह संसार के सब जीवों को मोह लेने की शक्ति से सम्पन्न हो जाता है।

[जगत् मोहन मन्त्र-२]

ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व जगन्मोहनं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। जब मन्त्र सिद्धि हो जाये तब केसर और गोरोचन को आंवले के अर्क (रस) में मिलाकर घोंटकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके साधक अपने माथे पर तिलक लगाए तो उसमें सभी को मोह लेने की शक्ति आ जाती है। यदि साधक तेरई के बीजों का तेल निकलवा कर उसमें वस्त्र भिंगोकर, बत्ती बनाकर काजल तैयार कर ले तथा उस काजल को अपने नेत्रों में लगा ले तो उसमें सभी जीवों को सम्मोहन करने की शक्ति आ जाती है।

[जगत् मोहन मन्त्र-३]

ॐ श्रीं धूं धूं सर्व मोहयतु ठः ठः ।

साधक को यह मन्त्र एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। मन्त्र सिद्धि के बाद प्रयोग करते समय साधक बाज पक्षी के पंख को कस्तूरी के साथ पीसकर एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने माथे पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिलक लगाए तो जो कोई भी उस तिलक को देखेगा, वहीं साधक पर मोहित हो जायेगा।

[जगत् मोहन मन्त्र-४]

ॐ उड्डामरेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं ऊं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्धि के बादसाधक प्रयोग करने के लिए पान की जड़ को पानी में पीसकर सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाए। यदि साधक ऐसा करता है तो वह विश्व के सभी जीवों को मोहित कर लेता है।

[जगत् मोहन मन्त्र-५]

ॐ नमो अनरूठनी अशवस्यनी महाराज क्षनी फट् स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्धि के बाद प्रयोग के समय साधक उल्लू के पंख की लेखनी से बकरे के रक्त से कोरे कागज पर उक्त मन्त्र को एक सौर आठ बार लिखे और इसे अपनी पगड़ी में रखकर कहीं भी जाए तो लोग उस पर मोहित हो जाएंगे।

[जगत् मोहन मन्त्र-६]

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तां मोहयतु स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक उपयोग के लिए सिन्दूर, कुंकुम और गोरोचन को आंवले के रस में पीसकर उसको इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाए। यदि साधक ऐसा करता है तो उसमें सभी प्राणियों को मोह लेने की शक्ति आ जाती है।

[कूपजल मोहन मन्त्र]

ॐ यती हनुमंत यह जाय मरे घट पिंडकर कौन है और छत्तीस मय बन पड़े जेहि दश मोहूं जेहि दश मोहूं गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र को रविवार से शनिवार तक प्रतिदिन एक सौ चौवालिस बार हनुमान जी की प्रतिमा के आगे जपकर सिद्ध कर ले। फिर साधक चौराहे से सात कंकड़ ले आए और उन्हें एक सौ चौवालिस बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कुएं के जल में डाल दे। यदि साधक ऐसा कर देगा तो जो कोई भी उस कूपजल को पीयेगा, वही साधक पर मोहित हो जायेगा।

[महामोहन मन्त्र]

ॐ नमो पद्मिनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में जाय मोहूं । सर्व ग्राम मोहूं राज करंतारा मोहूं । फर्श पे बैठाय मोहूं पनिघट पनिहारिनी मोहूं । इस नगरी के छत्तीस पवनिया मोहूं । जो कोई मार मार करंत आवे उसे नरसिंह वीर बाम पद अंगूठां तर धरे और घेर लावे । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक किसी भी शनिवार अथवा रविवार के दिन या रात में नरसिंह भगवान की पूजा करे और गुग्गुल जलाकर घृत, शक्कर व पान सुपारी अर्पित कर उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जपकर होम करे। जब साधक मन्त्र सिद्ध कर ले तब रूई में चन्दन और लटजीरा (अपामार्ग) को मिलाकर बत्ती बनाकर काजल तैयार कर ले। फिर काजल को सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साधक अपनी आँखों में लगा ले तो ग्राम-नगर के सभी लोग साधक पर मोहित हो जाते हैं।

[हवन मोहन मन्त्र]

ॐ गणपति वीर बसै मासान जो मैं मंगी सो तुम आनु पांच लडुवा सिर सिंदुर त्रिभुवन मांगे चंपे के फूल अष्ट कुलि नाग मोहु जो नारी बहुत्तरि कोठा मोहु इंद्र की बेटी सभा मोहु आवती आवती स्त्री मोहु जावता जावता पुरुष मोहु डांवा अंग बसे नरसिंह जीवने क्षेत्रपालाये आवैं मार मर करंता सो जाई हमारे पाउ परंता गुरु की शक्ति हमारी भक्ति चलो मंत्र आदेश गुरु को ।

साधक हवन की सामग्री लेकर उक्त मन्त्र से तीन सौ इक्यावन बार आहुति दे। यदि साधक ऐसा करता है तो इस हवन का धुआं जहाँ तक जाएगा, वहाँ तक के सभी जीव परस्पर शत्रुता छोड़ देंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[तिलक मोहन मन्त्र-१]

ॐ नमो तिलक ईश्वर, तिलक महेश्वर, तिलक जय, विजयकर ! तिलक काढ़ि के निकलूं घर से मोहूं सकल संसार ।

यदि साधक कपूर, कस्तूरी, गोरोचन को मिलाकर इसका तिलक अपने ललाट पर लगाकर घर से बाहर कहीं भी जाएगा तो हर लोग साधक से प्रभावित होकर उसके अनुकूल काम करने लगेंगे। ऐसा करने के लिए किसी विशेष साधना की जरूरत नहीं है। परन्तु घर से बाहर निकलते समय साधक को उक्त मन्त्र का उच्चारण सात बार निश्चय ही करना चाहिए।

[ति'लक मोहन मन्त्र-२]

ॐ नमो आदेश गुरु को राजा मोहूं प्रजा मोहूं मोहूं ब्राह्मण बनियां हनुमंत रूप में जगत मोहूं तो रामचंद्र परमानियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक शनिवार के दिन हनुमार जी की मूर्ति को चोला चढ़ाकर विधिवत् पूजा कर प्रतिदिन एक माला के क्रम से इक्कीस दिन तक उक्त मन्त्र का जाप करे। तत्पश्चात् साधक मन्त्र जपते हुए चौराहे की मिट्टी का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस किसी भी व्यक्ति के समक्ष जाएगा वही व्यक्ति साधक का आज्ञाकारी बन जाएगा।

[तिलक मोहन मन्त्र-३]

माता अंजनी का हनुमान, मैं मनाऊं तू कहना मान । पूजा दे सिंदूर चढ़ाऊँ 'अमुक' रिझाऊं 'अमुक' को पाऊं । यह तिलक तेरी शान का । वह आवे मैं जब लगाऊं । नहीं आवे तो राजा राम की दुहाई । मेरा काम कर । नहीं आवे तो अंजनी की सेज पड़ ।

सबसे पहले साधक हनुमान जी की विधिपूर्व पूजा अर्चना करके उक्त मन्त्र जो जपते हुए उनकी मूर्ति पर सिन्दूर का टीका लगाकर जिस किसी के भी निकट जाएगा, वह व्यक्ति साधक की आज्ञा का पालन अवश्य रूप से करेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सभा सम्मोहन मन्त्र]

कालू मुंह धोई करूं सलाम । मेरे नैनन सुरमा बसे, जो निरखे सो पायन पड़े । दुहाई गौसुल आजम दस्तगीर को छू ।

साधक किसी भी शुभ मुहूर्त में गेहूँ के सवा लाख दानों को उक्त मन्त्र से एक-एक करके अभिमन्त्रित कर ले। तत्पश्चात् साधक गेहूँ के आधे दानों को पिसवाकर उस आटे का हलवा बनाकर गौसुल आजम को भोग लगाए। इसके बाद साधक स्वयं खाकर काजल कोसात अथवा इक्कीस बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने नेत्रों में लगा ले। ऐसा कर साधक जिस किसी भी स्थान अथवा सभी में जाएगा, लोग साधक पर मोहित हो जाएंगे।

[लौंग मोहन मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का । कामरू देश कामाख्या देवी । जहां बसे इस्माईल जोगी । इस्माईल जोगी ने दीन्हीं लौंग । एक लौंग राती माती । दूजी लौंग दिखावे राती । तीजी लौंग रहे ठहराय । चौथी लौंग मिलावे आय । नहीं आवे तो कुआं बावड़ी घाट फिरे । रंडी कुआं बावड़ी पे छिटक मरे । ॐ नमो आदेश गुरु का । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति । फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक को उक्त मन्त्र ग्रहण के समय ही सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके लिए साधक किसी भी ग्रहण काल में मिट्टी का चौमुखा दीप और चार लौंग लेकर किसी पवित्र स्थान पर बैठे।

साधक दीप में चमेली का तेल डालकर चार बत्तियों को भिगोकर जलाए। दीप इस तरह रखे कि हर एक बत्ती का मुख हर एक दिशा में हो। तत्पश्चात् साधक बत्ती की ओर लौंग रखे और ग्रहण प्रारम्भ होने से अन्त होने तक उक्त मन्त्र का जप करे। ग्रहण समाप्त होने के बाद चारों लौंग यंत्र में भर ले।

तत्पश्चात् साधक को जब कभी भी इसका उपयोग करना हो तो वह चार ताजा लौंग लेकर सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करने के पश्चात् जिस किसी व्यक्ति को खिला देगा और यंत्र का स्पर्श करा देगा, तो वह साधक के प्रति मोहित हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[लौंग मोहन मन्त्र-२]

ॐ जल की योगिनी पालै कलका नाम । जिस पै भेजूं तिस पै लाग । सोते सुख ना बैठे सुख । फिर फिर देखो हमारा मुख । मेरी बांधी जो छूटे तो बाबा नाहरसिंह की जटा छूटे ।

किसी भी सोमवार को साधक चार लौंग किसी भी वृक्ष के पत्ते में लपेटकर मुख में रख ले। तत्पश्चात् किसी भी नदी अथवासरोवर में डुबकी लगाए। साधक उक्त मन्त्र को एक ही बार की डुबकी में इक्कीस बार जप ले। उसके बाद साधक जल से बाहर निकलकर मुख की लौंग निकाल कर, धूप दिखाकर जिस किसी को भी खाने के लिए देगा वही साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

[फूल मोहन मन्त्र]

कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी फूल तोड़े लोना चमारी जो इस फूल को सूंघे बास तिस का मन रहे हमारे पास महल छोड़े घर छोड़े आंगन छोड़े लोक कुटुंब की लाज छोड़े दुहाई लोना चमारी की धन्वन्तरि की दुहाई फिरै ।

साधक उक्त मन्त्र का जप किसी भी शनिवार को शुरू करके इकतीस दिन तक प्रतिदिन एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। जप करते समय दीप, लोगान जलाए रखे। पास में मदिरा रखे। प्रयोगार्थ उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित फूल जिस किसी को भी दिया जायेगा। वह इस फूल को सूंघते ही साधक के वशीभूत हो जायेगा।

[पान मोहन मन्त्र-१]

श्री राम नाम रबेली अकनक बीरी ।
सुनिये नारी, बात हमारी ।
एक पान संग मंगाय ।
एक पान सेज सों लावै ।
एक पान मुख बुलावै ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमको छोड़ और को देखे ।

तो तेरा कलेजा, मुहम्मद वीर चक्खे ।

यदि साधक तीन पान के बीड़ों को इक्कीस-इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे व एक-एक करके जिस भी स्त्री को खिला दे तो स्त्री पहला पान खाकर साधक से मित्रता करेगी। दूसरा पान खाकर साधक के साथ देह सम्बन्ध स्थापित करेगी तथा तीसरा पान खाकर वह साधक के अतिरिक्त किसी और के बारे में सपने में भी नहीं सोचेगी।

[पान मोहन मन्त्र-२]

कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने दिया पान बीड़ा, पहला बीड़ा आती जाती, दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाई, 'अमुक' खाय पास चली आई दुहाई गुरु गोरखनाथ की ।

किसी भी स्त्री को अपने वश में करने का सरलतम तरीका है। सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। इसके पश्चात् तीन पान के बीड़ों को इक्कीस-इक्कीस बार अलग-अलग उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर वह बीड़े जिस स्त्री को एक-एक करके खिलायेगा वह स्त्री तन-मन-धन तीनों से उसके वश में हो जायेगी।

[पान मोहन मन्त्र-३]

हरे पान हरियाले पान । चिकनी सुपारी श्वेत खैर । दाहिने कर चूना मोही लेय पान । हाथ में दे हाथ रस ले, ये पेट दे, पेट रस ले । श्री नरसिंह वीर थारी शक्ति । मेरी भक्ति । फुरो मंत्र ईश्वर महादेव की वाचा ।

साधक पान के बीड़े अर्थात् लगे हुए पान को इक्कीस बार उक्त मन्त्रा से अभिमन्त्रित कर जिस किसी को भी खिला देगा वह साधक का आज्ञाकारी हो जाएगा और उसी के अनुकूल कार्य करेगा। मन्त्र का प्रयोग करने से पहले इस मन्त्र को एक हजार आठ बार जपकर उसका दशांश (एक सौ आठ बार) होम अवश्य करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[गुड़ मोहन मन्त्र]

ॐ नमो गुड़, गुड़ रे तूं गुड़, गुड़ तामड़ा मसान केलिकरंता जा, उसका देग उमा सब हर्ष हमारी आस खसम को देखे जलै बलै । हमको देवै साकि रूचलै चालि चालि रे कालिका के पूत जोगी जंगम और अवधूत । सोती होय जगाय लाव, न लावै तो माता कालिका की शय्या पर पांव धरै । शब्द सांचा पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक शनिवार को रात्रि में भैरव बाबा का पूजा अर्चना करके उक्त मन्त्र से गुड़ को इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके जिस किसी को भी खिला देगा, वही साधक के वशीभूत हों जाएगा।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ आकर्षण कर्म प्रयोग ❀

[पुरुष आकर्षण मन्त्र-१]

ॐ हुं ॐ हुं ह्रीं ।

जिस व्यक्ति को आकर्षित करना है उस व्यक्ति का ध्यान करके साधक ऊपर लिखे मन्त्र को लगातार पन्द्रह दिन तक दस हजार की संख्या में जपे। ऐसा नियमपूर्वक करने से साधक इच्छित व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

[पुरुष आकर्षण मन्त्र-२]

ओम् कं हां हूं ।

उक्त मन्त्र साधक को चन्द्र या सूर्यग्रहण के समय अथवा दीपावली की रात को ग्यारह हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर प्रयोग के समय यदि साधक किसी के पास किसी काम से जाते समय मन ही मन इस मन्त्र का निरन्तर जप करे तो वह व्यक्ति साधक से आकर्षित होकर साधक की इच्छानुसार कार्य करता है।

[पुरुष आकर्षण मन्त्र-३]

ॐ ह्रों ह्रीं ह्रां नमः ।

४४ साध्य व्यक्ति का ध्यान करके साधक उक्त मन्त्र को पन्द्रह दिन तक दस हजार बार जपे। ऐसा करके साधक उस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

[सर्वजन आकर्षण मन्त्र]

ॐ नमः ह्रीं ठं ठः स्वाहा ।

उक्त मन्त्र साधक को मंगलवार के दिन दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् चूहों के बिल की मिट्टी, बिनौला और सरसों के दानों को तीन बार मन्त्रोच्चारण कर अभिमन्त्रित कर ले। साधक अभिमन्त्रित की हुई इन वस्तुओं को जिस किसी पर भी डाल देगा वह साधक की ओर आकर्षित हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आकर्षण मन्त्र-१]

ॐ क्षों ह्रीं ह्रीं आं ह्रां स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को सात दिन तक प्रतिदिन लाल वस्त्र पहन कर तथा कुंकुम की माला धारण कर एक हजार बार जपे। यदि साधक उक्त मन्त्र का जप इस प्रकार करता है तो देव स्त्रियाँ भी साधक के पास आकर्षित होकर आ जाती हैं।

[आकर्षण मन्त्र-२]

ॐ नमो भगवते रुद्राय सदृष्टिं लींपना हर स्वाहा कंसासुर की दुहाई ।

सर्वप्रथम साधक मंगलवार के दिन दस हजार बार जपकर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर चूहों के बिल की मिट्टी, बिनौला और सरसों के दानों को तीन बार मन्त्र को बोलकर कर अभिमन्त्रित कर ले। इसके बाद अभिमन्त्रित की हुई उपरोक्त सामग्रीयों को जिस व्यक्ति पर फेंक देगा वह साधक की ओर आकर्षित हो उसके अधीन हो जाएगा।

[आकर्षण मन्त्र-३]

ॐ चामुंडे तरऊवतु अमुकायाकर्षय आकर्षय स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक प्रतिदिन एक हजार बार तीन संध्याओं में इक्कीस दिन तक जपकर सिद्ध कर ले। फिर उत्तर की ओर मुख करके लाल चंदन से लाल रंग के वस्त्र पर मन्त्र लिखकर विधि के अनुरूप पूजा करे और भूमि में दबा दे। तत्पश्चात् साधक इक्कीस दिनों तक प्रतिदिन चावल के धोवन से सींचते हुए इक्कीस बार उक्त मन्त्र को जप और अमुकाय की जगह जिस किसी को भी आकर्षित करना है उसके नाम का उच्चारण करे तो भले ही वह कितनी ही रूप वाली स्त्री हो, साधक के पास आकर्षित हो उसके पास आ जाएगी।

[आकर्षण मन्त्र-४]

ॐ नमो देव आदिरूपाय 'अमुकस्य' आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ।

सबसे पहले साधक को यह मन्त्र दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहिए। इसके बाद साधक गुरु पुष्य योग में गोरोचन में काले धतूरे का रस (अर्क) मिलाकर स्याही बनाये और श्वेत कनेर की लेखनी से भोजपत्र पर उस स्त्री या पुरुष का नाम लिखे जिसे वह आकर्षित करना चाहता है। तंत्र को भी भोजपत्र पर ही लिखे और अग्नि में जला दे। ऐसा करने से कोई कितनी भी दूर क्यों न हो उस व्यक्ति का आकर्षण निश्चय रूप से होगा।

स्त्री आकर्षण मन्त्र-१

ओम् ह्रीं नमः।

यह मन्त्र एक सप्ताह तक नित्य लाल वस्त्र तथा कुकुंम की माला पहन एक हजार बार जाप करने से साधारण स्त्री तो क्या स्वर्ग की देवांगना भी आकर्षित हो साधक के समीप खिंची चली आती है।

स्त्री आकर्षण महामन्त्र-२

ॐ नमो देव प्रादिरूपाय 'अमुकस्य' आकर्षणं कुरू-कुरू स्वाहा।

शनिवार के दिन इस मंत्र का १००० जाप करके पहले सिद्ध करे फिर भोजपत्र यह मंत्र लिखे, जिसको आर्कषण करना हो, उसका नाम 'अमुकस्य' की जगह लिखकर भोजन पत्र को असली शहद में डुबा दें तो ९ दिन में कामना पूरी होगी।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ वशीकरण कर्म प्रयोग ❀

[सर्ववशीकरण मन्त्र-१]

दुहाई, बाबा हनुमान की दुहाई, मरघट वाली की दुहाई, चौगान वाली की दुहाई, मुरदे खाने वाली की दुहाई, पांचों पीरों की दुहाई, सैयद बादशाह की दुहाई, लाइलाही लिल्लाह मोहम्मद उर रसूल लिल्लाह, दुहाई पवन की, दुहाई बावरी की, मीरा साहिबा की दुहाई, कालका माई की दुहाई, नगरकोट वाली की दुहाई, बाबा बालकनाथ की दुहाई, गुरु गोरखनाथ की दुहाई, अलखिया बाबा की दुहाई, भैरों काली की दुहाई, बंगाली बाबा की दुहाई, पहलवान की दुहाई ।

उक्त मन्त्र वशीकरण का बहुत प्रभावशाली मन्त्र है। साधक को इस मन्त्र को किसी भी वर्ष सूर्यग्रहण के मौके पर ग्रहण लगने से लेकर ग्रहण समाप्त होने तक निरन्तर जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर साधक जब कभी भी इस मन्त्र का प्रयोग करे तब किसी भी खाद्य पदार्थ को इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके किसी भी व्यक्ति को वह वस्तु खिला दे तो वही व्यक्ति साधक के वश में हो जाएगा और वह जीवन भर साधक के वशीभूत ही रहेगा। इस मन्त्र को सिद्ध करने में सावधानी रखना बहुत आवश्यक है। असावधानी से साधक की हानि भी हो सकती है।

[सर्ववशीकरण मन्त्र-२]

तेल से तेल राजा प्रजा पाऊं मेल पोखरी पानी मसकौ आ लगाय योनि मेरे पाय लगाय हाथ खड्ग बिराज गले फूलों की माला जानि बिजानै गोरख जानै मेरी गति को कहै न कोय हाथ पछानों मुख धोऊं सुमिरौ निरंजन कर देव हनुमंत यती हमारी पति राखे मोहिनी दोहिनी दोनों बहिनी आवौं मोहिनी रावल चले मुख बोलै तो जीभ मोहूं आस मोहूं पास मोहूं सब संसारे मोहूं, निसरूं बंदी देह ललाट, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक होली अथवा दीपवली की रात को सफेद तिलों का तेल उलटी घानी चलवाकर निकलवा ले। उसके बाद तेल को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाए। ऐसा करने से साधक सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाएगा।

[सर्ववशीकरण मन्त्र-३]

ॐ शंखाहूली वन में फूली ।
बैठी करे सिंगार ।
राजा मोहे प्रजा मोहे ।
सबने करे सिंगार ।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक किसी भी शनिवार की रात्रि को अक्षत, धूप, मौली, मिष्ठान्न लेकर जंगल में जाकर शंखाहुली को आमन्त्रित करके वापस घर आ जाये। तत्पश्चात् दूसरे दिन प्रात: नहाकर सब सामग्री शंखाहुली को देकर उक्त मन्त्र को एक सौ ग्याहर बार जप करके उस बूटी को जड़ के साथ उखाड़ कर ले आए तथा घर आकर मन्त्र को एक हजार एक सौ बार जप और धूप आदि जलाकर सिद्ध कर ले। फिर जब कभी भी उपयोग करना हो तो जड़ को जेब में रख ले। ऐसा करने से साधक जहाँ कहीं भी जाएगा, स्त्री-पुरुष साधक के वश में आ जाएंगे।

[सर्ववशीकरण मन्त्र-४]

ॐ तालतुं वरी दह दह दरैमाल भाल उनं अं हुं हुं हुं हें हें काल कराली कोट काटिया अं ठः ठः ।

कोंचनी के पुष्प तथा राजहंस पक्षी के पंख को शनिवार को काली गाय के दूध से खीर बनाकर मन्त्र का उच्चारण करते हुए साधक उस खीर से एक सौ आठ बार आग में आहुति दे। ऐसा करते समय साधक सर्वजन वशीकरण का भाव अपने मस्तिष्क में रखे। यदि साधक यह मन्त्र इस प्रकार करता है तो निश्चय ही सर्वजन वशीकरण होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्ववशीकरण मन्त्र-५]

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपुरुष सर्वस्त्री हृदयहारिणी मम वश्यं कुरु वषट् ह्रीं ।

यह मन्त्रानुष्ठान साधक किसी भी महीने की शुक्लपक्ष की चन्द्रमास से चतुर्दशी तक जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् किसी भी व्यक्ति के समक्ष जाकर इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जपे तो वह स्त्री या पुरुष साधक के वश में हो जाता है।

[सर्ववशीकरण मन्त्र-६]

ॐ चिटि चांडाली महा चांडाली अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

साधक यह मन्त्रानुष्ठान सात दिनों तक दिन-रात जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद प्रयोग करते समय बेल के कांटे की लेखनी से इस मन्त्र को तालपत्र पर लिखे तथा तालपात्र को दूध में पकाकर कीचड़ में तीन दिन के लिए गाड़ दे। तीन दिन पूरा होने के बाद तालपात्र को निकाल ले। फिर दुर्गा पूजन के समारोह स्थल के मण्डप द्वार पर इस पात्र को दबा दे। इस मन्त्रानुष्ठान को विधिवत् करने से साधक सर्वजन वशीकरण की योग्यता हासिल कर लेता है।

[सर्ववशीकरण मन्त्र-७]

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय साधय स्वाहा ।

साधक को इस मन्त्रानुष्ठान को सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण में दस हजार बार जपकर एक सौ आठ बार मन्त्र की आहुति देकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर प्रयोग करते समय मन्त्र को इक्कीस बार जपकर इक्कीस बार ही मुख धो ले। साधक उस समय 'सवान्' की जगह उस स्त्री या पुरुष का नाम ले जिसे उसे वश में करना है। यदि साधक ऐसा करता है तो स्त्री या पुरुष उसके वश में आ जाएगा।

[पति वशीकरण मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का सिंदूर कीमया सिंदूर नाम तेरी पत्ती कामाख्या सिर पर तेरी उत्पत्ती सिंदूर पढ़ि अमुकी लगावे बिंदी लगावे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो वश अमुक होके रहे निर्बुद्धी महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति न वशी हो तो कामरू कामाख्या की दुहाई आदेश हाड़ी दासी चंडी का अमुक का मन लाओ निकाल नहीं तो महादेव पिता का वाम पाद जाय लागे ।

उक्त मन्त्र को स्त्री को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चहिए। तत्पश्चात् प्रयोग काल में सरसों के तेल में मालती के पुष्प डाले। कुछ दिनों के बाद जब पुष्प सड़ जाएं तब उन पुष्पों को एक सौ आठ बार मन्त्र का उच्चारण कर अभिमन्त्रित कर योनि पर लेप करके पति के साथ सम्भोग करे, तो उस स्त्री का पति जीवन भर के लिए उसके वशीभूत हो जाता है।

[पति वशीकरण मन्त्र-२]

ॐ काममालिनी ठः ठः स्वाहा ।

स्त्री को उक्त मन्त्र एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय मछली के पित्त में गोरोचन मिलाकर सात बार अभिमन्त्रित कर ललाट पर लगाए तो उस स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

[पति वशीकरण मन्त्र-३]

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं थिरिं ठः ठः पतिं वशं करोमि ।

स्त्री को यह मन्त्र दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग करने के लिए शुक्लपक्षीय प्रतिपदा तिथि को गौरैया के मांस को मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके उसमें से थोड़ा-सा मांस किसी भी रूप में पति को खिला दे तो उस स्त्री का पति उसका दास हो जाता है।

[पति वशीकरण मन्त्र-४]

ॐ नमो महायक्षिणी मम पति वश्यमानय कुरु कुरु स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को स्त्री एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् उपयोग करने के लिए अनार के पंचांग (पुष्प, फल, पत्ते, छाल व जड़) लेकर सफेद सरसों के साथ पीस ले और सात बार अभिमन्त्रित करे तथा अपनी योनि (भग) पर लेप करके पति के साथ संभोग करे, तो उस स्त्री का पति सदैव के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए उसके वश में रहता है। इसी प्रकार गरुवार को केले के रस में सिन्दूर और योनि का रक्त मिलाकर सात बार अभिमन्त्रित कर माथे पर तिलक लगाने से भी पति स्त्री के वशीभूत होता है।

[पति वशीकरण मन्त्र-५]

ॐ ह्रीं घ्रीं क्रीं ठः ठः ।

यदि स्त्री प्रतिपदा तिथि को परेवा नामक पक्षी का मांस मन्त्रोच्चारण से अभिमन्त्रित करके जरा-सा मांस अपने पति को किसी भी रूप में खिला दे तो पति उस स्त्री के वशीभूत हो जाता है।

[सिन्दूर सम्मोहन मन्त्र-१]

ॐ हथेली तो हनुमंत बसे भैरू बसे कपाल नारसिंह की मोहिनी मोहे सब संसार मोह मोह हनुमंता वीर सब वीरन में तेरा सीर सबकी दृष्टि बांध के मोहे तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिंदूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया कौन लाया अंजनि पुत्र हनुमंत लाया गौरी पुत्र गणेश लाया गणेश ल्याय भैरू न दीन्हा कालां गोरा तोतला तीनों बसे कपाल बिंदी तेल सिंदूर की दुश्मन गया पताल दुहाई कीमिया सिंदूर की दूजे को देख्यां बले जले हमें देखतां शीतल हो जाए हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को ।

उक्त मन्त्र किसी भी नोचंदी जुम्मेरात से चालीस दिन तक नित्य दो हजार दो बार जपे। मन्त्र सिद्ध होने पर कामिया सिन्दूर सुवासित तेल में मिलाकर तैयार कर इस मन्त्र से इक्यावन बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाकर साधक जिस किसी के सामने जाएगा वही वशीभूत हो जाएगा।

[सिन्दूर सम्मोहन मन्त्र-२]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
सिंदूर की माया ।
सिंदूर नाम तेरी पत्ती ।
कामाख्या सिर पर तेरी उत्पत्ति ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिंदूर पढ़ि मैं लगाऊं बिंदी ।
वश अमुक होके रहे निर्बुद्धी ।
महादेव की शक्ति ।
गुरु की भक्ति ।
न वशी हो तो कामरू कामाख्या की दुहाई ।
आदेश हाड़ी दासी चंडी का ।
अमुक का मन लाओ निकाल ।
नहीं तो महादेव पिता का वाम पग जाये लाग ।
आदेश ! आदेश !! आदेश !!!

उक्त मन्त्र चाँदी की एक डिब्बी में सिन्दूर रखकर तथा डिब्बी को हथेली पर रखकर एक सौ आठ बार जपकर अभिमंत्रि कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग करते समय मन्त्र बोलकर फूं मारे। इसकी माथ पर तिलक लगाकर साधक जिसे चाहे वश में कर सकता है। यह प्रयोग औरत या आदमी कोई भी कर सकता है।

[चमत्कारी वशीकरण मन्त्र-१]

अल्लाह बीच हथेली, मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार । मजे करे मार मार, उसे बाएं कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़े वज्र का बान, बहक्के लाइलाह अल्लाह, है मुहम्मद मेरा रसूललिल्लाह ।

यह मन्त्रानुष्ठान रविवार से आरम्भ कर साधक अगले शनिवार तक रोज एक हजार एक सौ बार निश्चित समय पर ही जपे। जपकाल में लोबार और अगरबत्ती जलाए तथा निकट में मिठाई रखे। तत्पश्चात् प्रयोग के समय किसी भी खाने की चीज पर मन्त्र को सात बार पढ़कर खिला दे तो खाने वाला वशीभूत हो जाएगा। यह एक चमत्कारी मन्त्र है।

[चमत्कारी वशीकरण मन्त्र-२]

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अलमोरि हो वल्लाह ।

उक्त मन्त्र इस्लामी चमत्कारी शाबर मन्त्र है। इसे किसी भी जुम्मे अर्थात् शुक्रवार से आरम्भ कर चालीस दिन तक रोज एक माला जपने से यह सिद्धि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जाएगा। सिद्ध होने के बाद प्रयोगकाल में किसी भी खाद्य वस्तु को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी को खिलाया जाएगा, वह साधक के वश में हो जाता है।

[वशीकरण मन्त्र-१]

मोहकम मोहकम कहां से आया, यह किसका संदेश लाया, किसको रोली, किसको चंदन, किसको फूल बतासा अंजन, काल को भैरू, जोगिनी छोडूं, काल को मोडू, मुख को जोडू, सत्य वचन आदेश गुरु गोरखनाथ का ।

साधक अपनी राशि के नग की अंगूठी लेकर पीले कपड़े पहनकर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके पीले ही आसन पर बैठे तथा अंगूठी को सामने रखकर एकटक उसे देखता हुआ मन्त्र की तीन माला जपे। ऐसा पाँच दिन करे। पाँच दिन बाद बाएं हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर ले। तत्पश्चात् एक महीने बाद काजल से जिस स्त्री-पुरुष का नाम लिखकर वह अंगूठी उस पर रखेगा तो वह स्त्री या पुरुष साधक के वशीभूत होगा।

[वशीकरण मन्त्र-२]

ॐ ह्रीं ह्रीं कालि कालि स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक तिराहे पर बैठकर एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय में एक सौ आठ बार जपकर इच्छानुसार स्त्री अथवा पुरुष को फूंक मारेगा वह वश में हो जाएगा। चाहे वह कितना भी कठोर हृदय का क्यों न हो।

[वशीकरण मन्त्र-३]

ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रिलोक नाथाय । ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।

यह मन्त्रानुष्ठान किसी भी रविवार को प्रारम्भ कर गुग्गुल, धूप, दीप जलाकर इक्कीस हजार बार जपकर सिद्ध करे। प्रयोग के समय साधक मन्त्र को एक सौ आठ बार जपकर लौंग अभिमन्त्रित कर जिसे खिला देगा वही वश में हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[वशीकरण मन्त्र-४]

ॐ नमो चामुंड जय जय वश्यमानय जय जय सर्वसत्वा नमः स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक एक लाख बार जप कर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् रविवार के दिन गुलाब के पुष्प पर सात बार मन्त्र पढ़कर जिसे भी देगा वही वशीभूत हो जाता है।

[वशीकरण मन्त्र-५]

ॐ सर्व लोक वशकराय कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्रानुष्ठान एक सौ आठ बार जपकर साधक सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् काली गाय के दूध में लटजीरा के बीज पीसकर तिलक लगाए तो देखने वाला वश में हो जाएगा। हरताल, कुंकुम, मैनसिल, नागरमोथा, कूट को अनामिका उंगली के रक्त में पीसकर सात बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से देखने वाला साधक के वश में हो जाता है। यद्यपि वच, कूठ, ब्रह्मदंडी या छाया में सुखाईगई सहदेवी को पीसकर जिस किसी को भी पान में लिखा दिया जाएगा वही व्यक्ति साधक के वश हो जाएगा।

[भूतनाथ वशीकरण मन्त्र]

ॐ नमो भूतनाथाय समस्त भुवन भूतानि साधय हुम् ।

साधक को उक्त मन्त्र को एक लाख बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर साधक जिस किसी को भी वश में करना चाहता है, उसकी छवि को ध्यान में रखकर एक सौ आठ बार मन्त्र जपे तो इच्छित व्यक्ति को वश में कर सकता है।

[त्रैलोक्य वशीकरण मन्त्र]

ॐ नमो भगवती मातंगेश्वरी सर्वमन रंजिनी सर्वेषां महातगे कुवरी के नंद नंद जिवहे जिवहे सर्व जगत वश्यमानय स्वाहा ।

सधक उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् चन्द्रग्रहण के समय श्वेत विष्णुक्रांता की जड़ ले आए और उसे तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आँखों में काजल की तरह लगा ले तो सबका वशीकरण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है। यदि साधक श्वेत घुंघुची शुक्लपक्ष की त्रयोदशी तिथि को लाकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके किसी भी व्यक्ति को खिला दे तो वह साधक के वश में हो जाता है।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१]

बड़ पीपल का थान जहाँ बैठा अजामील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन 'अमुक' को जा रान जो राने तो धोबी की नाद चमार की व्राल कुलाल की माटी पड़े जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं अपने काज को मेरा काम न होगा तो आनसी में तेरा दामनगीर रहूंगा ।

उक्त मन्त्र इस्लामी वशीकरण तंत्रशास्त्र का प्रभावशाली मन्त्र है। इस मन्त्र का दुरुपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। साधक इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए किसी भी महीने की कृष्णपक्ष के शनिवार से जपना शुरू करे। यह प्रक्रिया इक्कीस दिन की है। साधक जप को आधी रात में ही करे। साधक जपकाल में राई के इक्कीस दाने हाथ में लेकर उन्हें इक्कीस ही बार अभिमन्त्रित करके साध्य स्त्री का नाम लेकर आग में डाल दे तो परिणाम स्वरूप कितनी भी जिद्दी स्त्री हो, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-२]

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले योनि भोगनिपतिन सर्वभग संकरी भाग रूपे नित्य क्लैं भागस्वरूपे सर्वभागिनी मे वशमानय वरदेरे सुरेते भगलिंल्कनेटकीं न द्रवे ल्केदय द्रावय आमोघे भग विधे क्षुभ क्षभय सर्व सत्वा भगेश्वरि ऐं क्लें जं ब्लूं मै मोव्लू हे हे ल्किन्ने सर्वाणि भगनि तस्मै स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ मुहूर्त्त एवं नक्षत्र में जप कर सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्धि के उपरान्त साधक जिस स्त्री को एकटक देखकर मन्त्र जपेगा वही स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-३]

ॐ चिमि चिमि स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग के लिए साधक लाख की स्याही से जिस किसी भी स्त्री की कलाई पर यह मन्त्र लिखेगा, वही स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-४]

कामोऽनंग पुष्पशरः कंदर्पो मीन केतनः । श्री विष्णु तन्यो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो ।।

सबसे पहले साधक रक्त चन्दन, कस्तूरी, गोरोचन, कुंकुम मिलकर स्याही बना ले, उसके बाद चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर कामराज का यंत्र बनाकर काष्ठ अर्थात् लकड़ी पर राई से कामदेव का चित्र बनाए और उसके हृदय में कामराज यंत्र स्थापित कर दे। तत्पश्चात् साधक धूप-दीपक दिखकर फल-पुष्प, नैवेद्य निवेदन कर इक्कीस दिनों तक रात में उक्त मन्त्र से कामदेव की आराधना करे तो कोई भी स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी। यह बल शक्तिशाली वशीकरण मन्त्र है।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-५]

ॐ नमो कालभैरव काली रात काला आया आधीरात चले कतार बांधूं तू बावन वीर पर नारी सो राखै सीर छाती धरिके ताको लाओ सोती होय जगा के लाओ शब्द सांचा पिंड काचा फुरं मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का ।

साधक उक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर ले। फिर जिस वर्ष भी होली अथवा दीपावली रविवार को पड़े तब लाल एरण्ड के वृक्ष की टहनी वस्त्रहीन होकर एक झटके में उखाड़ ले। उखाड़ने की प्रकिया बाएं हाथ से ही करे और मन्त्र जपता रहे। तत्पश्चात् साधक अपने घर वापस आ जाए और टहनी के छोटे-छोटे भाग कर ले। फिर उपयोग करते समय इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर साधक जिस किसी भी स्त्री को इसका स्पर्श कराएगा वही स्त्री जीवन भर के लिए साधक के वश में हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-६]

ॐ नमो धूली धूलेश्वरी मातु परमेश्वरी चलंती जय जकार इनारन चोप भरे छार छारते में हटे देता घर बार मरे तो मसान लोटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवं तो पांव लोटे वचन बांधौं अमुकी को धाई लाव मातु धूलेश्वरी फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ठः ठः स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक सात शनिवार तक रात्रि में एक सौ चौवालीस बार जपक सिद्ध कर ले। फिर सातवां शनिवार पूरा होने के बाद अर्थात् रविवार के दिन साधक किसी स्त्री की चिता की रखा ले आए और उसमें चौराहे की मिट्टी मिलाकर एक सौ चौवालीस बार अभिमन्त्रित कर ले। फिर साधक यह राख जिस किसी भी स्त्री पर डाल देगा वही स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-७]

ॐ नमः ह्रीं ह्रीं क्रां विकरालिनी ह्रीं क्षीं फट् स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को प्रेतभूमि अर्थात् श्मशान में सात दिन तक प्रतिदि एक सौ आठ बार जपे तथा माँ काली की आराधना कर काले धतूरे का फल ष्य नक्षत्र में, फूल भरणी नक्षत्र में, पत्ते विशाखा नक्षत्र में, जड़ हस्त नक्षत्र ले आए तथा इसी वृक्ष की जड़ कृष्णपक्ष की संक्रान्ति में लाकर कपूर, गोरोच, कुंकुम के साथ पीसकर माथे पर तिलक लगाकर जिस किसी भी स्त्री के सम जाएगा, चाहे वह स्त्री कैसे भी स्वभाव व चरित्र वाली हो, शीघ्र ही साधक के वशीभूत हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-८]

ॐ चामुंडे जय जय वश्यमानय जय जय सर्वसत्वान्नमः स्वाहा ।

साधक को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्च् साधक रविवार अथवा मंगलवार के दिन पुष्प को मन्त्र से सात बार अभिम्त्रत कर जिस भी स्त्री को सुंघा देगा, वही स्त्री साधक के वश में हो जाएगं

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-९]

ओम् नमः कामाख्या देवी अमुकीं मे वशंकरी स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद यक चिता की राख और ब्रह्मण्डी बूटी को अभिमन्त्रित करके जिस किसी भी स्पर फेंकेगा वह स्त्री हमेशा के लिए उसके वशीभूत हो जाएगी। इसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतिरिक्त नील गाय और मानव दंत घिसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर माथे पर तिलक धारण करने से भी स्त्री जीवन भर के लिए साधक के वश में हो जाता है।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१०]

ॐ कुंभनी स्वाहा ।

इस मन्त्रानुष्ठान को साधक एक हजार बार जप कर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक गुलाब के पुष्प को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करजिस किसी स्त्री को यह पुष्प सुंघायेगा, वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जायेगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-११]

ॐ सत्य नाम आदेश गुरु का लौंग लौंग मेरा भाई इनहीलौंग ने शक्ति चलाई, पहली लौंग राती माती, दूसरी लौंग जीवन माती, तीसरी लौंग अंग मरोड़े, चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े, चारों लौंग जो मेरी खाय फलाना के पास सों फलाना कने आ जाए । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक उपरोक्त मन्त्र को सूर्य या चन्द्रग्रहण अथवा दीपावली को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक चार फूलदार लौंग हाथ पर रखकर नीचे लोबान जलाकर इस मन्त्र को ग्यारह बार लौंगों पर फूंकर, पीसकर जिस किसी स्त्री को खिलाएगा वह स्त्री सदा के लिए साधक के वश में हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१२]

ॐ नमो भगवति चामुंडे महा हृदयकंपिन स्वाहा ।

साधक पान के बीड़े अर्थात् लगे हुए पान पर उक्त मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर जिस किसी भी स्त्री को यह बीड़ा खिला देगा, वहीं स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१३]

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं कर पिशाच अमुकीं कामाह्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्ने मम रूपे नखै विदारय विदारय द्रावय द्रावय रद महेन बंधय बंधय श्री फट् ।

साधक को उक्त मन्त्र का जप उत्तराभिमुख तथा वस्त्रहीन होकर करना चाहिए। मन्त्र जपकाल में कामुकता का पूरा भाव साधक के मन में होना चाहिए। यह साधना पंद्रह दिन की है। मन्त्र का जप सूर्योदय से पहले तक समाप्त होना चाहिए अर्थात् इस मन्त्र को करने के लिए रात का समय निर्धारित कर ले। एक बार में एक माला अवश्य जपना चाहिए। साधक मन्त्र जप के समय जिस स्त्री को वश में करना चाहता है उसक नाम 'अमुकी' के स्थान पर ले। यदि साधक इस प्रकार की क्रिया करता है तो वह मनचाही स्त्री को अपने वश में कर सकता है।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१४]

पीर मैं नाथ प्रीत मैं माथ जिसे खिलाऊं वह मेरे साथ फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र को साधक सूर्यग्रहण के समय नदी पर जाकर नाभि तक जल में खड़े होकर सात बार बोलकर खड़ी सुपारी निगल ले। फिर सबेरे मल विसर्जन के समय यह सुपारी निकल जाए तो इस सुपारी को उठाकर साफ पानी सें धो ले।

उसके बाद दूध से भी धो ले। इस क्रिया को सात-सात बार करे। तत्पश्चात् सात बार मन्त्र पढ़कर धूनी देकर टुकड़े कर ले। फिर साधक इसे पान के साथ जिस किसी भी स्त्री को खिला देगा, वही स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

[स्त्री वशीकरण मन्त्र-१५]

ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणीं अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक चन्द्र अथवा सूर्यग्रहण के समय दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

मन्त्र सिद्ध होने के बाद साधक रविवार को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित भोजन स्वयं करे। भोजन करते समय साधक को जिस किसी को अपने वशीभूत करना है उसका ध्यान करे। वह स्त्री अवश्य ही साधक के वश में हो जाएगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[राजवशीकरण मन्त्र-१]

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद साधक प्रयोग के लिए तुलसी की पत्ती, कपूर और चन्दन को गाय के दूध में पीस ले और उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ललाट पर तिलक लगाकर राजा के पास जाए तो राजा साधक के वशीभूत हो जाएगा और साधक जैसा चाहेगा राजा उसकी मर्जी के अनुरूप वैसा ही काम करेगा।

[राजवशीकरण मन्त्र-२]

ॐ क्ष्रां क्ष्रं क्ष्रः सौं हं हं सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ काल में जपकर सिद्ध कर ले। फिर प्रयोग केरते समय मन्त्र से भोजन को अभिमन्त्रित कर राजा का नाम लेकर भोजन करे। ऐसा करने से राजा साधक के वशीभूत हो जाता है।

[स्वामी वशीकरण मन्त्र]

ॐ छं छुं छुं छां छां छः ।

सर्वप्रथम साधक सोमवार की अमावस्या को खोदी हुई कुश घास का आसन बनाए। उसके बाद सूर्यग्रहण के समय में नदी तट पर अंजनी वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से स्वामी वशीकरण होता है। साधक मन्त्र जपते हुए ध्यान रखे कि वह मन्त्र जपने के लिए केवल गंधोली फल की गुठलियों से बनी माला का ही प्रयोग करे। तभी यह सिद्धि सम्भव है अन्यथा यह मन्त्र सिद्धि सम्भव नहीं है।

[वेश्या वशीकरण मन्त्र]

ॐ कनक कामिनी आढा वाढा शूलमलाका पाजल पंचाल ॐ यं यं यः यः ।

साधक बिल्व (बेल) वृक्ष के नीचे काले मृगचर्म के आसन पर श्वेत काचली के पुष्प और बिल्वपत्र से उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन करे और हवन करते समय वेश्या की छवि को साधक ध्यान में रखे। यदि साधक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस वेश्या का नाम जानता हो तो उसके नाम का भी उच्चारण करे तो वह वेश्या अवश्य ही साधक की दीवानी बन जाएगी।

[प्रेत वशीकरण मन्त्र]

ॐ साल सलीला मोसल ववाई काग पठंता धाई आई ॐ लं लं लं ठः ठः ।

साधक सबसे पहले उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। फिर साधक वसन्त ऋतु की शनिवार की रात्रि को बारह बजे वस्त्रहीन होकर बबूल के वृक्ष के तले आक की लकड़ी जलाकर काले तिल और काले उड़द की आहुति देते हुए हवन करे। हवन करते समय उक्त मन्त्रोच्चारण करता है। यदि साधक ऐसा करता है तो प्रेत साधक के सामने आ जाए तो भी साधक बिल्कुल भयभीत न हो अपितु अपने हाथ को थोड़ा चीरकर सात बूँदें रक्त की टपका दे। ऐसा करने से प्रेत साधक के वश में हो जाएगा।

[शत्रु वशीकरण मन्त्र]

ॐ नमो भगवते 'अमुकस्य' बुद्धि स्तंभन शत्रु फट् स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को वसन्त ऋतु की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को पड़ने वाले शनिवार को श्मशान में जाकर शव की छाती पर काले कपड़े पहनकर स्फटिक माला से ग्यारह हजार बार जप करके सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक धतूरे के पके पत्ते और पीसी सरसों से एक सौ आठ बार हवन करे। 'अमुकस्य' की जगह साधक अपने शत्रु का नाम बाले। यदि साधक यह क्रिया विधिवत् सम्पूर्ण करता है तो उसे शत्रु की बुद्धि पलट जाएगी और शत्रु साधक के वश में हो जाएगा।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ स्तम्भन कर्म प्रयोग ❀

[जल स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो भगवते जल स्तंभय स्तंभय ठः ठः स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र से पद्माक्ष के चूर्ण को सात बार अभिमन्त्रित करके जल में डाल दे तब भी जल का स्तम्भन हो जाता है।

[जल स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तंभय ठः ठः ठः ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के लिए केकड़े के पैर, दाँत और रक्त कछुए का दिल, सूंस की चर्बी और भिलावे के तेल को आग में पकाकर एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साधक अपने शरीर पर लेप ले तो जल का स्तम्भन होता है अर्थात् जल में साधक का शरीर भीगता नहीं है। यदि साधक तोरई और लिसोड़े के बीजों तथा फलों को जल में पीसकर उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके बहते हुए जल में डाल दे, तो भी जल का स्तम्भन हो जाता है। यदि जल में नमक डाल दिया जाए तो जल पुनः बहने लगता है।

[जल स्तम्भन मन्त्र-३]

ॐ नमो काला भैरों, कालिका का पूत ।
पगों खड़ाऊं हाथ, गुरुजी चलौ मन प्रभात ।
आक तू अगुरूं भरा तेरो न्यौती ।
मैं जहाँ करूं पूजा दिन सात ।
जो तू मन चीता कार्य कर दे मोहि ।
कुंकुम कस्तूरी केसर से पूजा करूं तुम्हारी ।
मोर मन चीत्यौ । मेरा कार्य करहु ।
गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरै ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम साधक पुष्य नक्षत्र काल में रविवार से पहले अर्थात् शनिवार की सन्ध्या को सफेद आक (मदार) को आमन्त्रित करके आए। तत्पश्चात् रविवार को सुबह उसकी जड़ उखाड़ लाए। अब साधक उस जड़ की खड़ाऊ बनाकर उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर पहन कर जल पर चले तो साधक जल में डूबेगा नहीं। बल्कि ऐसे चलेगा जैसे वह थल मार्ग पर चल रहा हो।

[जल स्तम्भन मन्त्र-४]

ॐ थं थं थं थापि थाहि ।

यदि साधक दुलारा नामक पक्षी का पंख लाकर एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर बहते हुए जल में डाल दे तो जल का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् जल का बहाव रूक जाता है।

[जल स्तम्भन मन्त्र-५]

ॐ अस्फोटपति धारा उल्मलूका क्रां क्रां क्रां ।

साधक रविवार को खटकुली पक्षी का पंख लाकर उसे उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर अपनी क़ांख में दबाकर नदी के ठीक बीच में खड़ा हो जाए तो भी जल का स्तम्भन हो जाता है।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-१]

जल बांधौं थल बांधौं आगी की लपट बांधौं दुहाई हनुमान की, दुहाई महावीर की, दुहाई लोना चमारिन की ।

साधक पहले उक्त मन्त्र को दीपावली की रात में एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक यदि कहीं आग लगी हो तो उक्त मन्त्र को बोलते हुए अग्नि की परिक्रमा करे। ऐसा करने से अग्नि शान्त हो जाएगी।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ ह्रीं महिष मर्दिनी लह लह लह कठ कठ स्तंभन स्तंभन अग्नि स्वाहा ।

साधक उक्त सिद्ध मन्त्र को खैर की लकड़ी हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जपकर अग्नि में जाए तो अग्नि का स्तम्भन होता है अर्थात् साधक अग्नि में जलता नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-३]

ॐ नमो अग्नये ज्वालामुखी सहाय, शंकर सहाय, अग्नि शीतल हो जाय, पार्वती जी की दोहाई, लोना चमारिन की दोहाई, गुरु गोरखनाथ की दोहाई, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक उक्त मन्त्र को शिशिर ऋतु में बृहस्पतिवार को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक आवश्यकता पड़ने पर स्नान करके शुद्धतापूर्वक एक लोटा कुएं का जल इस प्रकार खींचे कि लोटे और रस्सी का स्पर्श धरती से न हो। फिर लोटे को हाथ में लेकर साधक मन्त्र पढ़ते हुए लोटे के जल के छींटे अग्नि पर दे। ऐसा करने से अग्नि शान्त हो जाएगी।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-४]

ॐ नमः अग्निरूपाय मे देहि स्तंभय कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक मेढक की चर्बी को उक्त सिद्ध मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लेप ले तो साधक पर अग्नि का जरा भी असर नहीं होता है।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-५]

ॐ अहो कुंभकर्ण महाराक्षस कैकसी गर्भ संभूतं परसैन्य भंजन महारुद्रो भगवान रुद्र आज्ञा अग्नि स्तंभय ठः ठः ।

साधक शिशिर ऋतु में दो लाख बार मन्त्र का जप कर सिद्ध कर ले। प्रयोगकाल में जल को एक सौ बार अभिमन्त्रित कर इस जल की छींटे अग्नि पर डालने से जलती हुयी अग्नि भी बुझ जाएगी।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-६]

अपार बांधौं विज्ञान बांधौं घोरा घाट अरू कोटी वैसंदर बांधौं हस्त हमारे भाई आनाहि देखे झझके मोंहि देखे बुझाइ हनुमंत बांधौं पानी हाइ जाइ अग्नि भवने के भवै जस मदमाती हाथी हो वैसंदर बांधौं नारायण भाषौ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र को विधिवत् दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक को जब कभी भी अग्नि का स्तम्भन करना हो तो उक्त मन्त्र से जल को सात बार अभिमन्त्रित कर छींटे मार दे। ऐसा करने से अग्नि शान्त हो जाएगी।

[अग्नि स्तम्भन मन्त्र-७]

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक दीपावली की रात में उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार सोंठ, काली मिर्च, पीपल को अभिमन्त्रित कर चबाने के पश्चात् यदि अपने मुँह में जलता हुआ कोयला भी रख ले तो भी उसका मुँह नहीं जलता। इसी प्रकार केले और ग्वारपाठे के रस को मिश्रित कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शरीर पर लेप लगाने से भी साधक का शरीर नहीं जलेगा।

[अग्नि शान्त करने का मन्त्र-८]

ॐ फः फः फः ।

साधक उक्त मन्त्र को शिशिर ऋतु में एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक बाज पक्षी की चोंच को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अग्नि में डाल दे तो अग्नि शान्त हो जाती है।

[अग्नि शान्त करने का मन्त्र-९]

ॐ उत्तरस्यां दिग्वभोग मारीचौनाका राक्षसः तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतः वह्निः स्तंभय स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम इस मन्त्र को पहले मन्त्रानुसार ही दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर साधक गरम जल को अपने अंजुली में भरकर अग्नि के बीच में डाल दे तो अग्नि शान्त हो जाती है।

[अग्नि शान्त करने का मन्त्र-१०]

ॐ नमो कोरा करिया, जल सों भरिया, लै गोरा के सिर पर धरिया, ईश्वर वाले गौर नहाय, जलती अग्नि शीतल हो जाय, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को शीत ऋतु में विधिवत् एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक को जब कभी भी इसका प्रयोग करना हो तो मिट्टी के कोरे कलश के जल से स्नान करके उसी कलश के जल को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर छींटे मारे। जल के छींटे जितनी अधिक दूर तक जाएंगे उतनी दूर की अग्नि शांत हो जाएगी। अग्नि शान्त होने के बाद साधक इक्कीस ब्राह्मणों को भोज कराए और उक्त मन्त्र की एक सौ आठ आहुति देकर हवन करे।

[मुख स्तम्भन मन्त्र]

ॐ ह्रीं रक्षके चामुंडे कुरु कुरु अमुक मुखं स्तंभय स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को नदी तट के एकान्त स्थान पर एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक पलाश की जड़ को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर तालु में रखकर अपने शत्रु के सामने जाए तो शत्रु का स्तम्भन होता है। इसी प्रकार साधक अर्जुन वृक्ष की छाल और जड़ को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर अपने मुँह में रखकर जाए तब शत्रु का मुख स्तम्भन होता है अर्थात् साधक के शत्रु की बोलती बन्द हो जाएगी।

[मेघ स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ थं थ थ थाहि थाहिः ।

साधक शीत ऋतु के किसी भी शुभ बृहस्पतिवार को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक अग्नि और जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर भूमि में गाड़ दे तो बारिश नहीं होती अर्थात् मेघ का स्तम्भन हो जाता है।

[मेघ स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ मेघान् स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक श्मशान की भस्म में नई ईंट पर चार रेखाएं बराबर-बराबर खींचकर उस पर एक ईंट और रखकर उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर सूने स्थान पर उन ईंटों को दबा दे। ऐसा करने से मेघ स्तम्भन होता है जिसके फलस्वरूप वर्षा नहीं होती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मम पतिं स्तंभयं कुरु कुरु स्वाहा ।

स्त्री सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को निर्जन स्थान में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् स्त्री प्रयोग हेतु शनिवार के दिन केसर, महावर, गोरोचन की स्वाही बनाकर उक्त मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर अपने गले में ताबीज बनाकर पहन ले। ऐसा करने से उसके पति का स्तम्भन हो जाता है।

[आसन स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो दिगंबराय अमुकासनं स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

सबसे पहले साधक नदी अथवा सरोवर के तट पर जाकर एकान्त में बैठकर उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक श्मशान से अग्नि लाकर नमक की आहुति देते हुए उक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करे। जप के समय साधक 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करे जिसका स्तम्भन वह चाहता है तो उसका आसन स्तंभित होता है। इसी प्रकार श्मशान से मृत व्यक्ति का सिर लाकर उसमें सफेद घुंघची के बीच बोए और रोज दूध से सींचता रहे। जब पेड़ तैयार हो जाए तब पेड़ की टहनी, जड़, लता को एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साधक जिस भी व्यक्ति के मुँह में डालेगा उसी का आसन स्तंभित हो जाएगा।

[बुद्धि स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो भगवते मम शत्रुं बुद्धिं विनष्टाय आगच्छ स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक हरताल और हल्दी को जल में पीकसर भोजपत्र पर अनार की टहनी की लेखनी से उक्त मन्त्र लिखकर हरे कपड़े में ताबीज बनाकर शत्रु के भवन-द्वार पर गाड़ दे। यदि साधक ऐसा करे तो शत्रु की बुद्धि का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् साधक के शत्रु बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

[बुद्धि स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ नमो भगवते शत्रुणां बुद्धिं स्तंभय स्तंभय स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र को एक लाख बार जपकर सिद्ध कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के लिए उल्लू की बीट को छाया में सुखाकर एक रत्ती बीट अनुमान से एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित कर शत्रु को पान में खिला दे तो उस शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी।

[विष स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो समुद्र, समुद्र में कमल, कमल में विषहर, बिच्छू कहूं तेरी जात, गरुड़ कहे मेरी अठारह जात, छह काला-छह कांबरा, छह कूं कूं बान, उतर रे उतर, नहीं तो गरुड़ पंख हंकारे आन, सर्वत्र बिसन मिलई, उतर रे बिच्छू उतर, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि किसी व्यक्ति को बिच्छू ने डंक मार दिया हो तो ऐसे व्यक्ति को उक्त मन्त्र सात अथवा इक्कीस बार जपकर बिच्छू द्वारा डंक मारे गये जगह पर हाथ रखकर झाड़ देने से वह व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

[विष स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षी देवी।
जहां बसे इस्माईल जोगी।
इस्माईल जोगी ने पाली कुत्ती।
दश काली दश कांबरी।
दश पीली दश लाल।
रंग बिरंगी दश खड़ी।
दश टीको दे भाल।
इनका विष हनुमंत हरै।
रक्षा करै गुरु गोरख बाल।
सत्य नाम आदेश गुरु को।

यदि किसी को पागल कुत्ते ने काट लिया हो तो कुत्ते के विष स्तम्भन के लिए उक्त मन्त्र से उपले की भस्म को सात बार अभिमन्त्रित करे। फिर इसे रोगी के उस स्थान पर लगा दे जहाँ कुत्ते के काटने से घाव बन गया हो ऐसा करने से विष का स्तम्भन हो जायेगा और रोगी स्वस्थ हो जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[विष स्तम्भन मन्त्र-३]

धर पटकि ।
धसनि धसनि सार ।
ऊपरे धसानि ।
विष नीचे जाये ।
काहे विष तू इतना रिसाये ।
क्रोध तो तोर नहीं पानी ।
हमरे थप्पड़ तोर नाहीं ठिकानी ।
आज्ञा देवी मनसा माता की ।
विषहरी राई की दुहाई ।

साँप के डसने पर उक्त मन्त्र को सात अथवा इक्कीस बार बोलकर सर्प द्वारा डसे हुए व्यक्ति को थप्पड़ मारने से साँप के जहर का स्तम्भन हो जाता है।

[विष स्तम्भन मन्त्र-४]

परवत ऊपर सुरही गाई ।
ते करे गोबरे बीछी बिआई ।
छः कारी । छः गोरी ।
छः को जोता उतारिकै ।
बिधा बिछिठा वहिया ।
आठि गाठि नव पोर ।
बीछी करे अजोर, बलि चलु चलाई ।
करवाऊ ईश्वर महादेव के दुहाई ।
जहां गुरु के पांव सरके ।
तहदि गुरु के कुश कजुरी ।
तहदि विष्णुपुरी निर्माजाई कै दुहाई ।
महादेव गुरु के ठावहिं ठाव बीछी पार्वती ।

यदि बिच्छू ने किसी व्यक्ति को डंक मार दिया हो, तो उसके विष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तम्भन के लिए उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलते हुए झाड़ने से विष का स्तम्भन हो जाता है और वह व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

[विष स्तम्भन मन्त्र-५]

थाला पड़ि धूल पड़ि ।
धां धीं वलिये ।
अमुकेर अंगेर विष पाला उड़िये ।
थाला पड़ि धूल पड़ि ।
धां धीं स्वाहा ।
अमुकेर अंगे विष लागे तलगै थारूगा ।
कार आज्ञा कंसासुर नृ पितर आज्ञै ।
धनपति स्वाहा ।

कांसे की स्वच्छ थाली लेकर उक्त मन्त्र से नौ बार अभिमन्त्रित कर वह थाली सर्प द्वारा डसे हुए व्यक्ति के पीठ पर रख देने से विष का स्तम्भन होता है। जब तक शरीर से पूरा विष न निकल जाये तब तक थाली हटती नहीं है।

[विष स्तम्भन मन्त्र-६]

चूण चूण चूण विषेर पाणी ।
हाडेर मितर भासरे कूंड़े ।
मर विष तुई चूणे पूड़े ।

यदि किसी को बर्रे ने डंक मार दिया हो तो उसके विष स्तम्भन के लिए उक्त मन्त्र को इक्कीस बार जपकर फूंक मारने से विष का स्तम्भन हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[विष स्तम्भन मन्त्र-७]

तागा तागा तागा ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ।
तिन देव लागा ।
ऐ तागा नड़े चढ़े ।
ईश्वरी करतार करे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्प द्वारा डसे हुए व्यक्ति को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित धागा बांध देने से साँप के जहर का स्तम्भन होता है।

[सिंह स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ वं वं वं हं हं हं ध्रां ठः ठः ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को नदी तट पर निर्जन स्थल में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक रविवार अथवा मंगलवार को निगोही के बीज लाकर उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर सिंह के सामने फेंक दे तो पूर्ण रूप से सिंह का स्तम्भन हो जाएगा।

[सिंह स्तम्भन मन्त्र-२]

क्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ।

साधक निर्जन स्थान में उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक लोहे की छड़ को एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शेर की ओर फेंक दे तो सिंह का स्तम्भन हो जाता है।

[सिंह स्तम्भन मन्त्र-३]

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को किसी एकान्त स्थल पर एकाग्रचित्त होकर दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक शस्त्र को एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शेर के सामने फेंक दे। ऐसा करने से सिंह का स्तम्भन हो जाता है।

[बाघ स्तम्भन मन्त्र]

बैठी बैठा कहां चल्यौ ।
पूर्व देश चल्यौ ।
आंखि बांधौ ।
तीनों कान बांधौ ।
तीनों मुंह बांधौ ।
मुंह केत जिह्वा बांधौ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधौ डांड बांधौ ।
चारिउ गोड बांधौ ।
तेरी पोंछि बांधौ ।
न बांधौ तो मेरी आन ।
गुरु की आन ।
वज्र डांड बांधौ ।
दोहाई महादेव पार्वती के ।

यदि साधक सिद्धि कर रहा हो अथवा एकान्त जंगल से होकर यात्रा कर रहा हो तो चार कंकरों को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके अपने चारों तरफ रखकर साधना करे तो बाघ का स्तम्भन होता है। ऐसा करने से वह साधक के निकट भी नहीं भटक सकता है।

[कड़ाही स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो जल बांधूं जलवाई बांधूं बांधूं कुआ खाई, नौ सौ गांव का वीर बुलाऊं बांधे तेल कड़ाही, जती हनुमंत की दुहाई, शब्द सांचा पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का ।

साधक उक्त मन्त्र को दीपावली की रात में एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक रास्ते से सात कंकड़ चुनकर ले आए और हर कंकड़ को सात-सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कड़ाही पर मारे। ऐसा करने से कड़ाही का स्तम्भन होता है यानि कितनी भी तेज आग जलाई जाए, कड़ाही गरम होगी ही नहीं।

[तुरही स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो बादी आया बांद करता कूं बैठाया बड़ पीपल की छाया रहुरे बादी बादी न कीजै बांधूं तेरा कंठ और काया बांधूं पूंगी और नाद बांधूं योगी और साधु बांधूं कंठ की पूंगी और मसान की बानी अब तो रह रे पूंगी सुजान तलै बांधे नरसिंह ऊपर हनुमंत गाजै मेरी बांधी पूंगी बाजै तो गुरु गोरखनाथ लाजै शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध करने के पश्चात् साधक उड़द के इक्कीस दानों को एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तुरही (वाद्य यंत्र) पर मारे। इस क्रिया को करने से तुरही का स्तम्भन होगा यानि उससे स्वर निकलना बंद हो जाएगा।

[सर्प स्तम्भन मन्त्र-१]

सर्पाप सरं भद्रं ते दूरम गच्छ महाविष ।
जनमेजय यज्ञान्ते आस्तिक्य वचनं स्मर ।।
आस्तिक्य वचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्तते ।
सप्तता त्रिधते मूर्ध्नि शिश वृक्षं फलं यथा ।।

साधक उक्त मन्त्र को सबसे पहले निर्जन स्थान में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक इक्कीस बार उक्त मन्त्र बोलकर साँप पर फूंक मार दे। ऐसा करने से साँप का विलक्षण स्तम्भन होता है।

[सर्प स्तम्भन मन्त्र-२]

बजरी बजरी बजर कीवाड़ ।
बजरा कीलूं आस पास ।
मरै सांप होय खाक ।
मेरा कीला पत्थर कीलै ।
पत्थर फूटै न मेरा कीला छूटै ।
मेरी भक्ति ।
गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक थोड़े से कंकड़ अथवा मिट्टी को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर साँप पर धीरे से मार दे। ऐसा करने से साँप का स्तम्भन हो जाता है यानि वह रेंग नहीं पाता तथा जहाँ की तहाँ स्थिर रहता है।

[सर्प स्तम्भन मन्त्र-३]

ॐ नमो तक्षक कुलाये सर्प स्तंभने कुरु कुरु स्वाहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक दीपावली की रात में निर्जन स्थल पर उक्त मन्त्र को इक्कीस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। उसके बाद साधक मिट्टी के सात ढेले इक्कीस बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साँप की तरफ फेंक दे तो साँप का स्तम्भन हो जाता है।

[गर्भ स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो थाथो मोथो ।
मेरा कहा कीजिए ।
'अमुक' का गर्भ ।
जाते राखि लीजिए ।
गुरु की शक्ति ।
मेरी भक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

कीदृशी राक्षसी की पूजा अर्चना करने के पश्चात् काले धागे को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गर्भवती स्त्री की कमर में पहना दे तो उसके गर्भ का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् उस स्त्री का गर्भ गिरता नहीं।

[गर्भ स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
जय जय जय जयकार ।
गोरख बैठा घोरूवार ।
जब लग गोरख जाप जपै ।
जब लग राज विभीषण करै ।
गौरा कात्या कातना ।
ईश्वर बांध्या गंडा ।
राखु राखु श्री हनुमंत बजरंग ।
जो छिटका परता ।
अंडा दूध पूत ।
ईश्वर की माया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ता गर्भ श्री गोरखनाथ जी रखाया ।
मेरी भक्ति ।
गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

काले रंग के धागे को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गर्भवती स्त्री की कमर में पहना देने से उस स्त्री के गर्भ का स्तम्भन हो जाता है।

[शस्त्र स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो भैरवे नमः । मम शत्रु शस्त्र स्तंभने कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को सभी प्रकार से युक्त सिद्धि योग में श्मशान भूमि में वस्त्रहीन होकर इक्कीस हजार बार जपकर भैरव देव का पूजन अर्चन कर, मांस-मदिरा अर्पित करके और बलि देकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक खरमंजरी के बीजों को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के समक्ष फेंक दे। ऐसा करने से शत्रु का शस्त्र लिया हुआ हाथ उठा का उठा ही रह जायेगा, यानि शस्त्र का स्तम्भन होने के कारण शत्रु शस्त्र को चला नहीं पायेगा।

[शस्त्र स्तम्भन मन्त्र-२]

बांधो तूपक, अवनि बार न धरे, चोट न परे घाऊ, रक्षा करे श्री गोरखराऊ ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक इस मन्त्र से जल को सात बार अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर छिड़क ले। ऐसा करने से शस्त्र का स्तम्भन हो जाता है यानि यदि कोई शत्रु शस्त्र से वार करता भी है तो साधक को चोट नहीं लगती है।

[शस्त्र स्तम्भन मन्त्र-३]

ॐ नमो धार धार, अधर धार ।
बांधौं सात बार ।
आनि बांधौं तीन बार ।
कटै रोम न भीजै चीर ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खांडा की धार को ले गया यती हनुमंत वीर ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् यदि साधक को रास्ते में जाते समय किसी के चाकू आदि शस्त्र से प्रहार करने की आशंका हो तो उक्त मन्त्र को सात बार जपकर फूंक मार दे तो वह चाकू इत्यादि शस्त्र स्तंभित हो जाता है।

[शस्त्र स्तम्भन मन्त्र-४]

ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय शत्रूणां शस्त्र स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक रविवार के पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ लाए तथा उसे पीसकर इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शरीर पर लेप लगा ले। ऐसा करने से शस्त्र का स्तम्भन होगा यानि शस्त्र प्रभावहीन हो जायेगा। यदि साधक किसी भी शुभ दिन में खजूर की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने हाथ-पैरों में बाँध ले तो भी शस्त्र का स्तम्भन हो जाता है।

[शस्त्र स्तम्भन मन्त्र-५]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
जल बांधूं, जलवाइ बांधूं ।
बांधूं खाती ताई ।
सवा लाख अहेढ़ी बांधूं ।
गोली चले तो हनुमंत यती की दुहाई ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् एक रंग की गाय के दूध को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर बन्दूक, पिस्तौल, तोप इत्यादि पर छिड़क दे तो इन सब चीजों का स्तम्भन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इनको चलाने पर भी ये शस्त्र नहीं चल पाते हैं।

[घाव स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो आदेश कामाख्या देवी का ।
काली बैठी लिये कटारी ।
जिसे देख दुष्ट भयकारी ।
कटारी गुण तोरे बलिहारी जाई ।
कटारी के बंदन से घाव सुखाई ।
'अमुक' की पीड़ा ।
मां काली के वरदान से न रहे ।
बिहड़ वन बस लुकान ।
आज्ञा हाड़ी दासी चंडी की दुहाई फिरै ।

साधक उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। इसके बाद साधक एक कटोरी में जल लेकर उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर घाव हुए रोगी को जल के छींटे मारे तथा थोड़ा-सा जल पिला दे तो घाव से बहने वाला खून रूक जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है। साधक मन्त्र को पढ़ते समय 'अमुक' के स्थान पर जिस व्यक्ति को घाव हुआ है उस रोगी का नाम लेना चाहिए।

[दृष्टि स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो काला भैरों घुंघर वाला ।
हाथ खड्ग पुष्पों की माला ।
चौंसठ योगिनी संग में चाला ।
देखो खोलि नजर का ताला ।
राजा परजा ध्यावै तोही ।
सबकी दृष्टि बंधा दे मोही ।
मैं पूजौं तुमको नित ध्याय ।
राजा परजा मेरे पांय लगाया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरी अथाई सुमिरौं ताही ।
तेरा किया सब कुछ होय ।
देखूं भैरों तेरे मंत्र की शक्ति ।
चलै मंत्र ईश्वरो वाचा ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक रविवार को रात में श्मशान जाकर भैरव देव की पूजा अर्चना कर उक्त मन्त्र को एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। यदि साधक के भैरव देव इष्ट हों तो अति उत्तम है। फिर साधक एक चुटकी भस्म लाकर उसे उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर किसी सभा अथवा व्यक्ति पर फूंक मारे। ऐसा करने से दृष्टि स्तंभित हो जाती है यानि साधक के क्रियाकलाप लोगों को दिखाई नहीं देते।

[हिंसक जीव-जन्तु स्तम्भन मन्त्र]

फकीर चले परदेश को ।
कुत्तक मन में भावे ।
बाघ बांधूं, बघाइन बांधूं ।
बाघ के सातों बच्चे बांधूं ।
सांपा चोरां बांधूं ।
दांत बंधाऊं, बाट बांध देऊ ।
दुहाई लोना चमारी की ।

साधक सबसे पहले उक्त मन्त्र को एकान्त स्थान पर एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक जब कभी हिंसक जीव-जन्तुओं से वन इत्यादि में घिर जाए तो उक्त मन्त्र को इक्कीस बार जपकर सभी दिशाओं में फूंक मारे। ऐसा करने से हिंसक जीव-जन्तुओं का स्तम्भन हो जाता है और साधक की रक्षा होती है।

[सेना स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमः चंडिकायै अरि सैन्य स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी नवरात्र में दुर्गा माता के मन्दिर में रात के समय इक्यावन हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक को शत्रु सैन्य आक्रमण का डर हो तो सात जोड़े लौंग इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आक्रमण के लिए आती हुई शत्रु की सेना पर फेंक दे। ऐसा करने से शत्रु की सेना का स्तम्भन होता है।

[भूख स्तम्भन मन्त्र-१]

ॐ नमो सिद्धि रूप मे देहि कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण में नदी के जल के मध्य खड़ा होकर उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक अपामार्ग के बीज इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खीर बनाकर खाये तो भूख का स्तम्भन होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसको भूख नहीं लगती है।

[भूख स्तम्भन मन्त्र-२]

ॐ गाजुहदरूयां उन्मुख मुख मांसरु छिल ताली अहुम ।

साधक उक्त मन्त्र को रविवार के हस्त नक्षत्र में किसी भी मंदिर में जाकर एकाग्रचित्त होकर दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक रविवार को चर्चिका के बीजों को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सेवन करे। ऐसा करने से क्षुधा (भूख) का स्तम्भन होता है यानि उसे भूख नहीं लगती है।

[बकरा स्तम्भन मन्त्र]

काले तिल कवेला तिल गुजरी बैठी वीर पसारे सुई न देधे मधाई पीर न आवै काली करू इमती भारी दुष्य तिबुकिलार अवनी बांधो सुई अवषांडे की धार आवे न लोहू न फुटे घाउ रक्षा करे श्री गोरखराउ ।

साधक उक्त मन्त्र को सर्वप्रथम सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक इक्कीस बार उड़द के दानों को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर बकरे पर फेंके तो बकरे का स्तम्भन हो जाता है यानि कसाई यदि चाहे तो भी उस बकरे को नहीं मार पाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[चूहा-सूअर स्तम्भन मन्त्र]

ॐ हनिवंत धावति उदरहि ल्यावे बांधि अब खेत खाय सूअर घर मा रहे मूस खेत घर छांडि बाहर भूमि जाई दुहाई हनुमान कै जो अब खेत महं सूअर, घर महं मूस जाई ।

साधक को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक पाँच गाँठ वाली हल्दी के टुकड़े और थोड़े-से चावल लेकर स्नान करने के बाद इक्कीस बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर वहाँ डाले जहाँ सूअर और चूहे अधिकतर आते हैं। इस क्रिया को करने से उनका आना बन्द हो जाता है।

[जलन स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु को ।
कामरू देश कामाख्या देवी ।
जले तेल रेल तेव महातीरे ।
'अमुक' लहर पील मल में कारे ।
मंत्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठके ।
श्री रामचंद्र रहि रहि फूंक के ।
जाय 'अमुक' की जलन ।
एक एलन में जाय ।
खाय सागर की नोर नान में ।
आज्ञा हाड़ि दासी की । फुरो मंत्र चंडी वाचा ।

यदि कोई व्यक्ति किसी कारणवश आग से जल गया हो तो उस व्यक्ति के जलन का स्तम्भन अर्थात् जलन को शान्त करने के लिए उक्त मन्त्र से सरसों का तेल अभिमन्त्रित कर शरीर के जले हुए भाग पर लगा देने से उस व्यक्ति के जलन का स्तम्भन हो जाता है और रोगी ठीक हो जाता है।

मन्त्र में 'अमुक' की जगह साधक उस व्यक्ति का नाम ले जो आग से जल गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[निद्रा स्तम्भन मन्त्र]

अलक बांधूं पलक बांधूं सारा खलक बांधूं गुरू गोरखनाथ की दुहाई, मेरी निद्रा दे भगाई छू छू छू ।

साधक उक्त मन्त्र को सूर्यग्रहण के समय में नदी के तट पर वस्त्रहीन होकर दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक ककड़ी और महुवे की जड़ को जल में पीसकर सूंघे तो निद्रा का स्तम्भन हो जाता है।

[अखाड़ा स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी को ।
अंग पहनूं भुजंग पहनूं, पहनूं लोह शरीर ।
आवते के हाथ तोड़ूं, चालते के पांव तोड़ूं ।
सहाय हो हनुमंत वीर, उठ अब नरसिंह वीर ।
तेरो सोलहा सौ श्रृंगार, मेरी पीठ लागे नहीं वार ।
हो मेरी हार तो हनुमंत वीर लजाने ।
तूं लेहु पूजा, पान सुपारी नारियल सिंदूर ।
अपनी बेह, सकल मोही कर देहु ।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये हनुमान जी की पूजा अर्चना करना आवश्यक है। साधक हनुमान जी की मूर्ति के समक्ष तेल का दीपक जलाकर उनको लंगोट आदि चढ़ाये। तत्पश्चात् दस हजार बार मन्त्र को जपकर सिद्ध कर ले। इसके बाद साधक सरसों के तेल को एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शरीर पर मालिश करे। उसके बाद लंगोट पहन कर अखाड़े में जाये तो अखाड़े का स्तम्भन हो जाता है और साधक की जीत होती है।

[नकसीर स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो गुरु की आज्ञा सार सार माहागरे बांधूं सात बार फिर बांधूं तीन बार लोहे की सार बांधे हनुमंत वीर पाके न फूटे तुरत सूखे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के बाद प्रयोग के समय भस्म को सात बार अभिमन्त्रित कर रोगी को झाड़ा दे तो नकसीर (नाक से खून आना) का स्तम्भन होता है।

[मोच स्तम्भन मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु को । श्रीराम को मचक उड़ाई ।
इसके तन से तुरंत पीर भागि जाई ।
न रहे रोग पीड़ा फूंक से हुई सब पानी ।
'अमुक' की व्यथा छोड़ भाग तू मचकानी ।
न भागे पीड़ा तो महादेव की दुहाई ।
आदेश सिया राम लखन गुसांई ।

साधक को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर प्रयोग के समय साधक सरसों का तेल इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शरीर के उस स्थान पर मालिश करे जिस स्थान पर मोच आयी हो। ऐसा करने से मोच की पीड़ा का स्तम्भन होता है यानि मोच का दर्द ठीक हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[लंगोट स्तम्भन मन्त्र]

ॐ अजर कर बजर कर ।
बजर को बंध कर ।
तलै धरती, ऊपर सिंधु ।
श्यामसुन्दर दो बाला ।
सात समुद्र एक ही प्याला ।
चौंसठ योगिनी कुमार कटका करे ।
सत की लंगोटी, संतोष का धागा ।
मूंज की आड़बंध, कमर सों लागा ।
नाग पहिरे नागमणि ।
हनुमान पहिरे लाल लंगोट ।
बाल गोपाल पहिरे कोपीन ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवनाथ चौरासी सिद्धन की ओट ।
पवन से डरे तो अग्नि की आन ।
खिसक जाये तो पृथ्वी की आन ।
चूक जाए तो लक्ष्मण यती की आन ।

साधक उक्त मन्त्र को एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोगार्थ इक्कीस बार लंगोट को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पहन ले तो लंगोट का स्तम्भन होता है यानि लंगोट की गाँठ नहीं खुलती है।

भूत उतारने का स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो काला गौरा भेरू ॐ नमो देवी दुर्गा सर्व दुष्टानां, भूतादिक, प्रेतादिक स्तम्भय स्तम्भय अन्धय अन्धय, मूकत्व कारय, हन हन ह्रीं ॐ स्वाहा।

एक चिपटी, लोबान, एक मोती, लाल मिर्च, नमक हल्दी आदि लेकर १०८ बार उक्त मंत्र की आहुति दे। आहुति देने के बाद यज्ञ भस्मी को जिस व्यक्ति को भी तिलक लगावेंगे, वह भूतादि बाधा से मुक्त हो जायेगा।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ उच्चाटन कर्म प्रयोग ❀

[उच्चाटन मन्त्र-१]

ॐ शिनि शिनि स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए साधक गूलर की चार अंगुल लम्बी लकड़ी लेकर उक्त मन्त्र को इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर ले। फिर साधक जिसके भी घर में वह लकड़ी दबा देगा उसका उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-२]

भंवर वीर तू चेला मेरा, बांध दुकान कहा कर मेरा, उठे न डंडी, बिके न माल, न भंवर वीर सो खेकर जाय ।

उक्त मन्त्र सिद्ध होने के बाद साधक काले उड़द की दाल को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर जिस किसी दुकान पर डाल दे तो उस दुकान से ग्राहक का अवश्य उच्चाटन हो जाता है इसका मतलब है कि ग्राहक उस दुकान पर नहीं आता। ऐसा करने से बिक्री भी नहीं हो पाती।

[उच्चाटन मन्त्र-३]

ॐ दह दह लह स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक उल्लू की एक अंगुल लम्बी हड्डी को लेकर उक्त मन्त्र के द्वारा सात बार अभिमन्त्रित कर ले। ऐसा करने के बाद साधक उस हड्डी को जिस किसी व्यक्ति के भी घर में गाड़ देगा तो उसका उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-४]

ॐ नमो भगवते रुद्राय हुं दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्र बांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ।

साधक उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए कौवे और उल्लू के पंखों से जिसका भी नाम लेकर हवन करेगा, उसका अवश्य ही उच्चाटन होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[उच्चाटन मन्त्र-५]

ॐ हस्तअली हस्तों का सरदार, लगी पुकार, करो स्वीकार। हस्तअली तेरी फौज चली, भूत-प्रेतों में मची खलबली। हस्तअली मेरे हाथों के साथ तेरे भूतप्रेत करे मेरी सत्ता स्वीकार। पाक हस्त की सवारी, तड़पता हुआ भागे जब मैंने चोट मारी। आकाश की ऊंचाइयों में, धरती की गहराइयों में लेना तू खोज खबर, सब पर जाए तेरी नजर। इन हाथों पर कौन बसे, नाहर सिंह वीर बसे। जाग-जाग रे नाहरअली, हस्तअली की आन चली। मारूं जब भी मैं चोट, भूत प्रेत किये कराये लगे लगाये अला बला की खोट। जादू गुड़िया, मंत्र की पुड़िया, श्मशान की खाक, मुरदे की राख, सभी दोष हो जाएं खाक। शब्द सांचा, पिंड काचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सर्वप्रथम साधक सूर्यग्रहण के समय लोबान जलाकर चमेली के पुष्प के पास रखकर लगातार मन्त्र को जपकर सिद्ध कर ले। इस प्रकार सिद्धि साधक के हाथ में आती है। तत्पश्चात् साधक अपने हाथ से ही मन्त्र को अभिमन्त्रित कर सकता है। इस तरह साधक जिसे भी मारेगा उसके दोषों का उच्चाटन हो जाएगा और वह अपने हाथ से जिस किसी को स्पर्श करेगा तो वह शत्रुता भूल जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-६]

ॐ ह्रीं दंडिनीं ह्रीं महादंडी नमस्ते ठः ठः।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोगार्थ सात अंगुल लम्बी मनुष्य की हड्डी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी के भी घर में गाड़ देगा, उसी का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-७]

सफेद कबूतर, काले कबूतर।
काट काट कर मैं तुझे चढ़ाता।
काली के बेटे तुझे बुलाता।
लौंग सुपारी ध्वजा नारियल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मदिरा की मैं भेंट चढ़ाता ।
काली विद्या मैं चलाता ।
बावन भैरों चौंसठ योगिनी ।
बने इस काज सहयोगिनी ।
ॐ नमो आदेश ! आदेश !! आदेश !!!

इस मन्त्र की सिद्धि बड़ी सावधानी से करनी चाहिए। यदि संभव हो तो साधक योग्य गुरु का दिशा-निर्देशन अवश्य प्राप्त कर ले। इसे साधक कालरात्रि से लेकर सूर्य उदय होने तक लगातार जपे तथा होली के दिन श्मशान में जाकर काला कबूतर की बलि दे। इसी प्रकार वह दीपावली की रात्रि में उक्त मन्त्र को पुनः लगातार जपे तथा श्वेत कबूतर काटकर उसका पंजा अपने समीप रखकर बचे हुए भाग को श्मशान में ही छोड़ दे। इसके बाद साधक किसी भी शनिवार की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को श्मशान में जाकर जलती हुई चिता के समक्ष बैठकर लगातार उक्त मन्त्र को जपे तथा सुबह जल्दी ही वहाँ से राख लेकर लौटे। इस प्रकार साधक वह राख उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी व्यक्ति को भी स्पर्श करा देगा, उसी का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-८]

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं अमुक शत्रुं उच्चाटनं स्वाहा ।

साधक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में सात अंगुल लम्बी कुंकुम की लकड़ी लाकर उसे इसी नक्षत्र में उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करे और शत्रु के घर के मुख्य द्वार पर दबा दे। ऐसा करने से सात दिन के अन्दर ही साधक के शत्रु का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-९]

ॐ हं हं वां ह्रं ह्रं ठः ठः ।

साधक को किसी शुभ नक्षत्र में उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोगकाल में सधक चार अंगुल लम्बी कौवे की हड्डी को एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी के भी घर में डाल देगा उसी का उच्चाटन हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[उच्चाटन मन्त्र-१०]

ॐ घुं घूति ठः ठः स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक प्रयोगकाल में अरूवा वृक्ष की टहनी को एक सौ आठ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी के भी घर में डाल देगा, उसी का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-११]

ॐ कारी कमरी मौनी रात, ढूंढो सरप अपनी बाट, जो सरप बिच्छा पर परे लात, वह सरप बिच्छा करे न घात, दुहाई ईश्वर महादेव की, गोरां पार्वती की ।

साधक सबेरे उठते ही उक्त मन्त्र का सात बार उच्चारण करे तो जहरीले जीव-जन्तुओं का उच्चाटन होता है। रास्ते में चलते समय साधक यदि उक्त मन्त्र जपे तो जहरीले जीव-जन्तु दूर भाग जाते हैं।

[उच्चाटन मन्त्र-१२]

ॐ वीर वीर महावीर सात समुद्र का सोखा नीर
देवदत्त के ऊपर चौकी चढ़े हियो फोड़ चोटी ।
चढ़े सांस न आवे पड्यो रहे काया माहि जीव
रहे लाल लंगोट तेल सिंदूर पूजा मांगे महावीर ।
अंतर कपड़ा पर तेल सिंदूर हजरत वीर की चौकी ।
रहे ॐ नमो आदेश ! आदेश !! आदेश !!!

यह प्रयोग मारण की तरह ही खतरनाक है। इसलिये इस मन्त्र को किसी व्यक्ति के अहित के लिए प्रयोग नहीं करना चाहिए। उक्त मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' आया है, वहाँ उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए जिसका उच्चाटन करना हो। इस मन्त्र को किसी चौराहे पर स्थित हनुमान जी के मन्दिर में मंगलवार की रात्रि में जाकर सिद्ध कर लेना चाहिए। प्रयोगकाल में अपने शत्रु के कपड़े पर तेल, सिन्दूर लगाकर शत्रु का चित्र बनाना चाहिए और प्राणप्रतिष्ठित कर उस वस्त्र को कलश में रखकर उसका मुख बंद कर किसी निर्जन स्थान पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिट्टी के नीचे दबा देना चाहिए। साधक के द्वारा ऐसा करने से उसके शत्रु की श्वासों का उच्चाटन होगा। अतः जब साधक को अपने शत्रु को स्वस्थ करना हो तो कलश को मिट्टी से बाहर निकाल ले। कलश को मिट्टी के नीचे से किसी नुकीले अथवा धारदार वस्तु से नहीं निकालना चाहिये अन्यथा उसके शत्रु के जीवन को हानि भी हो सकती है।

[उच्चाटन मन्त्र-१३]

ॐ लोहिते मुख स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक चार अंगुल चित्रक वृक्ष की टहनी पुनर्वसु नक्षत्र में लाकर सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी के भी घर में डालेगा, उसी का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-१४]

ॐ एक ही आदि है जगधारा ।
सदा स्मरण करूं ओंकारा ।
ओंकार से मैं काम चलाऊं ।
ठहरे पर्वत मैं हिलाऊं ।
ओंकार से उपजी वायु ।
वायु का बेटा है हनुमान ।
तेरा हूँ मैं एक ही दासा ।
सदा रहो रघुवर के पासा ।
पान बीड़ा तुझे चढ़ाऊं ।
देवदत्त को मैं भगाऊं ।
मेरा भागा न भगे ।
रामचंद्र की दुहाई ।
सीता सतवंती की दुहाई ।
लक्ष्मण यती की दुहाई ।
गौरा पार्वती की दुहाई ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शब्द सांचा पिंड काचा ।

फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक रावनवमी के दिन हनुमान जी की सिद्धि के लिए विशेष पूजा करके प्रतिदिन चालीस दिन तक उक्त मन्त्र का एक हजार जप करे। साधक ब्रह्मचर्य का पालन करे। जपकाल में यदि साधक को विचित्र अनुभूति हो तो साधक डरे नही। मन्त्र सिद्धि के बाद काले उड़द को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु पर मारने से शत्रु का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-१५]

फरीद चले परदेश को कुत्तक जी के भाव सांपा चोरां नाहरां तीनों दांत बंधान ।

साधक को उक्त मन्त्र होली, दीपावली के समय एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके बाद साधक को जब कभी भी जंगल के रास्ते से जाना पड़े तो उक्त मन्त्र को सात बार बोलकर वह अपने ऊपर फूंक मारकर तीन ताली बजा दे। इस प्रकार करने से जंगली जीव-जन्तुओं का उच्चाटन होता है।

[उच्चाटन मन्त्र-१६]

ॐ नमो अमुकस्याय अमुकस्य गृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक मंगलवार को उस स्थान की मिट्टी अपने बाएं हाथ से उत्तर की ओर मुख कर लाए जिस स्थान पर गधा लेटा हो। साधक उस मिट्टी को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने शत्रु के घर में डाल दे। ऐसा करने से अवश्य ही साधक के शत्रु का उच्चाटन हो जाएगा।

[उच्चाटन मन्त्र-१७]

ॐ तुंग स्फुलिंग बक्रिम चार्चिका विद्धहन मांथ बने स्फर स्फर ॐ ठः ठः अमुकं ।

साधक रविवार अथवा मंगलवार की अमावस्या को अर्द्धरात्रि में ऊँट के चमड़े के आसन पर बैठकर गुंजा की माला से एक हजार अस्सी बार उक्त मन्त्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
का जप करे तथा मन्त्र में अमुक की जगह अपने शत्रु के नाम का उच्चारण करे। ऐसा करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

[उच्चाटन मन्त्र-१८]

ॐ नमो आदेश गुरु को, सिद्धि सिद्ध करे सिद्धाई, कभी न होवे जग हंसाई। सिद्धि मेरी है रखवाली, सिद्धि है आसन, सिद्धि है बासन, सिद्धि है ताला, सिद्धि है चाबी। सिद्धि से मैं काम चलाऊं, भरकर प्याला खूब पिलाऊं। रक्त का टीका, सिद्धि का वासी, मुझसे भागे सारे पुरवासी। जो मैं चाहूं बाण चलाऊं, बिना तीर कमान के मैं काम चलाऊं। मेरा मारा ऐसा भागे, बिन कृपा मेरी वह कभी न छूटे। सिद्धि का चक्र मैंने चलाया, जिसको चाहा उसे मरवाया। मेरा चक्र न चले तो नवनाथ सिद्धों की दुहाई, माता वैष्णवी की दुहाई, काशी कोतवाल, भैरव की दुहाई, शब्द सांचा, पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को नवरात्र में वस्त्रविहीन होकर लगातार जपकर सिद्ध कर ले। इसके बाद साधक प्रयोग करते समय जिस किसी कार्य का चिन्तन करके मन्त्र का जाप करता है तो वह कार्य जरूर पूरा होता है। तत्पश्चात् साधक के द्वारा उच्चाटन के लिए उड़द के इक्कीस दानों को अभिमन्त्रित कर जिस किसी वांछित व्यक्ति पर फेकेगा उसका अवश्य ही उच्चाटन हो जाएगा।

[रोग उच्चाटन मन्त्र]

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय अतुल वीर पराक्रमाय घोर रौद्र महिषासुर रूपायै त्रैलोक्य डंबराय रौद्र क्षेत्रपालाय ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रमित ताड़य ताड़य मोहय मोहय द्रभि द्रभि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आशक्तये प्रीति ललाटे बंध यही हृदये स्तंभय स्तंभय किली किली ईं ह्रीं डाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनी प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अदूति स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्म राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहनी पुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय ऐते डाकिनी ग्रहं साधय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधय अनेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूत-प्रेत-पिशाचादि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंचानिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक सन्निपात केसरी डाकिनी ग्रहादि मुंच मुंच स्वाहा गुरु की भक्ति मेरी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यह त्रिभाषिक मन्त्र है अर्थात् इसमें तीन भाषाओं (हिन्दी, बंगला, संस्कृत) का प्रयोग है। यह अन्य शाबर मन्त्रों से भिन्न शाबर मन्त्र है। साधक उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर छप्पर का जल जिस किसी रोगी पर डाल देगा उस व्यक्ति के रोग का उच्चाटन हो जाएगा यानि रोग दूर हो जाएगा। चाहे उस व्यक्ति को किसी भी प्रकार का रोग हो। साधक उक्त मन्त्र के द्वारा रोगी को मयूर के पंख अथवा चाकू से भी इक्कीस बार झाड़ सकता है।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ विद्वेषण कर्म प्रयोग ❀

[स्त्री-पुरुष विद्वेषण मन्त्र]

आक ढाक दोनों बगराई ।
अमुका अमुकीं ऐसे लरे ।
जस कुकुर बिलाई ।
आदेश गुरु सत्य नाम को ।

साधक ढाक की सूखी टहनियाँ व धतूरे का ताजा पत्ता लाकर पत्ते पर काली स्याही से उक्त मन्त्र को लिखे। तत्पश्चात् साधक आधी रात में सूनसान जगह पर ढाक की टहनियाँ जलाए तथा उक्त मन्त्र का उच्चारण कर धतूरे का पत्ता अग्नि में डाल दे। ऐसा करने से स्त्री-पुरुष का विद्वेषण होता है। साधक के द्वारा जितना अधिक पत्ता डाला जाएगा, उतनी ही जल्दी विद्वेषण की प्रक्रिया होती है। साधक मन्त्र में अमुका-अमुकी की जगह उन स्त्री-पुरुष के नाम का उच्चारण करे जिनके बीच वह विद्वेषण कराना चाहता है।

[महाविद्वेषण मन्त्र]

ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक लाख बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के समय बिल्ली के नाखून और कुत्ते के बाल लेकर उक्त मन्त्र बोलते हुए जिस किसी भी स्थान पर डाल देगा, वहाँ पर रहने वाले सभी लोगों में विद्वेषण हो जाता है।

साही नामक जीव के काँटों पर उक्त मन्त्र को पढ़कर जिस किसी भी स्थान पर डाल देगा वहाँ के लोगों में विद्वेषण हो जाता है।

[सर्वजन विद्वेषण मन्त्र]

ॐ नमो महाभैरवाय श्मशानवासिन्यै अमुकामुकयो विद्वेषं कुरु कुरु क्रुं फट् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक बिलौटे और चूहे के मल से दो पुतले बनाकर उन पर नीला वस्त्र लपेट दे। तत्पश्चात् साधक को जिन लोगों में विद्वेषण कराना हो उनका नाम बोलकर उक्त महाभैरव मन्त्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करे। यदि साधक ऐसा करता है तो उनमें विद्वेषण हो जाएगा, भले ही वे आपस में पिता-पुत्र या भाई ही क्यों न हों।

[गृहवासी विद्वेषण मन्त्र]

आं क्रीं क्रीं क्रीं क्रां क्रां क्रां स्फरें स्फरें धां धां ठः ठः ।

साधक सर्वप्रथम अमावस की रात्रि में श्मशान भूमि में जाकर खड़े उड़दों को हांडी में पकाकर व सुखाकर रख ले। उसके बाद प्रयोग के समय साधक रविवार अथवा मंगलवार को उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर जिस किसी के भी घर में डाल देगा, उस घर में रहने वाले सभी लोगों के बीच विद्वेषण हो जाता है।

[मित्र विद्वेषण मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु सत्य नाम को ।
बारह सरसों, तेरहा राई ।
बार की मीठी, मसान की छाई ।
पटक मारूकर जलवार ।
अमुक फूटे देखे न अमुक द्वार ।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम पीली सरसों, राई, मेथी को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में इकट्ठा करे। तत्पश्चात् साधक आम और ढाक की सूखी लकड़ियों को श्मशान की जलती चिता की राख पर रखकर लकड़ियों की वेदी बनाये। इसके बाद उक्त मन्त्र बोलते हुए सभी सामग्रियों से एक सौ आठ बार आहुतियाँ दे। इसके बाद साधक को जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो उनके नाम बोले और हवन की राख को उस स्थान पर डाले द्रे जहाँ पर दोनों व्यक्ति उठते-बैठते हों। ऐसा करने से दोनों मित्रों में विद्वेषण हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मित्र विद्वेषण मन्त्र-२]

राई राई तू है महामाई ।
जारी है जखीरी छाई ।
अमुकामुकं में होय लड़ाई ।

सर्वप्रथम साधक होली, दीपावली, सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण अथवा किसी भी शुभ नक्षत्र में उक्त मन्त्र की इक्कीस मालाएं जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय रात में श्मशान में जाकर जलती हुई चिता पर राई में सरसों मिलाकर साधक एक सौ आठ आहुतियाँ दे। मन्त्र में 'अमुकामुकं' के स्थान पर उन दो मित्रों का नाम लेना है जिनमें परस्पर शत्रुता करानी है।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ मारण कर्म प्रयोग ❀

[मारण मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु का हनुमंत बलवंता माता अंजनी का पूत हल हलंता आओ चढ़ चढ़ंता आओ गढ़ किला तोड़ंता आओ लंका जलंता बालंता भस्म करंता आओ ले लागूं लंगूर ते लिपटाए सुमिरते पटका औ चंदी चंद्रावली भवानी मिल गावैं मंगलाचार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ, आओ जी तुम आओ सात पान का बीड़ा चाबत मस्तक सिंदूर चढ़ाये आओ मंदोदरी सिंहासन डुलाते आओ यहां आओ हनुमान आया जागते नरसिंह आया आगे भैरों किलकिलाय ऊपर हनुमंत गाजै दुर्जन को फाड़ अमुक को मार संहार हमारे सतगुरु हम सतगुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक उक्त मन्त्र सिद्ध करने के लिए ऐसे हनुमान जी के मन्दिर का चुनाव करे जहाँ वह एकान्त में बैठकर मन्त्र को सिद्ध कर सके। इस मन्त्र को सिद्ध करने की क्रिया इकतालीस दिनों की है अर्थात् इकतालीस दिनों में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर साधक उस मन्दिर में किसी भी मंगलवार बूंदी के सात लड्डू और सात पान के बीड़े हनुमान जी को अर्पित कर उक्त मन्त्र का दस हजार बार जप करे। जप करने के बाद साधक धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित करे, चोला चढ़ाए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध होने के बाद साधक श्मशान के कोयले से अपने शत्रु का चित्र धरती पर बनाए। साधक चित्र के सीने पर अपने शत्रु का नाम लिखे तथा हर अंग पर हनुमान जी का बीज़ मन्त्र लिखे। तत्पश्चात् साधक सात बार उक्त मन्त्र का उच्चारण करे तथा शत्रु के चित्र के सिर पर जूते मारे। ऐसा करने से शत्रु पागल हो जाता है और एक सप्ताह के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है। साधक को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि चित्र के चारों ओर चार मोक की कीलें उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर चारों कोनों में गाड़े तथा हनुमान जी की आराधना कर बीज मन्त्र का लेखन पूर्वाभिमुख होकर करे और खीर का भोग लगाए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अश्व मारण मन्त्र]

ॐ पच पच स्वाहा ।

साधक घोड़े की सात अंगुल लम्बी हड्डी लाकर उसकी कील बनाकर अश्विनी नक्षत्र में घुड़साल में दबा दे तो घुड़साल के सभी घोड़े मर जाएंगे।

[मछली मारण मन्त्र]

ॐ जले स्वाहा ।

साधक पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में बेर की झाड़ी से आठ अंगुल लम्बी टहनी तोड़कर ले आए। तत्पश्चात् उक्त मन्त्र साधक सात बार इस टहनी को अभिमन्त्रित कर मछली घर में रख दे। ऐसा करने से सभी मछलियाँ मर जाती हैं।

[शत्रु मारण मन्त्र-१]

ॐ नमो वीर तो हनुमंत वीर भूरि मूठि चलावै तीर मैं की रूख नाखी तोड़ि लोहु सोखि मेरा वैरी तेरा भक्षिह तोड़ि कलेजा चाख सब धर्म की हाथई बजे धर्म की लाल में बलि तुम्हारे कहां गए भूरे बाल उलटि पछाड़ पछाड़े तो माता अंजनी की आन शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के समय होली से पहले रात में बिना वस्त्र धारण किये निर्जन स्थान में उक्त मन्त्र की दस माला जपकर थोड़े से काले उड़दों को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु पर फेंक दे। ऐसा करने से कुछ दिनों में शत्रु की मृत्यु हो जाएगी।

[शत्रु मारण मन्त्र-२]

ॐ सुरेश्वराय स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक आश्लेषा नक्षत्र में एक अंगुल लम्बी सर्प हड्डी लाकर उसे उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर अपने शत्रु के घर में दबा दे। ऐसा करने से शत्रु की सन्तान मर जाएगी और शत्रु भी जीवित नहीं बचेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु मारण मन्त्र-३]

ॐ हुं हुं फट् स्वाहा ।

साधक चार अंगुल लम्बी घोड़े की अस्थि लाकर अश्विनी नक्षत्र में उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में दबा दे तो शत्रु अपने पूरे परिवार सहित नष्ट हो जाएगा।

[शत्रु मारण मन्त्र-४]

ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के समय चार अंगुल की मानव हड्डी की कील बनाकर पुष्य नक्षत्र काल में उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके अपने शत्रु के घर में दबा दे। ऐसा करने से साधक के शत्रु का पूरा वंश ही खत्म हो जाएगा यानि घर कोई भी सदस्य जीवित नहीं बचेगा।

[शत्रु मारण मन्त्र-५]

ॐ नमो अमुकस्य हन हन स्वाहा ।

साधक कनेर के फूलों को सरसों के तेल में भिगोकर उक्त मन्त्र से दस हजार बार हवन करे तो साधक का शत्रु निश्चय ही मर जाएगा।

[शत्रु मारण मन्त्र-६]

ॐ नमः कालरूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर साधक उक्त मन्त्र से सात बार मानव हड्डी के चूर्ण को अभिमन्त्रित कर पान में मिलाकर जिस किसी को खिला देता है उसकी मृत्यु हो जाती है।

[शत्रु मारण मन्त्र-७]

ॐ चांडालिनी कामाख्या वासिनी वन दुर्गे क्लीं क्लीं ठः ठः स्वाहा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्पश्चात् साधक शनिवार को कुंकुम और गोरोचन से भोजपत्र पर 'स्वाहा मारय हुं अमुकं ह्रीं फट्' लिखकर 'अमुक' की जगह अपने शत्रु का नाम लिखे तथा उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गले में धारण कर ले। ऐसा करने से साधक के शत्रु की मौत हो जाएगी।

[शत्रु मारण मन्त्र-८]

ॐ नमो वीर तो हनुमंत वीर सूर्य का तेज शत्रु की काया अदीठ चक्र देवी कालिका चलाया चल रे बादी न कर बाद मैं करिहौं तेरे जीव का घात मैं न डरूं तेरे गुरु पीर सूं मारूं ताने एक तीर सूं मेरा मारा ऐसे घूमै जैसे भुजंग की लहर परै तोहि गिरता मारूं बाण फेरि चलो तो यती हनुमान की आन शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक शनिवार के दिन अपने दाहिने हाथ में रात के समय उड़द लेकर सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु पर फेंक दे। ऐसा करने से शत्रु कुछ ही दिनों में निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा।

[शत्रु मारण मन्त्र-९]

ॐ शु खले स्वाहा ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक बिच्छू का डंक, छैबुदिंया कीड़ा और क्रौंच के बीजों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने शत्रु के वस्त्र पर डाल दे तो शत्रु एक सप्ताह में ही गुल्म रोग से ग्रस्त होकर मर जाएगा।

[शत्रु मारण मन्त्र-१०]

ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुं हुं ठः ठः ।

साधक मानव हड्डी को कील के आकार का बनाकर उक्त मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित कर जलती हुई चिता में डाल दे। ऐसा करने से शत्रु असाध्य ज्वर से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त करता है अर्थात् मर जाता है। यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक मानव हड्डी को उक्त मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में अथवा श्मशान में दबा दे तो शत्रु परिवार सहित नष्ट हो जाता है।

[शत्रु मारण मन्त्र-११]

ॐ ऐं ह्रीं महा विकराल भैरवाय ज्वालाक्ताय मम शत्रु दह दह पच पच उन्मूलय उन्मूलय ॐ ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

साधक श्मशान में जाकर भैंसे के चर्म के आसन पर बैठकर काले ऊन की माला से प्रतिदिन रात के समय एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र का जप करे तथा मन्त्र का जप समाप्त होने पर साधक सवा सेर सरसों से हवन करे। ऐसा करने से साधक के शत्रु की अवश्य रूप से मृत्यु हो जाएगी।

[शत्रु मारण मन्त्र-१२]

खंग मारे कालिका भुजंग मारे भैरव झपट के मारे दुर्गा कहे अलमस्त वो ही पस्त जो मुझको सताये ।

साधक किसी भी शनिवार को श्मशान में जाकर वस्त्रहीन होकर उक्त मन्त्र का जलती चिता के समक्ष बैठकर रात भर जप करे तथा सूर्योदय से पहले ही चिता को नमस्कार कर कोयला और राख लेकर लौट आए। साधक राख में शत्रु के पैर की मिट्टी मिलाकर शत्रु का पुतला बनाए। साधक शत्रु का पुतला बनाने के लिए पीली मिट्टी का पुतला बनाए। तत्पश्चात् साधक शत्रु के पुतले को कोयलों के ढेरों पर रखकर श्मशान से लाया हुआ कोयला शत्रु के पुतले की छाती पर रखे तथा कोयलों से पूर्ण रूप से ढककर पुतले में आग लगाकर उक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से शत्रु का पुतला जैसे-जैसे आग से घिरता जायगा वैसे-वैसे ही शत्रु ताप-पीड़ा से ग्रस्त हो जाएगा। जब आग पूरी तरह से जलकर चटकने लगेगी तो शत्रु की मृत्यु हो जाएगी।

[शत्रु मारण मन्त्र-१३]

ॐ सुरेश्वराय स्वाहा ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के समय सर्प की एक अंगुल लम्बी हड्डी की कील बनाकर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में दबा दे। इस प्रकार करने से शत्रु की संतान मर जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु मारण मन्त्र-१४]

ॐ नमो काला भैरों मसानवाला चौंसठ योगिनी करैं तमाशा रक्त बाण चल रे भैरों कालिया मसान मैं कहूं तो सों समुझाय सवा पहर में धुनि दिखाय मुवा मुरदा मरघट वास माता छोड़े पुत्र की आस जलती लकड़ी धुकै मसान भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेली सिंगी रुद्र बाण मेरे वैरी को नहीं मारो तो राजा रामचंद्र लक्ष्मण यती की आन शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक दस हजार बार मन्त्र को जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक श्मशान में जाते मुरदे की हांडी को किसी प्रकार प्राप्त करे। साधक साथ ही यह भी ध्यान रखे कि मुरदे को कहाँ जलाया जा रहा है। तत्पश्चात् साधक रात्रि में जाकर मुरदे की चिता पर हांडी को गरम करे। हांडी के गरम हो जाने पर साधक उसमें थोड़े-से उड़द के दाने डाल दे। जब उड़द भून जाए तो साधक हांडी को किसी साफ जगह पलटकर फूले उड़द एक ओर कर ले तथा जले हुए उड़द को अलग कर ले। अब साधक जले हुए उड़द को लेकर उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर शत्रु पर फेंक दे तो शत्रु की मृत्यु हो जाएगी। साधक ध्यान रखे कि यह सब कार्य प्रातः उठते ही करे यानि यह कार्य बासी मुँह करे।

[शत्रु मारण मन्त्र-१५]

ॐ नमः काल भैरों कालिका तीर मार तोड़ बैरी की छाती तोड़ हाथ काल जो काढ़े बत्तीसी यदि यह काज न करे नोखिनी योगिनी का तीर छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक काली कनेर के एक सौ आठ पुष्प और गुग्गुल के छोटे-छोटे एक सौ आठ टुकड़े लेकर श्मशान में जाए तथा वहाँ दक्षिण की ओर मुख कर जलती चिता में गुग्गुल और पुष्पों से हवन करे। ऐसा करने से साधक का शत्रु तीन सप्ताह के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ विविध रोगनाशक मन्त्र ❀

[सर्वरोगहर निवारक मन्त्र]

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला ऊपर अंजनी जिन जाया हनुमंत नेहला टेहला कांख की कखराई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कंठ की कंठमाला घुटने का डंहरू डाढ़ की डढ़शूल पेट की ताप तिल्ली फिया इतने को दूर करे भस्मंत नातर तुझे माता अंजनी का दूध पीया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का ।

सात शनिवार तक व्रतपूर्वक हनुमान जी को मूर्ति के सामने धूप-दीप जलाकर नैवेद्य अर्पित कर इस मन्त्र की प्रतिदिन एक माला जपने से मन्त्र प्रभावी हो जाता है। तत्पश्चात् कखनारी, बद, कंठमाला, दाढ़ का दर्द, कनफेड, नजर जैसे रोगों में मन्त्र से झाड़ा देना चाहिए। पेट की ताप, तिल्ली जैसे रोगों को छुरी अथवा चाकू से झाड़ना चाहिए। रोग निवृत्ति होने पर हनुमान जी को प्रसाद अवश्य चढ़ाना चाहिए।

[पीलियानाशक मन्त्र]

ॐ नमो वीर बैताल असराल नारसिंह देव तुषादि पीलिया कूं मिटाती कारै झारै पीलिया रहै न नेक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक इस मन्त्रानुष्ठान को हनुमान जी की मूर्ति के सामने एक हजार नित्य के क्रम से इक्कीस दिनों तक इक्कीस हजार बार जपकर चैतन्य कर ले। तत्पश्चात् जब कभी कोई पीलियाग्रस्त रोगी उसके पास आए तो रोगी को बैठाकर कांसे की कटोर में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखे और हाथ में कुशा (एक प्रकार की घास) से तेल को हिलाते हुए मन्त्र को इक्कीस बार बोले। जब तेल पीला-पीला हो जाए तब कटोरी को रोगी के सिर से नीचे उतार ले। ऐसा कम से कम तीन दिनों तक करने से पीलिया रोग ठीक हो जाता है। रोग ठीक हो जाने के पश्चात् हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाने के साथ-साथ गायों को भी घास व पक्षियों को अनाज देना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[दन्तपीड़ा निवारक मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु को वन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत कीड़ा मकूड़ा माकड़ा ये तीनों करे भस्मंत गुरु गोरख की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

होली, दीपावली की रात में या ग्रहणकाल में इस मन्त्र को दो हजार सात (२००७) बार जप कर इतनी ही आहुति देकर इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर प्रयोग के समय नीम की टहनी से इकतीस बार झाड़ा देने से दाँत की पीड़ा दूर हो जाती है।

[आधासीसी निवारक मन्त्र-१]

शंकर शंकर खोजा नाई शंकर बैठे जंगल माई भूत बैताल जोगिनी नचाय सब देवन की जय जय मनाय गोरखनाथ के पूजे पाय अधकपारी दर्द छुड़ाय ।

होली, दीपावली अथवा ग्रहण के समय इस मन्त्र की दस माला जपकर एक सौ आठ बार लोबान की आहुति देने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर प्रयोग करते समय इकतीस बार मन्त्र को पढ़कर फूंकने से रोग दूर हो जाता है।

[आधासीसी निवारक मन्त्र-२]

ॐ नमो बन में बिआई बांदरी खाय दुपहरिया कच्चा फल कांदरी आधी खाय कै आधी देत गिराय हूंकत हनुमंत के आधासीसी चलि जाय ।

रोगी को अपने समक्ष बैठाकर धरती पर चाकू से सात रेखा खींचकर मन्त्र को सात बार पढ़ने से आधासीसी रोग दूर हो जाता है।

[सिरदर्द निवाकर मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु का
केश में कपाल कपाल में भेजा
भेजा में कीड़ा कीड़ा करे न पीड़ा
कंचन की छैनी रूपे का हथौड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिता ईश्वर गाड़ इन श्रापे
को गोरखनाथ तोड़े
सबद सांचा पिंड काचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

किसी भी शुभ मुहूर्त्त में पड़ने वाले रविवार अथवा मंगलवार अथवा अमावस्या से प्रारम्भ करके इकतीस दिन तक प्रतिदिन एक सौ आठ (१०८) बार मन्त्र जाप तथा इकतीस बार मन्त्र की लोबान से आहुति देने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोगकाल में इक्यावन बार मन्त्र बोलते हुए सिर पर सात बार फूंक मारने से सिरदर्द दूर हो जाता है।

[पेट दर्द निवारक मन्त्र]

ॐ नून तूं सिंधु नून सिंधु वाया ।
नून मंत्र पिता महादेव रचाया ।।
महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया ।
गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाया ।।
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई ।
आदेश हाड़ी रानी चंडी की दुहाई ।।

सेंधानमक का एक टुकड़ा दाहिने हाथ की तीन उंगलियों से पकड़कर इस मन्त्र को तीन बार बोलकर अभिमन्त्रित करके टुकड़े को पेट दर्द के रोगी को खिला देने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

[मिरगी रोग निवारक मन्त्र]

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्रीराम जी फूंके ।
मृगी बाई सूखे सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा ।।

साधक उक्त मन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर मिरगी रोग से पीड़ित व्यक्ति के गले में बाँध दे। ऐसा करने से मिरगी रोग की निवृत्ति होती है।

[स्तनों में दूध बढ़ाने का मन्त्र]

गुरु गोरखनाथ दुग्धं कुरु कुरु स्वाहा ।

जिन स्त्रियों के बच्चे दूध का पान करते हों और उनके स्तनों का दूध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूख गया हो अथवा दूध कम आता हो तो इस मन्त्र का उच्चारण करने से लाभ होता है। इसके लिए मन्त्र को इकतीस बार दूध में पढ़कर पिलाना चाहिए। यह प्रयोग तीन दिन का है।

[मासिकधर्म पीड़ा निवारक मन्त्र]

आदेश श्री रामचंद्र सिंह गुरु को तोडूं गाठ औंगा ठाली तोड़ दूं लाय तोड़ि देऊं सरित परित देकर पाय यह देखि हनुमंत दौड़कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै ।

पान के बीड़े को मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके मासिकधर्म की पीड़ा से पीड़ित स्त्री को खिलाने से पीड़ा से निवृत्ति होती है।

[प्रसव पीड़ा निवारक मन्त्र]

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुंच मुंच स्वाहा आं मुक्ता पाशा विपाशश्च मुक्ता सूर्य्येण रश्मयः मुक्ता सर्ध्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा ।

एक हाथ में खींचे हुए कुएँ का जल लाकर उसे आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके इस जल को गर्भवती स्त्री को पिला देने से प्रसव पीड़ा दूर हो जाती है और बच्चा सुख से पैदा हो जाता है। किन्तु ध्यान रखें कि उस जल को पृथ्वी पर कदापि नहीं रखना है।

[भूख-प्यास निवारक मन्त्र]

ॐ सा सं शरीर अमृत माषाय स्वाहा ।

साधक यह मन्त्र किसी भी शुभ मुहूर्त्त में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग करते समय केसर व लटजीरा के बीज को समान मात्रा में लेकर, पीसकर, मीठी वस्तु में मिलाकर गोली बना ले। फिर एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके तांबे क यंत्र में भरकर मुँह में रख ले ऐसा करने से भूख प्यास नहीं लगती।

[बालरोग नाशक मन्त्र-१]

पानी तीनि पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी शिवशक्ति आदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमारी अब छार मार सब तोही की ताई कहहु कतहुं का होउ धैले आउ बालक के तोके मोके पुण्य जब होय महादेव के जटा परे पार्वती के आंचर जो यह बालक दुख पावै ।

कांसे के कटोरे में शुद्ध जल लेकर इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके वह जल बाल रोगी को पिलाने से वह स्वस्थ हो जाता है।

[बालरोग नाशक मन्त्र-२]

ॐ सतनाम आदेश गुरु का आदेश पवन पानी का नाद अनाहद दुंदुभी बाजै जहां बैठी जोगमाया साजै चौंसठ योगिन बावन वीर बालक की हरै सब पीर आठों जात शीतल जानिये बंध बंध बारे जात मसान भूत बंध, प्रेत बंध, छल बंध, छलिद्र बंध सबको मारकर भस्मंत सतनाम आदेश गुरु का ।

उक्त मन्त्र का सात, ग्यारह अथवा इक्कीस बार उच्चारण करते हुए बाल रोगी को मोर पंख से झाड़ा देने से दोष अर्थात् रोग दूर हो जाता है तथा बालक स्वस्थ हो जाता है।

[मसानरोग नाशक मन्त्र]

सफेदा मसान, गुरु गोरख की आन ।
भयदंड मसान, काल भैरों की आन ।
सुकिया मसान, नोना चमारी की आन ।
फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन ।
हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन ।
पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन ।
कमेदिया मसान, कालिका की आन ।
कीकड़िया मसान, रामचंद्र की आन ।
सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन ।

बालकों को अक्सर मसान रोग हो जाता है। इस प्रकार के रोगी बालक को इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से यह रोग दूर हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्वरोग नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
काली कमली वाला श्याम ।
उसको कहते हैं घनश्याम ।
रोग नाशे, शोक नाशे ।
नहीं तो कृष्ण की आन ।
राधा मीरा मनावे ।
अमुक का रोग जावे ।

उक्त मन्त्र सभी रोगों के शमन के लिये है। जब यह न समझ में आए कि रोगी को कौंन सा रोग हुआ है तब उक्त मन्त्र को बोलकर झाड़ा देने से रोगी ठीक हो जाता है।

[सर्वरोग नाशक मन्त्र-२]

वन में बैठी वानरी, अंजनी जायो हनुमंत बाल डमरू ब्याही बिलाई आंख की पीड़ा मस्तक पीड़ा चौरासी बाई बलि बलि भस्म हो जाय पके न फूटे पीड़ा करे तो गोरख यती रक्षा करे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार बोलकर रोगी को झाड़ने से रोगी के सभी रोग दूर हो जाते हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[सर्वरोग नाशक मन्त्र-३]

ॐ क्रीं क्षं सं सं सः ।

उक्त मन्त्र से गाय के घी को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर तीस दिन तक प्रतिदिन एक पल मात्रा सेवन कर शहद पीने से रोगी के सभी रोग दूर हो जाते हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-१]

मनसामेदाम नवमे कपटी बसे कपाल हावके भले हनुमंत की आन सीसी जंग पाठान बिचान मंत्र शांती गायत्री नाम सेन देवता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोहज्ञा राजा तिजाट एक ज्वरा तिन ज्वरा चारि ज्वरा पांच ज्वरा सात ज्वरा जोर है तो राजा अजयपाल का चक्र बहे तैंतीस कोटि देवता मेरे मंत्र की शक्ति से चलें चोंचन खंड में जाए चीर न मारे वाज न खाए क्षणे बाण क्षणे दक्षिण क्षणे आसे होर अचन सोरो स्मरिरे काया विख्यात होर ।

उक्त मन्त्र से सात बार झाड़ने से कैसा भी ज्वर क्यों न हो वह छू हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-२]

श्री कृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च । ऊषा स्मरण मात्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते ।।

उक्त मन्त्र को कोरे कागज पर लिखकर धूप-दीपक दिखाकर गले में पहन लेने से ज्वर दूर हो जाता है। उक्त मन्त्र का केवल जप करते रहने से भी ज्वर दूर हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-३]

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये ।
पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र को कोरे कागज पर कोयले से लिखकर दाहिनी बांह में पहन लेने से रोज आने वाला ज्वर दूर हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-४]

ॐ नमो अजयपाल की दुहाई जो ज्वर रहे अमुक पिंडे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

जो रोगी ज्वर से ग्रसित हो उसे उक्त मन्त्र से सात बार झाड़ा देने से ज्वर दूर हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-५]

कारी कुकरी सात पिल्ला ब्याई सातों दूध पिआई जिआई बाघ थन इलोकांश्च लाय के मंत्रे तीनों जाई ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी को एकटक देखते हुए उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलकर फूंक मारने से रोगी को हर तीसरे दिन आने वाला बुखार खत्म हो जाता है।

[ज्वर नाशक मन्त्र-६]

ॐ नमो कामरूप देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक पिछोड़े एक तिजोरी तोड़े ।

जिसे तिजारी ज्वर आता हो साधक उस रोगी को अपने सामने खड़ा करके रोगी के शरीर को अपने हाथ से पकड़े जहाँ शीत लगती हो। तत्पश्चात् साधक उक्त मन्त्र से इक्कीस बार रोगी को झाड़े तो तिजारी ज्वर ठीक हो जाता है।

[वायु नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का बाल में कपाल में भेजा में कीड़ा, कीड़ा करे न पीड़ा सोना का सलाबा रूपा का हथौड़ा ईश्वर गाड़ै गोर्या तोड़े इनको शाप श्री महादेव तोड़े, शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र का सात बार उच्चारण कर गाय के उपलों की राख से झाड़ा देने पर सिर की वायु यानि मस्तिष्क वायु रोग ठीक हो जाता है।

[वायु नाशक मन्त्र-२]

कामरूप देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्र एक तोड़े एक पिछोड़े एक करेखन वाय को तोड़े शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र तुरन्त प्रभावी वायुनाशक मन्त्र है। साधक को सर्वप्रथम किसी भी शुभ मुहूर्त में उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक उक्त मन्त्र को सात बार बोलते हुए वायुरोगी को झाड़ दे। ऐसा करने से वायुरोग दूर हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[वायु नाशक मन्त्र-३]

कौन पुरवाई कहां चले ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन ही चले वागहे के कोयला ।
कोयला का करवेह सारी ।
पत्र खंड करवेहु ।
अष्टोत्तर दांत व्याधि काटे ।
सिर रावण का दश ।
भुजा रावण की बीस ।
ककुही वर वटी ।
वायु गोला बांधूं बांधूं मैं गुल्म ।
दुहाई महादेव गौरा पार्वती नीलकंठ की ।
लोना चमारिन की दुहाई, फुरो मंत्र खुदाई ।

जिस रोगी को वायुरोग हुआ हो उसे उक्त मन्त्र से सात बार झाड़ा देने से रोग दूर हो जाता है जिसके फलस्वरूप रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[बाय रोग झाड़ने का हनुमान मन्त्र]

ॐ नमो तडम उतड भड तेल करे ।
दीजे बाती तैल बरै गलत-सलत ।
तू बाई रोग निनाई रहै ।
तो यति हनुमन्त की दुहाई फिरै ।
शब्द सांचा पिण्ड काँचा ।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र को ग्रहण-काल, होली, दीपावली में श्री बजरंगी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस मन्त्र से बाय वाले रोगी का झाड़ा "भस्म" से करें तो रोगी बाय-रोग से निदान पाये।

[बवासीर नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो नमो सिद्ध नमो चौरासी उदर जड़ी रक्त सड़ी चूवे मत खड़ी पड़ी तोहे देखे लोना चमारिन धूप गूगल की दी अग्यारी जो रहे बवासीर तो हजार हराम गुरु गोरखनाथ की शक्ति आन गौरां माई की ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र किसी भी त्यौहार के समय अथवा ग्रहण काल में जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित काली मिट्टी की पट्टी पेड़ू पर बाँधना चाहिए और अभिमन्त्रित किया हुआ लाल धागा कमर में बांधना चाहिए। इसके बाद रोगी शौच के जल को अभिमन्त्रित कर गुदा धोए तो उसके रोग में काफी आराम मिलता है।

[बवासीर नाशक मन्त्र-२]

ॐ काका कता क्रोरी कर्ता ।
ॐ करता से होय ।
यरसमा दश हूंस प्रकटे ।
खूनी बादी बवासीर न होय ।
मंत्र जान के न बताए ।
द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय ।
लाख जप करे तो उसके वंश में न होय ।
शब्द सांचा । पिंड काचा ।
हनुमान का मंत्र सांचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

रात्रि के बासी फूल को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर गुदा धोने से खूनी और बादी दोनों ही प्रकार का बवासीर रोग ठीक हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[बवासीर नाशक मन्त्र-३]

ॐ छाई छूई छलक छलाई आहुम आहुम क्लं क्लां क्लीं हुम् ।

बवासीर खूनी हो या बादी, बवासीर को समाप्त करने के लिए साधक उक्त मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित कर सात रविवार और सात मंगलवार को आबदस्त ले। ऐसा करने से उसका रोग दूर हो जाएगा।

[अतिसार नाशक मन्त्र]

गंगा यमुना तीर्थेरपानि ये कहिलो काहिनी ये खाइलो पानी आइजो होइते दूर होहलो अमुकेर बन्ध्या तुलानि सिद्धि गुरु श्री रामेर आज्ञा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह बंगला भाषा का शाबर मन्त्र है। साधक एक सौ आठ बार जपकर जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर रोज कुछ दिनों तक पी ले तो उसका अतिसार रोग ठीक हो जाता है और वह स्वस्थ हो जाता है।

[आधासीसी नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
काली चिड़ी चिग-चिग करे ।
धौली आवै वासै हरै ।
जती हनुमंत हांक मारे ।
मथवाई और आधासीसी नासै ।
गुरु की शक्ति । मेरी भक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

यदि साधक उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलकर आधासीसी रोग से ग्रस्त रोगी को झाड़ा दे तो यह रोग ठीक हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[आधासीसी नाशक मन्त्र-२]

बन में जाई बांदरी जो आधा फल खाई ।
खड़े मुहम्मद हांकतें आधासीसी जाई ।।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उक्त मन्त्र ग्रहण के समय ही सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने के पश्चात् साधक आधासीसी रोग से ग्रस्त रोगी को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार झाड़ा दे तो रोग दूर हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[कंठवेल नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो कंठवेल तुम द्रुम दुराली सिर पर जकड़ी वज्र की ताली गोरखनाथ गाजता आया बढ़ती वेल को तुरंत घटाया जो कुछ बची ताही मुरझाया घट गई वेल बढ़ नहीं पावै बैठा तहां उठ नहीं पावै फूटे और पीड़ा करे तो गोरखनाथ की दुहाई फिरै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलते हुए कंठवेल रोग से ग्रस्त रोगी को झाड़ा देते हुए भूमि पर रेखाएं खींचता रहे। तत्पश्चात् साधक इक्कीसवां झाड़ा देते समय चाकू से सब रेखाएं काट दे तो कंठवेल रोग दूर हो जाएगा और रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

[कंठवेल नाशक मन्त्र-२]

ॐ नमो कंठवेल महावेल तुम दरद दियो अब हिलो चलो तुरतहि जाओ सात लोक सात समुन्दर पार जा के डूबो हमें बचाओ न जाओ तो बहत्तर हजार चमार की नांद में गिरो दुहाई बाबा महादेव की माता गोरां की ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को नवरात्र के समय रोज एक माला जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक मोरपंख से कंठवेल रोग से ग्रस्त रोगी को झाड़े। साधक झाड़ने की इस क्रिया को सोमवार से रविवार तक करे। ऐसा करने से रोगी का कंठवल सूख जाएगा।

[बाल नजर नाशक मन्त्र]

वावति वावति छोटी वावति लंबी केश वावति चलतीं कामरूप देश कामरूप देश से आइल भगाना सिर लोट पर चढ़े मसाना ठोकर मारी तीन दीख लेब छीन सत्यनाम कामरूप के, विद्या नोना योगिनी के सिद्ध गुरु के वंदौं पांव ।

यदि किसी बच्चे को नजर लग गई हो तथा व रो रहा हो, तो बच्चे के सिर पर हाथ रखकर उक्त मन्त्र को सात बार बोलकर फूंक मार देने से नजर दूर हो जाती है और बालक हँसने-खेलने लगता है।

[स्मरण शक्तिवर्द्धक मन्त्र-१]

ॐ नमो देवी कामाख्या ।
त्रिशूल खड्ग हस्त पांधा ।
पाती गरुड़ ।
सर्व लखी तू प्रीतये ।
समांगन । तत्त्व चिंतामणि ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नरसिंह चल चल ।
क्षीन कोटि कात्यायनी तालब प्रसाद ।
के ॐ ह्रों ह्रीं क्रूं त्रिभुवन चालिया ।
चालिया स्वाहा ।

साधक सबेरे स्नान करने के पश्चात् तुलसी के पौधे में जल चढ़ाने के बाद तुलसी की ग्यारह पत्तियाँ तोड़कर उक्त मन्त्र का कुछ दिनों तक रोज जप करके खाए। ऐसा करने से साधक की स्मरणशक्ति तेज होती है।

[स्मरण शक्तिवर्द्धक मन्त्र-२]

ऐं बुद्धिवर्द्धय चैतन्यता देहि ॐ नमः ।

साधक उक्त मन्त्र की छः माला जप रोज इक्कीस दिन तक करे तो साधक की स्मरणशक्ति में वृद्धि होती है।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु को श्रीराम की धुणी लक्ष्मण का बाण आंख वरद करे तो गुरु गोरखनाथ की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्यनाम आदेश गुरु को ।

साधक इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को एक हजार एक सौ नौ बार (१००९) जपकर इतनी ही संख्या में आहुति देकर सिद्ध कर ले। फिर प्रयोग करते समय इकतीस बार पढ़कर नेत्ररोग से ग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा दे तो नेत्ररोग ठीक हो जाता है।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-२]

ॐ नमः झिलमिल करे ताल की तलइया ।
पश्चिम गिरि से आई करन भलइया ।।
तहं आय बैठेउ वीर हनुमंता ।
न पीड़ै न पाकै नहीं फूहंता ।।
यति हनुमंत राखे होड़ा ।।

उक्त मन्त्र से सात दिन तक रोज सात बार नेत्र रोगी को झाड़ा देने से नेत्र रोग ठीक हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-३]

ॐ अगाली बगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कदार फट् फट् उत कट ॐ हुं हुं ठः ठः ।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को किसी भी मंगलवार अथवा रविवार को एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक जरूरत होने पर उक्त मन्त्र से नेत्र रोग से ग्रस्त रोगी को झाड़ा दे तो रोगी का नेत्र रोग ठीक हो जाएगा।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-४]

ॐ नमो आदेश गुरु का ।
समुद्र, समुद्र में खाई ।
इस मरद की आंख आई ।
पाकै, फूटै न पीड़ा करे ।
गुरु गोरख की आज्ञा करे ।
मेरी भक्ति ।
गुरु की शक्ति ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध होने के बाद साधक नमक की सात डली लेकर उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए नेत्र रोग से पीड़ित रोगी को सात बार झाड़ा दे तो रोगी का नेत्र रोग दूर होकर वह स्वस्थ हो जाएगा।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-५]

सातों रीदा सातों भाई सातों मिल के आंख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी की नांद चमार के चूल्है परै । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक को सर्वप्रथम होली अथवा दीपावली की रात्रि से शुरू कर इक्कीस दिन तक उक्त मन्त्र को प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक जिसके आँख में दर्द हो, उसको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इक्कीस बार उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा दे। ऐसा करने से रोगी का दर्द दूर हो जाएगा।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-६]

ॐ नमो झलमल जहर भरी तलाई अस्ताचल पर्वत ते आई तहां बैठा हनुमंत जाई फूटै न पाकै करै न पीड़ा यती हनुमंत राखै हीड़ा शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक को उक्त मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद जब नेत्र रोग से पीड़ित रोगी आए तो साधक नीम की हरी पत्तियों वाली टहनी से सात बार झाड़ा दे तो नेत्र रोग से पीड़ित रोगी पीड़ा से मुक्त होकर स्वस्थ हो जाएगा।

[नेत्र रोग नाशक मन्त्र-७]

उत्तर काल काहु सुत्त योग का बाछ ।
इस्माईल जोगी की दो बेटी ।
एक माथे चूल्हा, एक काटे फूला ।
दुहाई लोना चमारी की ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। उसके बाद जब कभी भी नेत्र के फूले से पीड़ित रोगी साधक के पास आए तब साधक लोहे की एक कील को इक्कीस बार मन ही मन उक्त मन्त्र पढ़कर भूमि पर ठोक दे तो नेत्रों का फूला स्वत: ही कट जाएगा और रोगी पूर्णरूप से स्वस्थ हो जाएगा।

[नेत्र बाधा निवारण मन्त्र]

'ओम अगाली गगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कार फट उत्कन हूठ।'

नेत्र बाधाओं युक्त रोगी को रविवार के दिन उक्त मन्त्र का जाप करते हुए नीम के पत्तों के झोहरे (डाल) से इक्कीस बार झाड़ा देवें तो नेत्र बाधा से मुक्ति मिल जाएगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[नेत्र पीड़ा नाशक मन्त्र]

नमो रामजी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कँवर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मन्त्र का जाप किसी शुभ मुहूर्त (पुष्य नक्षत्र, रवियोग, अमृत सिद्ध) योग के समय आरंभ करके इक्कीस दिवस तक १०००० जाप रोज करके, धूप, दीप और नैवेध आदि से पूरे मन से लक्ष्मण जी की पूजा करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता पड़ने पर केवल १०८ बार मन्त्र पढ़कर जार देने से कैसा भी नेत्ररोग या नेत्र सम्बन्धी पीड़ा दूर हो जाती है।

[नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान]

ॐ नमो झल-मल, जहर भरी-तलाई, अस्ताचल पर्वत ते आई, तहाँ बैठा हनुमन्त जाई, फूटे न पाकै करै न पीड़ा यती हनुमन्त राखै हीड़ा। शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।।

इस मन्त्र का ग्रहण-काल में सात माला का जप, हनुमान जी के विषयक सभी नियम मानते हुए करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है, फिर आवश्यकता के समय में निम्बू की टहनी लेकर इक्कीस बार रोगी के नेत्रों का झाड़ा मन्त्र जपते हुए करने से वह नेत्र पीड़ा से मुक्ति पाता है।

[नेत्र रोग नाशक हनुमान मन्त्र]

ॐ नमो वने बिआई, बानरी जहाँ-जहाँ।
हनुमन्त आँखि पीड़ा कषावरि गिहिया।
लाइ चरिउ जाइ भस्मन्तन।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए १० माला का जाप करें तो यह सिद्ध होगा। फिर जब आवश्यकता हो तब नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति के आँख पर हाथ फेरते हुए इक्कीस बार उक्त मन्त्र को जपते हुए फूँक मारें तो रोगी की व्यथा मिट जाएगी और वह सुखी होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र]

''सातों रीदा सातो भाई भातों मिल के आँख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे परै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

उक्त मन्त्र को दीपावली या होली की रात्रि से प्रारम्भ कर इक्कीस दिवस तक नित्य एक सौ आठ बार जाप कर पूजन करने से यह सिद्ध हो जाता है और आवश्यकता के समय केवल इक्कीस बार मन्त्र पढ़ फूँक मार देने से दर्द देवता विदा हो जाते हैं।

[कान दर्द दूर करने का हनुमान मन्त्र]

आसमीन नगोर।
वन्ही कर्म न जायते।।
दोहाई महावीर की।
जो रहे कान की पीर।।
अंजनी-पुत्र कुमार।
वायु-पुत्र महाबल को मार।।
ब्रह्मचारी हनुमन्तई।
नमो-नमो।।
दुहाई महावीर की।
जो पीर मुण्ड की।।

इस मन्त्र की साधन दीपावली की रात्रि में हनुमान जी विषयक समस्त नियमों अर्थात् ब्रह्मचर्य आदि को ध्यान में रख कर पाँच माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होता है।

फिर जब कोई कान दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो साँप के बिल की मिट्टी लेकर इस मन्त्र को जपते हुए इक्कीस बार झाड़ा करे तो रोगी दर्द में आराम पाएगा।

[कर्णरोग नाशक मन्त्र-१]

ॐ कनक प्रहार धंधर छार ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रवेश कर डार डार ।
पात पात झार झार ।
मार मार, हुंकार हुंकार ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
ॐ क्रीं क्रीं ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध करने के बाद साधक सर्प के बिल की मिट्टी को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फिर से मन्त्र का सात बार जप करके वह मिट्टी कान दर्द से पीड़ित रोगी के कान में लगाए। ऐसा करने से रोगी का कान का दर्द दूर हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[कर्णरोग नाशक मन्त्र-२]

आसमीन नगोट वन्ही कर्ण पीड़ न जायते, दोहाई महावीर की जो रहे कान की पीर अंजनी पुत्र कुमारी वायुपुत्र महाबल को मारी ब्रह्मचारी हनुमंतई नमो नमो दोहाई महावीर की जो रहे पीर मुंड को ।

साधक उक्त मन्त्र को सात बार बोलकर कर्णरोग से पीड़ित रोगी के कान और माथे पर फूंक मारे। ऐसा करने से रोगी के कान का दर्द दूर हो जाएगा और रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

[रतौंधी झाड़ने का मन्त्र]

मन्त्र पढ़-पढ़ के फूँके भाट भाटिन संग चली कहाँ जाव, जायेउ समुद्र पार, भाटिन कहा मैं विआयेऊ कुश की छाली विआयेऊ उपसमा छीकर मुद्रा अंडा धों सो हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल तर कर केदार पानी भरत रहै उन देखे पावा बालाउ गोडिया मेला उजाल तोके मैं अधोखी ईश्वर महादेव की दोहाई, हनुमान कै दोहाई यही समय उतरि जाइ।

सर्वप्रथम साधक मन्त्र को एक हजार आठ बार पढ़कर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् उक्त मन्त्र को पढ़कर सात बार झाड़ने से रतौंधी रोग दूर हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[रतौंधी नाशक मन्त्र]

ॐ भाट भाटिनी निकली ।
कहे चलि जाए उस पार ।
जाईब जाईब हम जाईब उस पार ।
भाटिनी बोली हम बिआईब ।
उसकी छाली बिआईब ।
हम उपस मादी पर मुंडा मुंडा ।
अंडा सोहिला तार ।
अजय पाल राजा उतर रहे पार ।
अजय पाल पानी भरत रहे मसकदार ।
यह देख बाबा बोलाऊ ।
गोडिया मेला उजाड़ ।
तके हम अधोखी, जाय रतौंधी ।
ईश्वर महादेव की दुहाई ।
रतौंधी उतर जाई ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध करने के बाद साधक रतौंधी रोग से पीड़ित रोगी को नीम की टहनी से सात बार झाड़ा दे। ऐसा करने से रोगी का रतौंधी रोग दूर हो जाएगा और रोगी स्वस्थ जाएगा।

[पसली रोग नाशक मन्त्र-१]

ॐ सत्यनाम आदेश गुरु का डंक खारी खंखरा कहां गया सवा लाख पर्वतो गया सवा लाख पर्वतो जाय क्या करेगा सवा भार को कोयला करेगा सवा भार कोयला कर क्या करेगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहास खड़ग घड़ेगा नव चन्द्रहास खड़ग घड़ क्या करेगा जात न ढोंख पसली बाय काल कूट खारो समुद्र नखेगा जगदगुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्धि करने के बाद साधक इस मन्त्र का सात बार मन्त्रोच्चारण करे और यदि पसली के रोगी को तिल्ली के तेल और असली सिन्दूर से झाड़ दे तो पसली रोग ठीक हो जाता है और वह रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[पसली रोग नाशक मन्त्र-२]

मंदिर के किनारे सुरहा गाय ।
गाय के पेट में बच्छा ।
बच्छा के पेट में कलेजा ।
कलेजा के पेट में ।
डब डबकर उमा बढ़े ।
दुहाई लोना चमारी की ।

सर्वप्रथम साधक को इस मन्त्र को किसी भी त्यौहार अथवा ग्रहण के समय लोबान जलाकर एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक एक सेर लकड़ी उंगली भर सात तिनके लेकर इक्कीस बार उक्त मन्त्र बोलते हुए झाड़े तब पसली रोग अर्थात् डिब्बा रोग ठीक हो जाता है।

[आँव रोग नाशक मन्त्र]

झमकरि झमकरि झमकरि भूरिखंडा विखंडा तो धूमकरि घूस घुमाइया ताहे स्फटिकेर मुंडि मूल करि गरल भावह ह्यानुकिक अति बड़ भिड़ि ऐ ऐ वीर सो भट संभवे भरमहा धर्मेर आज्ञा पेट समान बाप खान भूमि गमने न छाडि दे दान विमातृ खानि सहोदर साक्षी माथेर हाथ बाड़ाइलि कानाजूम करि रत्नाकर समुद्रे दिले भाषाइया बात बात चात धूप खाओ अवतार कहे मोर महि मंडल भरकर एकांधे था किया पर कांधे पड़ मोर बोले आसिवि मोर बोले चालिवि मोर बोले जावि क्रीं कारे छांड़ियां जावि महाकालीर आज्ञा ।

उक्त मन्त्र को चुटकी मन्त्र भी कहा जाता है। साधक उक्त मन्त्र का सात बार उच्चारण करते हुए आँव रोगी को सर से पांव तक चुटकी बजाते हुए झाड़े तो रोगी का आँव रोग ठीक हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[नाभि बैठाने का मन्त्र]

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी ।
नौ सो नाड़ी, बहत्तर कोठा ।
चलै अगाड़ी, डिगै न कोठा ।
चले नाड़ी रक्षा करे यती हनुमंत की आन ।
शब्द सांचा, पिंड काचा ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक को सर्वप्रथम दस हजार बार मन्त्र को जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद प्रयोग के समय साधक नौ गाँठ वाला पीला बाँस ले तथा रोगी को लेटाकर उसकी नाभि पर वह बाँस खड़ा करके उक्त मन्त्र को सात बार जपते हुए उस बाँस के छेद में जोर-जोर से फूंक मारे। ऐसा करने से उखड़ी अथवा अपनी जगह से हटी हुई नाभि अपने स्थान पर वापस आ जाएगी और रोगी ठीक हो जाएगा।

[बहती नाक रोकने का मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु का चार आटी चार घाटी नीख नीख है चौरासी घाटी बहै नीर भीजै चीर नाथ नाक थमि हो श्री नरसिंह वीर नाक न थमे तो माता अंजनी का पीया दूध हराम करे मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र का साधक मन्त्रोच्चारण करते हुए थोड़ी-सी रूई को सात बार अभिमन्त्रित करे और नाक बहने वाले रोगी की नाक में लगा दे तो नाक का रोग ठीक हो जाता है।

[दाद रोग नाशक मन्त्र]

हाथ बेगे चलाई आदिनाथ पवनपूत हनुमंत कर मोर कत मेरू चाल मंदिर चाल नवग्रह चाल दोष चाल पिनाई चाल डोरी चाल इंद्रहि चाल चालर चाल हतंत विनासह काल उठि विषि तरूवर चाल हम हनुमंत मुगरे लिंडापरो रौवर्ध छले तरू परि धार परि हियब अष्टोत्तरशत व्याधि लाव रे विशालाव अहरो विश आह दुदु वाले को पाणी पिआइब ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध करने के बाद साधक प्रयोग के समय कटोरी में जल लेकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर रोगी के जहाँ-जहाँ दाद हो, उस स्थान पर लगा दे तथा वह जल भी पिला दे। ऐसा करने से दाद रोग खत्म हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[पशु रोग नाशक मन्त्र]

ॐ नमो कीड़ा रे तू कुंड कुंडाला लाल पूंछ तेरा मुंह काला मैं तोहि बूझा तू कहाँ से आया तू ही तूने खाया अब तू जाय भस्म होई जाय गुरु गोरख नाथ करै सहाय ।

साधक सबसे पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध करने के बाद साधक आवश्यकता होने पर उक्त मत्र से सात बार ऐसे किसी भी पशु को झाड़ दे जो घाव में कीड़े पड़ने के कारण पीड़ित हो। साधक के झाड़ा देने से पशु की पीड़ा समाप्त हो जाएगी और पशु ठीक हो जाएगा।

[अंडकोष रोग नाशक मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु का जैसे कै लेहु रामचंद्र कबूत औसई करहु राध बिन कबूत पवनपूत धाऊ हर हर रावण कूट मिरावन श्रवई अंड खेतहि श्रवई अंड, अंड विहंड खेतहि श्रवई बाजं गर्भहि श्रवई स्त्री खीलहि श्रवई शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर ।

साधक उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अंडकोष को सहलाते हुए फूंक मारता जाए ऐसा करने से अंडकोष रोग जल्द ही ठीक हो जाता है।

[हिचकी रोग नाशक मन्त्र]

ॐ सुमेरु पर्वत पर लोना चमारी सोने की रांपी सोने की सुतारी हक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी बहावो लोना चमारी की दुहाई फुरो मंत्र खुदाई ।

साधक उक्त मन्त्र को इक्कीस बार बोलते हुए हिचकी रोग से ग्रस्त रोगी को झाड़ दे तो कुछ ही दिनों में रोगी का यह रोग ठीक हो जाएगा और रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[देह पीड़ा नाशक मन्त्र-१]

वात वात अकाल वात अंध वात कुनकुने वात कुट कुटरे वात आभार प्रतिचक्रे शीघ्र फट् तोमार डांके पवनपुत्र हनुमान कार आज्ञाय राजा श्री रामेर आज्ञाय ।

साधक सर्वप्रथम उक्त बंगला भाषा युक्त शाबर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्ध करने के बाद साधक सात बार मन्त्र का उच्चारण कर सरसों के तेल से किसी ऐसे रोगी की मालिश कर दे जो वात प्रभाव के कारण अपनी बगली के दर्द से परेशान है। साधक के मालिश कर देने से रोगी का रोग ठीक हो जाता है।

[देह पीड़ा नाशक मन्त्र-२]

लशकर फराउन हरदी नील गर्क शुद्ध जहां ।

साधक उक्त मन्त्र को दही और पीली मिट्टी के मिश्रण से एक सौ आठ बार भोजपत्र अथवा कोरे कागज पर लिखकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग के समय साधक पीली मिट्टी के भार के बराबर गुड़ लेकर बालकों में वितरित कर दे। साधक के ऐसा करने से कैसी भी देह पीड़ा हो दूर हो जाएगी।

[देह पीड़ा नाशक मन्त्र-३]

चलता जाय उछलता जाय भस्म करंता डह डह जाय सिद्ध गुरु की आन महादेव की शान शब्द सांचा, पिंड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्धि के बाद पहले साधक पीड़ा से ग्रस्त रोगी को उक्त मन्त्र का उच्चारण कर झाड़ा दे। तत्पश्चात् साधक रोगी के सिर से पैर जितना काला धागा लेकर उसे इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पहनाए। ऐसा करने से रोगी की देह पीड़ा (कमर दर्द इत्यादि) जल्द ही ठीक हो जाती है।

[विषनाशक मन्त्र]

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ को ।
केला अफूली गाछ खाली झूर झुराय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवी की ज्योति से विष डंक मुंहे दिखलाय ।
तू कहां रे विष माया मनसा की दुहाई ।
शिव की आज्ञा हम कहीं जे गाई ।
कि कंपन से करे विष शीघ्र नीचे आय ।
शिव भोला बुलावें और मनसा माय ।
आदेश विष हरि राई ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक मन्त्र सिद्ध करने के बाद उक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण कर विष से ग्रसित व्यक्ति को झाड़ दे अंथवा उस पर फूंक मार दे। ऐसा करने से विष का असर खत्म हो जाता है।

[सुख प्रसव का मन्त्र-१]

अं ॐ हां नमस्त्रिमूर्त्तये ।

उक्त मन्त्र को गर्भवती स्त्री को स्वयं जपना चाहिए। वह उक्त मन्त्र का जप जितना अधिक बार करेगी, उसे प्रसव के समय होने वाली पीड़ा उतनी ही कम अथवा नहीं सहनी पड़ेगी। यदि स्त्री यह जप करेगी तो उसका प्रसव सुख से हो जाएगा।

[सुख प्रसव का मन्त्र-२]

ॐ मन्मथवाहिनी लंबोदरं मुंच मुंच स्वाहा ।

सर्वप्रथम साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक मन्त्र सिद्ध होने के बाद उक्त मन्त्र से इकतीस बार अभिमन्त्रित गरम जल को यदिं गर्भवती को सेवन कराए तो प्रसव सुख से होता है।

[सुख प्रसव का मन्त्र-३]

गंगा तीरे वसेत् काशी चरेतथ हिमालये ।
तस्याः पक्षच्युतं तोयं पापयेत् चैव क्षरणात् ।
ततः प्रसूयते नारी काकरुद्रो वचौ यथा ।।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को एक ही सांस में जितने बार जप सके, जप ले। तत्पश्चात् साधक उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित गरम दूध अथवा गरम जल फिर गुड़ गर्भवती स्त्री को खिला दे तो प्रसव सुख से होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बाझपन दोष निवारक मन्त्र]

ॐ मदन महागणपते रक्षामृतमत्युतं देहि ।

एक रुद्राक्ष और दो तोले सर्पाक्षी को एक रंग की गाय के दूध में कन्या के हाथ से पिसवा कर स्त्री उक्त मन्त्र जप करते हुए ऋतुकाल में सेवन करे। ऐसी करने से अवश्य ही स्त्री का बाझपन दूर जाएगा और उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी।

[मृतवत्सा दोष निवारक मन्त्र]

छोटी-मोटी खप्पर तू धरती कितना गुण जियके बल काट कू जान विज्ञान दाहिनी ओर हनुमान रहे बाईं ओर चील चहुं ओर रक्षा करे वीर वानर नील, नील वानर की भक्ति लखि न जाय जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय आदेश कामरूप कामाख्या माई का आज्ञा हाड़ि दासी चंडी की दुहाई ।

जिस स्त्री को सन्तान तो होती है; परन्तु उसकी सन्तान मर जाय तो उस स्त्री को मृत्वत्सा कहते हैं। उपरोक्त दोष का निवारण करने लिए मछली पकड़ने वाले कांटे को उक्त मन्त्र से साधक सात बार अभिमन्त्रित कर झाड़ा दे। साधक इस बात का ध्यान रखे की वह झाड़ा देते समय उक्त मन्त्र का उच्चारण अवश्य करे। फिर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित किए हुए कांटे को ताबीज में भरकर साधक मृतवत्सा स्त्री के कमर में धारण कराये। ऐसा करने से उस स्त्री का मृतवत्सा दोष का निवारण होता है।

[संतान प्राप्ति मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु को बांझिनी पुत्रिनी एक बांझ मराक्ष जाति दूजी बांझ एक पुत्री तीजी बांझ कन्या दीनी चौथी बांझ गर्भ पातिनी चारि उन्ह एकमत भय चालि चालि कामरू माई कामरू देश कामाख्यान रानी ते इस्माइल जोगी बखानी तुहु जाऊ जोगी के पास पूरहि तोहरि मन के आस इस्माइल के संग उन्ह रति कई आंतर भेट नो नाव मां इनी नोने कहा तहु चारिहु छुछिनारि कोखित निति कीन्हन देह गारि कोखिनीति कुन्ती पांच संग खेली एक द्रोपदी पांच के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहेली सूरज देवता साखी होऊ मोरे जिव में भा संताप मोहि तजि लागे पर पुरुष के पाप बूंद निति अकरम कीन्ह तेहि ते है वंशकर चीन्ह शिव वाचा ब्रह्म वाचा लेऊ जमाऊ टोना टामना भूत-प्रेत दोष रोग जो लाख होहि तेहि जग चंडी जाऊ हिर जूं वीर ।

साधक माँ कामाख्या के प्रति श्रद्धाभाव रखकर सबसे पहले इस मन्त्र को सूर्य या चन्द्रग्रहण में जपकर सिद्ध कर ले। ग्रहणकाल खत्म होने पर स्नान करके कन्या को पूजकर उसे भोजन अवश्य कराए। कपड़ा, दक्षिणा आदि देकर खुश करे। मन्त्र सिद्ध होने पर प्रयोग के लिए साधक संतान प्राप्ति की इच्छुक स्त्री कों रजस्वला होने के तीसरे अथवा चौथे दिन इस मन्त्र से शुद्ध जल को अभिमन्त्रित कर पीने के लिए दे। ऐसा चार दिन तक करना है। अथवा तब तक करे जब तक गर्भ न ठहर जाए।

जल के जगह पर अभिमन्त्रित धागा भी दिया जा सकता है। इसके लिए पीले रंग का धागा लेकर उसमें सात गाँठें लगाए। हर गांठ पर यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़ना चाहिए। स्त्री को चाहिए कि वह उस धागे को कमर पर बांध ले। यदि एक बार में गर्भ न ठहरे तो यह प्रयोग दो तीन बार करना चाहिए। इससे औरत गर्भवती होकर पुत्र को जन्म देती है।

[सन्तान प्राप्ति मन्त्र-२]

ॐ परब्रह्म परमात्मने अमुकी गृहे दीर्घजीवी सुतं कुरु कुरु स्वाहा ।

सर्वप्रथम षट्कोण यंत्र बनाकर उसमें वाराही, ऐंद्री, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी एवं वैष्णवी आदि देवियों सात दिन तक निरन्तर पूजन करना चाहिए। साथ ही साथ मन्त्र का जप भी करना चाहिए। तत्पश्चात् आठवें दिन बालक और नौ कुवारी कन्याओं को भोजन व दक्षिणा प्रदान कर देवियों को प्रणाम कर यंत्र को नदी में प्रवाहित करना चाहिए। यदि यह अनुष्ठान कोई स्त्री स्वयं के लिए करती है तो 'अमुकी' के स्थान पर अपने नाम का उच्चारण करे तथा किसी अन्य के लिये करना हो तो 'अमुकी' के स्थान पर उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस मन्त्रानुष्ठान के प्रभाववश स्त्री को अवश्य ही पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मासिकधर्म पीड़ा नाशक मन्त्र]

ॐ नमो आदेश मनसा माता का ।
बड़ी बड़ी अदरख ।
पतली पतली रेश ।
बड़े विष के जल फांसी दे ।
शेष गुरु का वचन न जाए खाली ।
पिया पंच मुंड के बाम पद ठेली ।
विषहरी राई की दुहाई ।

सर्वप्रथम साधक उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक मन्त्र सिद्धि के पश्चात् थोड़ी-सी अदरख को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर मासिक धर्म पीड़ा से ग्रस्त स्त्री को खिला दे। ऐसी क्रियां विधिवत् करने से उस स्त्री की महावारी पीड़ा दूर हो जाएगी।

[नियमित मासिक-धर्म हेतु मन्त्र-१]

'ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का। तोडूं गांठ औंगा ठाली। तोड़ दूं लाय। तोड़ दूं सरित। परित देकर पाय। यह देख हनुमन्त दौड़कर आये। अमुक की देह शांति पाये। रोग कूं वीर भगाये। रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई। फुरो हुकुम खुदाई।'

एक सादा पान बनवाकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमन्त्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिक धर्म ठीक और नियमित समय पर हो जाएगा।

[नियमित मासिक-धर्म हेतु मन्त्र-२]

'ॐ नमो आदेश मनसा माता का। बड़ी-बड़ी अदरख। पतली पतली रेश। बड़े विष के जल फांसी दे। शेष गुरु का वचन न जाए खाली। पिया पंच मुण्ड के बाम पद ठेली। विषहरी राई की दुहाई।'

थोड़ा-सा अदरक लेकर इस मन्त्र से सात बार फूंककर मासिक धर्म में होने वाली पीड़ाओं से ग्रसित स्त्री को खिलाने से मासिक पीड़ा शांत हो जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मासिक विकार दूर करने का मन्त्र]

आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु को तोड़ू गाठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय तोड़ि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देखि मनुमन्त दौड़ कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै।

एक पान का बीड़ा ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं।

[गर्भ धारण का मन्त्र]

ॐ ह्रीं उलजाल्य ठः ठः ॐ ह्रीं ।

स्त्री का जब ऋतुकाल हो तो स्त्री-पुरुष दोनों मृगचर्म के आसन पर बैठें। इसके बाद पुरुष स्त्री के कान में उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार बोले। ऐसा करने के बाद स्त्री-पुरुष दोनों को भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करके समागम करना चाहिए तो निश्चित रूप से गर्भ ठहर जाएगा।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❁ विविध दोष निवारक मन्त्र ❁

[दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र]

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

मन्त्र को दीपवली के दिन इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें। फिर शुद्ध जल को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलानेसे कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

[नजर झाड़ने का मन्त्र-१]

ॐ नमो नजर जहाँ पद पीर न जानो बोले छल सों अमृत बानी कहो नजर कहां ते आई यहां की ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरी कहां ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहां से उड़ी कहां की जाया अब ही बस कर ले तेरी माया मेरी जात सुनो चितलाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन, तमोलन, चुहड़ी, चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी जाको दोष वाहि सिर पड़े जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी को सिर से पैर तक झाड़ने से नजर दोष का निवारण हो जाता है।

[नजर झाड़ने का मन्त्र-२]

ॐ नमः शिवाय दुष्टिदोषविनाशनाय नमः रुद्राय,
नमः उमामहेश्वराय, कं खं गं घं ङं डिम डिम स्वाहा।

मुर्गे की चोंच के ऊपरी भाग को दूध में धोने के बाद सोने या चांदी के तावीज में भरें। फिर तावीज में काले रंग का रेशमी डोरा पिरोकर उसका मुंह बंद कर दें। सोमवार के दिन प्रातः काल पूर्वाभिमुख बैठकर तावीज को अपने सामने रखकर उक्त मन्त्र का १००८ बार उच्चारण करके उसे अभिमंत्रित करें अर्थात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रत्येक बार मन्त्र पढ़ने के बाद तावीज पर एक-एक फूंक मारते चले जाएं। फिर तावीज को बालक के गले में पहना दें। इसके प्रभाव से बालक को किसी की नजर नहीं लगेगी।

एक पूरा नींबू लेकर श्री हनुमानजी का स्मरण करके **'ॐ श्री हनुमते नमः।'** मन्त्र का जप करते हुए नजर से पीड़ित बच्चे के सिर से पैर तक उतारें। फिर उस नीबू को ले जाकर किसी चौराहे पर काटकर प्रत्येक मार्ग पर फेंक दें। छुरी भी चौराहे पर ही छोड़ आएं। बुरी नजर दूर हो जाएगी।

[नजर झाड़ने का मन्त्र-३]

गुरु चरण दिया मन, श्री हरि मोक्ष कारण, देव-दानव-दैत्यादि, खाई नरसिंह वीर आसी सब उड़ाई आलाली पालाली चोटी चोटी हंकारे फूंकारि उड़ाव मारी शलि लेकर पांव पांव टुकरियां जाए, अनुकार आए, डाईनेर दृष्टि, पलायकरा अक्षा वीर नरा सिंह आज्ञा।

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दीपावली, होली में सिद्ध करके उपरोक्त मन्त्र से नजर लगे व्यक्ति को झाड़े तो नजर दोष दूर हो जाता है।

[नजर झाड़ने का मन्त्र-४]

ॐ नमो आदेश गुरु को उलटंत गोरख पलटंत काया भाग भाग जमदूत गोरखनाथ आया लोहे की कोठरी वज्र ताली आगे मेरे हरि बसे पाछे देव अनंत रक्षा हे गोरखनाथ जी की चौकी है हनुमंत की।

साधक इस मन्त्र को होली, दीपावली अथवा चन्द्रग्रहण के समय रात्रि में एक हजार आठ आहुति देकर सिद्ध कर ले। फिर कभी भी आवश्यकता पड़ने पर नजर लगे व्यक्ति को झाड़े तो नजर दोष दूर होता है।

[नजर झाड़ने का मन्त्र-५]

हरि हरि स्मरिके हय मन करुं स्थिर।
चाउर आदि फेक के पाथर आडिवीर।
डायन दूतिन दानवी देवी के आहार।
बलक गण पहिरे हाड़ गला हार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम लखण दूनो भाई धनुष लिए हाथ ।
देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माय ।
गई पराय सब डायरी योगिनी ।
सात समुद्र पार में खावे खारी पानी ।
आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई ।
आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

कई बार बच्चों को नजर आदि लगने की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे बच्चा बीमार हो जाता हैं, उलटी, दस्त, बुखार, जुकाम आदि समस्या उत्पन्न हो जाती है। निम्न मंत्र से २१ बार झाड़ा देने पर नजर उतर जाती है।

उपरोक्त मंत्र को २१ बार पीड़ित व्यक्ति (जो नजर या टोकार आदि से पीड़ित हो) के सामने पढ़े। पढ़ते समय अगरबत्ती अवश्य ही लगा लेना चाहिए।

[चुड़ैल भगाने का मन्त्र-१]

बैर वर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी ।
कहुं तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गांसी ।।

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ रात्रि में एक हजार एक बार जप कर सिद्ध कर ले। फिर प्रयोग काल में हाथ में जल लेकर ग्याहर बार मन्त्र पढ़कर उसे जल को चुड़ैल ग्रस्त व्यक्ति के शरीर पर छिड़क दे तो चुड़ैल भाग जाती है और वह व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

[चुड़ैल भगाने का मन्त्र-२]

ॐ नमो आदेश गुरु का कवलाछरी बावनवीर कलू बैठनो जल के तीर तीन पान का बीड़ा खवाऊं जेठे बैठा जतलाऊं मालीयर तोर गत बहाऊं वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए चुड़ैल बाधा से ग्रसित व्यक्ति को झाड़ने से बाधा का निवारण होता है।

[डाकिनी दोष नाशक मन्त्र]

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना योगिनी बंध डाकिनी बंध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौरासी दोष बंध अष्टोत्तर शत व्याधि बंध खेदी खेदी भेदी भेदी मारे मारे सोखे सोखे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल नारसिंह वीर की शक्ति फुरो ।

उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार बोलते हुए डाकिनी के प्रभाव से ग्रसित रोगी (स्त्री-पुरुष) को सिर से पैर तक झाड़ने से डाकिनी दोष दूर हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[टोने-टोटके नाशक मन्त्र-१]

लोना सलोना योगिनी बांधे टोना आवहु सखि मिलि जादू कवनु, कवनु देश कवनु फिर आदि अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवै बास त्यों त्यों अमुक आवै हमारे पास कवनु देवी की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहिनी ईश्वरो वाचा ।

उक्त मन्त्र का उच्चारण कर झाड़ा देने से अथवा सरसों के दानों को अभिमन्त्रित कर रोगी पर फेंक देने से टोने-टोटकों का असर नष्ट हो जाता है।

[टोने-टोटके नाशक मन्त्र-२]

सोम शनिश्चर भौम अगारी कहां चललि देई अंधारी चारि जटा वज्र के वार दीनहि बांधो सोम दुवार उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्रपाल चारि विद्या बांधिके देउ विशेष भवर-भवर दिधिल भवर गए चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पाताल से वासुकी चलु रामचन्द्र के पायक अंजनी के चीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई जो टोना रहे एडी पिंड मंत्र पढ़ि फूंकै टोना कइल न रहे ।

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए टोने-टोटके से ग्रसित रोगी पर सात बार फूंक मारने से वह ठीक हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-१]

ॐ काला भैरव कपिली जटा।
रात दिन खेले चोपटा।
काला भस्म और मुसान।
डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जरख चढ़ती गोरख मारी।
छोड़ि छोड़ि रे पापिनी बालक पराया।
गुरु गोरखनाथ का परवान आया।

साधक को उक्त मन्त्र को सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण काल में सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के समय भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को इक्कीस बार उक्त मन्त्र से उच्चारित कर चाकू से झाड़ा दे तथा इक्कीस बार ही जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर रोगी को पिला दे तो रोगी का रोग ठीक हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-२]

ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा, परबत हंस परबत स्वामी आत्मरक्षा सदा भवेत्, नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई फुरे।

सर्वप्रथम साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर उक्त मन्त्र से उपलों की राख को अभिमन्त्रित कर ताबीज में भरे। तत्पश्चात् उस ताबीज को भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त रोगी गले में काले धागे से धारण करा दे ऐसा करने से रोगी का यह दोष दूर हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-३]

गुजरे कुकाली हाथ मुरली मर्दन केश काली चलल देश विदेश पैसल जो खोखरल आसार पेस माराकर फाड़ल पेड़ भूत पकड़ दुहाई ईश्वर महादेव गौरा पारवती के छीः।

सर्वप्रथम साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद उक्त मन्त्र से भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी के बाल पकड़कर इकतीस बार झाड़ा दे तो इस प्रकार करने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-४]

हल्दी बाण बाण को लिया उठाय ।
हल्दी बाण से नीलगीरी पहाड़ थर्राय ।
यह सब देख बोलत गोरखनाथ ।
डाइन योगिनी भूत-प्रेत मुंड काटोतान ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक उक्त मन्त्र से भूत-प्रेत बाधा से ग्रसित रोगी का इक्कीस बार कच्ची हल्दी से सिर से पैर तक उतारा करके आग में डाल दे। ऐसा करने से वह व्यक्ति भूत-प्रेत बाधा से मुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-५]

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ अपर के या कटमेष खंब प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पावं देवी जांघ राखे काली का मस्तक राखे महादेव जी कोई या पिंड प्राण छोड़े छोड़े तो देव दानव भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी मंडा ताप तिजारी जूड़ी एक पहरू दो पहरू सांझ को सबेरे को किया को कराया को उलट वाही के पिंड परे इस पिंड की रक्षा श्री नरसिंजी करे शब्द सांचा पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

साधक को सर्वप्रथम उक्त मन्त्र दीपावली अथवा सूर्य या चन्द्रग्रहण काल में सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् साधक प्रयोग के लिए भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को उक्त मन्त्र का उच्चारण कर सात बार मोरपंख से झाड़ा दे तथा जल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पिला दे तो भूत-प्रेत बाधा का निवारण होता है और रोगी ठीक हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-६]

ॐ चैतन्य गोरक्षनाथाय नमः।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र सिद्ध कर ले। मन्त्र सिद्धि के पश्चात् साधक भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति को उक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण कर चाकू अथवा मयूर पंख से झाड़ा दे, मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर पिला दे तो भूत-प्रेत बाधा का निवारण हो जाता है। झाड़े के अतिरिक्त बिनौला, गोखरु, गोरखमुंडी को गाय के मूत्र में मिलाकर और सुखाकर इसकी धूनी रोगी को देने से भी भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त रोगी का रोग ठीक हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र-७]

नयन नागरी पाय घाघरी नदी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

च काना च काना पहुंच रे नागरे मसाना।
जात नहीं जतन नहीं दैत्य मसान।
इसी वक्त उतरू न जाय ईश्वर।
गौरा, गोरखनाथ, महादेव की दुहाई।

साधक सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर मन्त्र सिद्धि के बाद साधक भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति को उक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करते हुए झाड़ा दे तो उस व्यक्ति का रोग ठीक होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

[भूत भय नाशन मन्त्र]

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।।

दीपावली की रात्रि को एक हजार आठ मन्त्र जाप कर सिद्धि कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता और घुग्घु का मल (विष्ठा) ऊँट के बाल, सफेद घुघुंची, गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करने से भूत-प्रेत-वैताल-राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी, आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

[भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र]

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च-मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन, पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जप शुरू करें। ग्यारह हजार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के समय एक माला फेरने से संकट टल जाएगा।

अनार की कलम से अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर जायेगा। रवि पुष्य नक्षत्र में लिखकर पास में रखने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र]

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरुकामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते हैं।

[भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र]

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय बधिरय बधिरय मूकवत् कारय-कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

किसी को भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें व झाड़ें तो उपद्रव निश्चय ही शान्त हो। ईशान कोण की तरह मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक इस मन्त्र की साधना करें, धूप-दीप करें, ११०० जप करें तो व्यन्तर-देवका उपद्रव शान्त हो। यही नहीं जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करें तो शत्रु स्वयं परास्त हो जाएगा।

आप एक सद्गृहस्थ हैं अतः ऊपरी हवाओं से लोगों को बचाने और छुड़ाने का कार्य तो अवश्य करें परन्तु इसे अपना व्यवसाय न बनाएं। दूसरों का भला करने के लिए निःस्वार्थ भाव से जो यह कार्य करता है, उसे समाज में सम्मान और परमपिता परमेश्वर की कृपा से सभी सुख स्वयं ही मिलते रहते हैं। परन्तु जो इस कार्य को पेशा बना लेते हैं, उनका तो लोक और परलोक दोनों ही खराब हो जाते हैं, अतः इस बारे में विशेष सावधान रहें।

[जादू-टोना नाशक मन्त्र]

जय काली कलकत्ते वाली ।
जय हनुमान जय चालीस, तेरा वचन न जाए खाली ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो करे सो पाए खाली ।
अपनी चीज अपना मिल जाए ।
धरती खोल सुरपाय नखमा खो अपना ।
सो पाई तेरे गुरु का वचन न सुहाई ।
इसी वक्त जादू-टोना यहाँ से भाग जाई ।
मारूं हांक गुरु गोरखनाथ की हांक ।
ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई ।

सर्वप्रथम साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर साधक मन्त्र सिद्ध करने के बाद उक्त मन्त्र का इकतीस बार मन्त्रोच्चारण करते हुए जादू-टोना ग्रस्त रोगी के ऊपर से उपले की राख का उतारा करे और राख को बहते जल में प्रवाहित कर दे। साधक द्वारा इस प्रकार करने से जादू-टोना से ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर से जादू-टोने का प्रभाव समाप्त हो जाएगा और रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

[मूठ लौटाने का मन्त्र]

ॐ सी आई को लगाई ।
जट जट गट खट ।
उलट-पुलट लुका झुका ।
को नार नार सिद्धि ।
गोरखनाथ की दुहाई ।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

सर्वप्रथम साधक किसी भी शुभ मुहूर्त में उक्त मन्त्र को सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक जिस ओर से मूठ आए, उसी ओर काले उड़द को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर फें दे ऐसा करने से मूठ जहाँ से आई हो वहीं लौट जाएगी।

[मन्त्र की काट का मन्त्र]

तेली की खोपड़ी चाट-चाट के मैदान ।
ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान ।
मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फातिमा का बेटा ।
सूअर खाय हलाल करे पै दे पांव ।
वज्र की कील काट तो ।
माता के दूध को हराम कह ।

गुरुवार को सारी रात इस मन्त्र का जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। इस सिद्ध मन्त्र का उपयोग किसी भी मन्त्र की काट के लिए किया जा सकता है। यह मुस्लिम शाबर मन्त्र है।

[बंगला भाषी शाबरी मन्त्र]

ॐ काली घाटे काली माँ ।
पतित पावनी काली माँ ।
जवा फूले । स्थुरी जले ।
सेई जवा फूल में सीआ बेड़ाए ।
देवीर अनुर्बले ।
एहि होत करिवज्र होइवे ।
ताही काली धर्मेर ।
वले काहार आज्ञे राठे ।
काली का चंडीर आसे ।

उक्त मन्त्र माँ काली का मन्त्र है। इसे तीन बार जपकर दाहिने हाथ पर फूँक मारकर इच्छित काम करने से साधक को उसमें सफलता प्राप्त होती है।

[तंत्र वापसी का मन्त्र]

ॐ एक ठो सरसों ।
सौला राई ।
मोरो पटवल को रोजाई ।
खाय खाय पड़े भार ।
जै करै ते मरे ।
उलट विद्या ताही पर परे ।
शब्द सांचा । पिंड काचा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान का मंत्र सांचा।

फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि कोई किसी पर तंत्र प्रयोग करता है, तो थोड़ी-सी राई और नमक मिलाकर इस मन्त्र को जपते हुए सात बार तंत्र बाधा से ग्रस्त व्यक्ति पर उतार करके जलती भट्ठी में फेंक देने से न सिर्फ तंत्र का प्रभाव खत्म होता है बल्कि वह तंत्र, तंत्र करने वाले के पास ही लौट जाता है।

[गृह-बन्धन कालिका का मन्त्र]

ॐ काली-काली जप।
निशा-रात-काली।।
काली की माता।
अढ़ाई आखर के भोर।।
मैं हारौ, परची के घावो।
अण्डा खसै, सवा भरि।।
विय्या सोट, सम्हारि।
सम्हारि क घाव।।
उनठ बान्ह, बनठ बान्ह।
देवता-देवी लकेसरी।।
कासा के पेरी।
तम्बोलक बेड़ी।।
बेड़ी-पर-बेड़ी।
बारह बरस, ३६ युग के।।
भाषा देत छियो।
गुरु खोलो, तब न खुलै राज।।
हम ही खोलीं, तबही खुले।
दोहाई ईश्वर महादेव।।
गौरा-पार्वती कें सत्।
वचन के प्रमाण के।।

उक्त मन्त्र का ग्रहण काल में अनगिनत जप विधि-विधान से करें तो यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र सिद्ध होगा फिर जरुरत के समय उक्त मन्त्र को जपते हुए घर के चारों ओर सात बार रेखा खींचने से घर अलाओं—बलाओं से सुरक्षित रहेगा।

[सर्व दोष निवारण मन्त्र]

शनि दिन संध्या के समय घर कुम्हार के जाय।
चाक पे चौंसठ दीप की उल्टी चाक फिराय।।

समस्त दीपकों को घी की बात्ति जलाकर रोगी के मुख पर सन्ध्या समय उतारें तथा दूध भात शक्कर रोगी को स्पर्श करा चौराहे पर रखने से सर्व दोष नष्ट होते हैं।

[सर्वसंकट नाशक वन दुर्गा मन्त्र]

ओम् ह्रीं उत्तिष्ट पुरिषि किं स्वपिषि भयं में समुपस्थितम्।
यदि शक्यम शक्य वा तनमेभगवति शमय स्वाहा ह्रीं ओम्।।

उक्त मन्त्र को नवरात्र के अवसर पर पवित्रतापूर्वक प्रतिदिन प्रात: देवी के मन्दिर में दस हजार बार जाप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। उक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक माला जाप करने से मनुष्य अकाल मृत्यु, मार्ग दुर्घटना भय आदि अनेक विपत्तियों से सुरक्षित रहता है।

[आपत्ति निवारण मन्त्र]

शेष फरिद का कामरी निसि अस अन्धियारी।
तीनों को टालिये अनल ओला जल विष।।

उक्त मन्त्र को पढ़कर ताली बजाने से ओला, अग्नि, जल, विष आदि भय दूर होता है।

[असामयिक मृत्यु भय निवारक मन्त्र]

ॐ अघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः स्वाहा।

उक्त मन्त्र को किसी भी शुभ नक्षत्र और शुभ वार में दस सहस्त्र बार जाप कर सिद्धि कर लें और जब प्रयोग करना हो तो जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र होवे उस दिन प्रात:काल गुरमा नामक वृक्ष की जड़ लाकर गर्म जल में मसलें और फिर एक सौ आठ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर आठ माशा नित्य पान करने से अकाल मृत्यु निवारण होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[गृहबाधा शमन का मन्त्र]

ॐ शं शं शिं शिं शुं शुं शें शैं शों शौं शं शः स्वः सं स्वाहा ।

२. उक्त मन्त्र पलाश की लकड़ी पर एक हजार बार पढ़कर उस लकड़ी को घर के कोने में गाड़ देने से गृहवासियों को किसी भी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता।

[क्रोध दूर करने का मन्त्र]

ॐ नमः शान्ते प्रशान्ते ॐ ह्रीं ह्रां सर्व क्रोध प्रशमनी स्वाहा ।

जिस किसी को भी क्रोध अत्यधिक आता हो वह इस मन्त्र को नित्य सबेरे इक्कीस बार जपे। ऐसा करने से न केवल उसके क्रोध की शान्ति होगी; बल्कि घर-परिवार में भी सुख शान्ति रहेगी। ऐसा व्यक्ति मन्त्र जप करने के बाद सन्ध्या के समय पीपल की जड़ में मीठा जल चढ़ाकर धूप, दीपंक अवश्य जला दे।

[धनवृद्धि मन्त्र]

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आष पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्र दीपावली को रातभर जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद सवेरे बिस्तर छोड़ने से पहले एक सौ आठ बार जपकर सभी दिशाओं में दस-दस फूंक मारने से साधक को सब दिशाओं से धन की प्राप्ति होने लगती है।

[अचानक धन प्राप्ति का मन्त्र]

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः ।

साधक एक ऐसे काले हिरण की चर्म का आसन प्राप्त करे जो मृगशिरा नक्षत्र में मारा गया हो। ऐसे आसन पर नदी के किनारे कनकागुदी नाम के वृक्ष के पास बैठकर इस मन्त्र का इक्कीस दिनों में एक लाख जप करने से मन्त्र के प्रभाव से अचानक धन की प्राप्ति का योग बनने लगता है।

[जिन्न भगाने का मन्त्र]

माँ बादशाह सब बादशाहों के सफेद घोड़ा, सफेद पाखर जिस पर चढ़े जिन्नों का बादशाह, बारह कोस अगाड़ी, बारह कोस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिछाड़ी, जो कुछ काम कहूं बजा लावे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

साधक इस मन्त्र को किसी भी शुभ मुहूर्त्त में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। इसके बाद जिन्न बाधाग्रस्त व्यक्ति पर अभिमन्त्रित जल छिड़के तो मन्त्र के प्रभाववश जिन्न उस व्यक्ति को छोड़ देता है।

[वीर मुहम्मद मन्त्र]

अंतरकुशी खुदाय तिऊंगा कटोरा लोहे के कोट वज्र का ताला, अल्लाह नबी बैठे रखवाला हाथ की पांव की उरिया धुरिया तैंतीस कोस की बलाय जात रहे वीर मुहम्मद तेरी आन।

वीर मुहम्मद का यह मन्त्र ऊपरी बाधाओं को दूर करने का श्रेष्ठ मन्त्र है। यह स्वत: सिद्ध है। इस मन्त्र के प्रयोग से भूत-प्रेत-जिन्न आदि ऊपरी बाधाओं का निवारण भली प्रकार से किया जा सकता है।

[भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र]

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरु-कामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते हैं।

[विपदा निवारक मन्त्र]

शेष फरिद का कामरी निसि अस अंधियारी। चारों को टालिये अनल, ओला, जल, विष।।

यह मन्त्र अत्यन्त सरल है। इस मन्त्र केवल पढ़कर ताली बजाने से ओला आग, जल, विष आदि का भय दूर हो जाता है।

[चूहे भगाने का मन्त्र]

पीत पीतांबर मूसा गांधी ले जाइहु गोरख तु बांधी ए गोरख लंका के राउ एहि कोणे पैसेहु सहि कोणे जाऊ।

रविवार को स्नान करके हल्दी की पाँच साबूत गांठें तथा थोड़ें से साबूत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चावल लेकर मन्त्र का उच्चारण करते हुए चूहों के बिल में डाल देने से चूहे गायब हो जाते हैं।

[सौभाग्यवर्द्धक मन्त्र]

ॐ ह्रीं कपालिनी कुल कुंडलिनी मे सिद्धि देहि भाग्यं देहि देहि स्वाहा ।

यह मन्त्र कृष्णपक्षीय चतुर्दशी से अगले मास की कृष्णपक्षीय त्रयोदशी तक नित्य एक हजार बार जपने से स्त्रियों के सौभाग्य में वृद्धि होती है' वे परिवार में सभी की प्रिय बन जाती हैं।

[शीघ्र विवाहकारक मन्त्र]

मक्खनो हाथी जर्द अंबारी
उस पर बैठी कमाल खां की सवारी
कमाल खां कमाल खां मुगल पठान
बैठे चबूतरे पढ़े कुरान
हजार काम दुनिया का करे
एक काम मेरा कर
न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार वीर
पैगंबरों की दुहाई ।

यह अत्यन्त प्रभावशाली शाबर मन्त्र है। इस मन्त्र का जप जितना अधिक से अधिक किया जायेगा विवाह उतनी ही शीघ्र होता है।

[ऋद्धि-सिद्धिकरण मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को ।
गजानन वीर बसे मसान ।
अब दो ऋद्धि का वरदान ।
जो जो मांगू सो सो आन ।
पांच लड्डू शिर सिंदूर हाट बाट की ।
माटी मसान की ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेष ऋद्धि सिद्धि हमारे साथ ।

शब्द सांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

भण्डारा प्रारम्भ करने से पहले साधक बूँदी के पाँच लड्डू पर कामिया सिन्दूर लगाए। गणपति जी की पूजा करे। तत्पश्चात् कलश के ऊपर एक लड्डू रखकर कुएँ पर से जल भरे और मन्त्रोच्चार कर चार लड्डू कुएँ में डाल दे। फिर कलश स्थापित करके मन्त्र का एक हजार बार जप करके ब्राह्मणों को भोजन कराए। ऐसा करने से भण्डारगृह में अनाज की कमी कभी नहीं होगी।

[ऋद्धि-सिद्धिकरण मन्त्र-२]

ॐ नमो पद्मावती पद्मावती पद्मानने लक्ष्मी दायिनी बाछां भूत-प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्वशत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी सिद्धि ऋद्धि वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्यै नमः ।

गोरोचन, गुग्गुल, छार-छबीला, कर्पूर, कचरी को बराबर मात्रा में लेकर एक समान गोलियाँ बनाए तथा शनिवार अथवा रविवार की आधी रात से जपना प्रारम्भ करके नित्य बाईस दिन तक एक सौ आठ मन्त्र जपे और हवन करे। साधक पूजा में लाल वस्तुओं का प्रयोग करे तथा लाल कपड़ा ही धारण करे। ऐसा करने से साधक को ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है।

[जुआ में जीतने का मन्त्र-१]

समुद्र, समुद्र के बीच टापू, टापू में द्वीप, द्वीप पै पाठौ, पाठे पे बैठी चांद कुमारी । तिन या कही-सुनी हो राजा राम, जो कोई या मूठ जीते, हनुमंत करै सहाई, मेरी भगत गुरु की सकत फुरै मंत्र ईश्वरो वाचा । वाचा ते कुवाचा होई तो कुंभी पाक नरक में पड़े । धोबी की सोंधनी चमार की छोहड़ में पड़े ।।

जुआ का खेल आरम्भ होने से पहले साधक उक्त मन्त्र श्रद्धाभाव से इक्कीस बार जपे। इससे उसे जुआ में विजय प्राप्त होगी।

[जुआ में जीतने का मन्त्र-२]

ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं बानरी विजयपति स्वाहा ।

साधक यह मन्त्र दीपावली की अर्द्धरात्रि में अश्वत्थ (पीपल) के पेड़ के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीचे एक सौ आठ बार जपे तथा इतनी ही बार कदम्ब के फूलों से हवन करे। प्रयोग के समय कदम्ब का एक फूल लेकर उस पर सात बार मन्त्र पढ़े और दाहिने हाथ में फूल को बाँधकर जुआ खेले तो साधक निश्चित ही जीतेगा।

[भयनाशक मन्त्र]

या अली मुलख वीर ।

साधक गुरुवार को सूर्यास्त केबाद किसी मजार पर जाए और हिना का इत्र तथा प्रसाद चढ़ाकर गुलाब की अगरबत्ती अथवा धूप लजाकर यह मन्त्र लाल हकीक की माला पर इक्कीस हजार बार जपे। प्रयोगकाल में एक सौ आठ बार जपे। ऐसा करने से किसी भी तरह का भय नहीं रहेगा।

[दंगल (कुश्ती) जीतने का मन्त्र]

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी अंग पहरू भुजंगा पहरू लोहे शरीर आवत हाथ तोडूं पांव तोडूं सहाय हनुमंत वीर उठ अब नृसिंह वीर तेरो सोलह सौ श्रृंगार मेरी पीठ लगे नाहीं तो वीर हनुमंत लजाने तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिंदूर अपनी देहु सबल मोरी पर देहु भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

साधक उक्त मन्त्र किसी भी मंगलवार से जपना शुरू करके चालीस दिन तक जपे। साधना काल में नित्य गेरू का चौका लगाकर लाल लंगोट धारण करे। हनुमान जी की मूर्ति के समक्ष लड्डू का भोग रखे। तत्पश्चात् एक सौ आठ बार मन्त्र जप कर दंगल में उतरे। ऐसा करने से निश्चय ही विजय प्राप्त होगी।

[मुकद्दमा जीतने का मन्त्र]

ॐ क्रां क्रां क्रां धूम्रसारी बदाक्षं विजयति जयति ॐ स्वाहा ।

उक्त मन्त्र साधक पुनर्वसु नक्षत्र काल की त्रयोदशी में सुरही के चर्म के आसन पर नदी तट के पास मूंगे की मांला जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् प्रयोग काल में सात बार उच्चारण करके जाए तो मुकद्दमें में जीत प्राप्त होती है।

[चोर पकड़ने के लिए हनुमान मन्त्र]

ॐ नमो सत्तर सौ पीर।
चौंसठ सौ यौगिनी।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बावन सौ वीर।
बहत्तर सौ वीर।
बहत्तर सौ भैरों।।
तेरह सौ तन्त्रा।
चौदह सौ मन्त्रा।।
अठारह सौ परबत।
सत्तर सौ पहार।।
नौ सौ नदी।
निन्यानवें सौ नाला।।
यति हनुमन्त।
गोरखनाथ रखवाला।।
काँसे की कटोरी।
चार अंगुर चौड़ी।।
कहौ वीर कहाँ से चलाई?
गिरनार परवत से चलाई।
अठारह भार वनस्पता।।
चल लोना चमारिन।
वाचा फूटे।।
काली कुम्हारी चाक।
ज्यों-ज्यों फिरै।।
कहाँ-कहाँ जाय?
चण्डाल के घर जाय।।
तिहाँ लावे चोर को।
चण्डाल को, गड़ा-धन बताय।।
चल-चल रे हनुमन्त वीर।
जहाँ चले, वहाँ रहे।।
न चले, तो गंगा-जमुना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उल्टी बहें, न चले, तो सीता।।
माता की छाती, अंजनी मैय्या।
के सिर पर पैर रखे, सत्-।।
के हनुमान होबे, तो चोर।
के गाड़े धन के पास ठहरबे।।
दुहाई रामचन्द्र के।।

उक्त मन्त्र की साधना इक्कीस दिन की है, साधक श्री रामदूत हनुमान जी विषयक समस्त नियमों अर्थात् ब्रह्मचर्य आदि का पालन करते हुए एक माला का जप व दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर प्रयोग करने के पहले ही काँसे की एक छोटी-सी चार अंगुल की कटोरी लेकर दीपावली को कटोरी की विधिवत् पूजनादि करे व एक पाव के लगभग काले उड़द को मन्त्र से शक्तिकृत कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख लें, जब किसी का चोरी गया धन या चोर का पता करना हो तो तब उस कटोरी को चौंक में रखकर, अभिमन्त्रित उड़दों को मन्त्र जपते हुए कटोरी पर मारें तो कटोरी चलने लगेगी जब कटोरी रुके तो फिर उड़द मारें इस तरह वह कटोरी वहीं जाकर रुकेगी जहाँ धन होगा।

[चोर पकड़ने का मन्त्र]

ॐ नमो इंद्राग्नि बन्य बांधाय स्वाहा ।

यह मन्त्र भोजपत्र पर लिखकर सफेद मुरगे के गर्दन में बाँधकर मुरगे को बड़े से टोकरे से ढक दे। अब जिस किसी पर भी चोरी करने का संदेह हो उसका हाथ टोकरे पर रखवायें। ऐसा करने से जो चोर होगा, उसके हाथ रखते ही मुरगा बोल पड़ेगा।

[चोर भय निवारण कालिका सिद्ध मन्त्र]

ॐ-काली-करालिनी स्वाहा।
ॐ-काली-कपालिनी स्वाहा।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं चोर बंध ठं ठं ठं।

उक्त मन्त्र का ग्रहण-काल में पुस्तक में लिखी विधि विधानुसार अनगिनत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है, सिद्ध होने के बाद जब आपको कभी किसी वस्तु की चोरी हो जाने की आशंका हो तो भस्म या सफेद सरसों ग्रहण कर इक्कीस बार अभिमंत्रित कर उक्त मन्त्र जपते हुए उस स्थान को चारों ओर घेर दें तो चोर उस सुरक्षा रेखा को तोड़ कर अन्दर न जा पाएंगे।

[गड़ा धन दीखने का मन्त्र]

ॐ नमो विघ्न विनाशाय निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा ।

किसी भी शुभकाल व शुभ मुहूर्त में साधक इस मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् जिस स्थान पर धन गड़ा होने की आशंका लगे वहाँ धतूरे के बीज, सफेद घुंघुची, हलाहल, मैनसिल, गन्धक, उल्ली की बीट व शिरीष के पेड़ का पंचांग समान भाग में लेकर सरसों के तेल में पकाये। फिर इसी की धूप देकर मन्त्र का दस हजार बार जप करे। ऐसा करने से उस स्थान से भूत-प्रेत-पितर हट जाते हैं तथा गड़ा धन दिखाई देने लगता है।

[अकाल मृत्यु निवारक मन्त्र]

ॐ अघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः स्वाहा ।

साधक उक्त मन्त्र को किसी भी सोम्यवार, नक्षत्र में दस हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। प्रयोगकाल में रविवारीय पुष्य नक्षत्र को सुबह गुरमा वृक्ष कीजड़ लाकर गरम जल में मथ ले तथा उसे एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर आठ माशा प्रतिदिन सेवन करे तो अकाल मृत्यु नहीं होती है।

[निर्भीकता का मन्त्र]

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट् ।

उक्त मन्त्र को प्रतिदिन पाँच सौ बार जपने से जपकर्त्ता को सभी सुखों की प्राप्ति होने के साथ ही वह निर्भिक भी हो जाता है।

[पशुओं के दुग्ध वृद्धि का मन्त्र]

ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलाम् ।

उक्त मन्त्र को प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपकर पशुओं को चारा खिलाने से गाय-भैंसादि पशुओं के दूध में अतिशय वृद्धि होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अन्न अधिक उपजाने का मन्त्र]

ॐ नमः सुरम्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा ।

उक्त मन्त्र को साधक दस जार बार जपकर सिद्ध कर ले। तब प्रयोग काल में पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के दिन बहेड़े वृक्ष का बांदा लाकर उसे एक सौ बाठ बार अभिमन्त्रित कर उस खेत में गाड़ दे जिसकी उपज में वृद्धि करना है।

[बंधन मुक्ति मन्त्र]

ॐ नमोऽतुऽते भगवते पार्श्व चंद्राधरेंद्र पद्मावती सहिताय मेऽभीष्ट सिद्धि दुष्ट ग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा । स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा । हिलहिलि मातंगनि स्वाहा । स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा ।

ग्रह बन्धन या तंत्र बन्धन की अवस्था में यह मन्त्र नवरात्र के दिनों में इक्कीस बार प्रतिदिन जपने से अनिष्ट ग्रह का बन्धन दूर होता है, साथ ही साथ किसी तान्त्रिक द्वारा किया गया बन्धन भी दूर होकर साधक को सुख-शान्ति की अनुभूति होती है।

[सर्व विघ्नहरण मन्त्र]

ॐ नमः शांते प्रशांते ॐ ह्रीं ह्रां सर्व क्रोध प्रशमनी स्वाहा।।

उपरोक्त मन्त्र को प्रति दिन प्रातःकाल इक्कीस बार पाठ कर मुख मार्जन करने से परिवार के समस्त प्राणी सदा शान्त एवं निर्विघ्न जीवन व्यतीत करते हैं। सायंकाल पीपल की जड़ में शर्बत चढ़ा, धूप दीप प्रज्ज्वलित करें।

[क्रोध शान्ति का मन्त्र]

भूल भूल की तोला मूकी ।
उठ मेल की पाताल ।
कूंडे लाग ।
भेल की सभा जुड़े ।
भेल की चले आगे ।
आगि जारि सलाम करि ।
भेल की लागे, तारे बेड़े ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंजरे पांजरे लाग, चुके मुके लाग ।
होक सिद्धि गुरुकृपा दुहाई ।
काटर कामिक्षा रमा ।
हाडिर झिर आज्ञा, चंडिरूपा ।

कोई भी व्यक्ति यदि बहुत ज्यादा क्रोधित हो तो इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीन फूंक उस व्यक्ति पर मार देने से उसका क्रोध शान्त हो जाता है।

[तन्त्र माया नाशक मन्त्र-१]

ॐ श्री अस्थापन तामें करहु जामें राम भलाई गुणियां के जो गुण काटो तो इसमें नहीं मनाही दुहाई कामरू कामाक्षी नैना योगिनी की शब्द सांचा, पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

कोई व्यक्ति यदि किसी तान्त्रिक के माया जाल से ग्रसित होकर पीड़ित है, तो इस मन्त्र का जप करते हुए झाड़ा देने से रोगी तान्त्रिक के माया जाल से मुक्त हो जाता है।

[तन्त्र माया नाशक मन्त्र-२]

अब पारीस संभ्रम कायवेध ।
छेद का ज्ञान विज्ञान फूटै ।
अमुकार गाय हंका चंडी तो ।
हमारे माशिल पाथर परे ।
अमुकार गासे मारैस समारै मुमारै ।
रोड़ास उल्टा वेधे ।
विरूपाक्ष बिराली ।
उल्टा वेधे पिंडोमानायै ।
मोरे पिंडे करे ।
धा उल्टा वेधे ।
डाँक्तुलखाः फोड़ फोड़ ।
दंडी विरूपाक्षरे आज्ञा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि कोई व्यक्ति तंत्र के प्रभाव में हो तो इस मन्त्र को जपकर प्रतिदिन सुबह तीन घंट जल पी ले। ऐसा करने से तंत्र का असर नष्ट हो जाता है।

[सर्प उत्कीलन का मन्त्र]

कीलन भाई कुकीलनी ।
वाचा भया कुवाच ।
जाहु सर्प घर आपने ।
चुग फिर चारों मास ।

यदि किसी ने साँप को कील दिया है तो उसके उत्कीलन के लिए उक्त मन्त्र को पढ़कर सात बार फूंक मार देने से साँप पुनः चलने लगता है।

[हिंसक पशु भय निवारण मन्त्र]

'या खालिस या मुखालिस या खल्लास काम अवेरा सहम को मुक्किल तुमको ख्वाजा तुमको मुईउद्दीन लिए मोर कांटा चोहरा नाहर सर्पा बिच्छू अमां चोर चाड़ बंधाय सत्य नाम आदेश गुरू को साँचा ईश्वरो वाचा।'

नौचन्दी जुमेरात को किसी दरिया (नदी) के किनारे बैठकर घी का दीपक जलावें, लोबान की धूनी देवें और उपरोक्त मन्त्र को १११०१ बार जाप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जब कभी भी विषैले जीव-जन्तु या हिंसक पशु से सामना हो तो उक्त मन्त्र को सात बार पढ़ने से समस्त भय दूर हो जाएगा और वह जीव-जन्तु वापिस लौट जाएगा।

[कार्यसिद्धि मन्त्र-१]

पहले नाम भगवान का दूजे नाम औतार तीजे नाम सत्गुरु का जिनका नाम गोरखनाथ उनकी कृपा और उनकी दया इस ख्वाजा खिदर पूजने के लिए परसाद लेकर आया लोना चमारी दिरंत की दुहाई, वैष्णो शाकुंबरी और औतार पीर-पैगंबर इन सबकी दया के साथ दरिया के किनारे जिससे हमारी आत्मा ठंडी लोना चमारी की दुहाई वस्तम पेरूल युसूफ की तरह भूरे देव की तरह सत्यनारायण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की तरह मैंने भी पैर बढ़ाया लोना चमारी की दुहाई हरि हरि शिव शिव जयंती भद्र-काली।

यदि साधक किसी भी महीने के शुक्लपक्ष को शाम के समय एक देसी पान, दो साबुत लौंग, सात बताशे लेकर नदी के तट पर जाए और उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जपे तथा सभी सामग्री नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो साधक के सभी रूके हुए कार्य पूरे हो जाते हैं।

[कार्यसिद्धि मन्त्र-२]

सत्यनाम आदेश गुरु का, ॐ गुरु गोरखनाथाय नमः।

यदि साधक किसी भी कार्य को करने के लिए घर से निकलने के पहले उक्त मन्त्र की तीन माला जप ले तो उस कार्य में साधक को सफलता प्राप्त होती है।

इस प्रकार करने के लिए मन्त्र का जप करने के बाद इक्यावन बार हथेलियों पर फूंक मारकर चेहरे पर फिराकर साधक जिस किसी व्यक्ति के सामने जाता है, वह व्यक्ति साधक का सम्मानपूर्वक कार्य कर देता है अर्थात् साधक का कार्य सिद्ध हो जाता है।

[सर्व-कार्य सिद्धिदाता हनुमान मन्त्र-१]

ॐ पीर बजरंगी।
राम-लक्ष्मण के संगी।।
जहाँ-जहाँ जायें।
फतह के डंके बजायें।।
दुहाई माता।
अंजनी की आन।।

उक्त मन्त्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए अनगिनत जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय जब आप को किसी से अपना कोई कार्य करवाना हो तब कार्य प्रारम्भ करने से पहले या अभिलाषित व्यक्ति के पास जाते समय उक्त मन्त्र को जपते हुए जायें तो कार्य की सिद्धि होगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्व-कार्य सिद्धि दाता हनुमान मन्त्र-२]

ॐ विनायक कण्ठा बेठो आय।
सबके पहली सिमर सूँ भूल्या।।
राय बताय, अंजनी-पुत्र, पवन-।
पुत्र, सूद-पुत्र, मैं हुंकारु।।
जद ही आओ, मेरा काम।
सिद्ध कर ल्यावो, हनुमान्।
बजर की काया, जद हुँकारुँ।
जद ही धाया, मैं जाणू पारी।।
जातः, तू जलम्यो अमावस।
की रातः लूँग-सुपारी-जायफल-।।
तीनू पूजा लेय, सीध पैरूँ।
बैठ के तीधारा खाण्डा लेय।।
अटक-अटक लंका-सा कोट।
समुद्र-सी खाई, लोह की कील।।
बजर का ताला, आ बैठ हनुमन्त।
वज्र रखवाला, आव हनुमन्त।
जल्दी आव, हमारा काम सिद्ध।
करि ल्याव, शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।।
चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

उक्त मन्त्र का अनुष्ठान ४१ दिन का है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन एक माला का जप व दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा।

यह अनुष्ठान किसी भी मंगलवार से शुरु कर सकते हैं। अब आप किसी कार्य के शुभारम्भ में या किसी अन्य कार्यों के समय उक्त मन्त्र की एक माला जपें तो समस्त कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सुख-शान्ति का मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिंड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवंता जावंता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

ऐसे कई प्रकार के घर होते हैं जहाँ कभी-कभी किसी कारण से क्लेश, उपद्रव, अज्ञात भय, ऊपरी ताकतों का प्रभाव हो जाता है। ऐसा होने पर यदि साधक घर में शान्ति बनाए रखने के लिए मृग के चमड़े के आसन पर बैठकर उक्त मन्त्र से खीर की एक सौ आठ अहुतियाँ दे तो उस घर में सुख शान्ति स्थापित हो जाएगी।

[सुख-शान्ति का मन्त्र-२]

बलवान बलवते बाबा हनुमान वीर हनुमान, वीर हनुमान आन करो यह कारज मोरो आन हरो सब पीर मोरी, आन हरो तुम इंद्र का कोठा आन धरो तुम वज्र का कोठा दुहाई मच्छिन्दर नाथ की दुहाई गोरखनाथ की ।

साधक किसी भी शुक्रवार की रात्रि को पीला कपड़ा पहन कर, पीले आसन पर बैठकर, पीली ही माला से उक्त मन्त्र का जितना अधिक से अधिक जप कर सके, करे। यदि साधक यह क्रिया करता है तो उसे घर तथा बाहर दोनों ही जगह सुख-शान्ति की अनुभूति होगी।

[व्यापार वृद्धि मन्त्र-१]

भंवर वीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठे जो डंडी बिके जो माल भंवर वीर की सौंह नहीं खाली जाय ।

उक्त मन्त्र बिक्री बढ़ाने का अत्यन्त प्रभावशाली मन्त्र है। यदि साधक उक्त मन्त्र का प्रयोग तीन रविवार तक करता है तो साधक को उसकी सफलता मिलती है। साधक को प्रयोग के समय उड़द के कुछ दाने उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने दुकान अथवा व्यापार स्थल पर बिखेर देने चाहिए।

[व्यापार वर्धक मन्त्र-२]

ॐ नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगंबर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बैठा, सुलेमान पैगंबर के चार मुवक्किल, पहला पूर्व को धाया देव दानवों कूं बांधि लाया दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत कूं बांधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अयुत पितर को बांधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को बांधि लाया, चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें छल-छिद्र कोऊ रहन न पावे रोग दोष को दूर भगावे शब्द सांचा, पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि साधक उक्त मन्त्र का प्रयोग विधिपूर्वक करता है तो साधक के व्यापार में जो भी व्यवधान है उसका निवारण हो जाता है और साधक के व्यापार में आश्चर्यजनक ढंग से लाभ होने लगता है। साधक उक्त मन्त्र के प्रयोग के लिए वस्त्र के चार पुतले बनाकर उन्हें मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात् साधक अपने दुकान या व्यापार स्थल पर चार कोनों में चारों पुतले अलग-अलग दबाकर रोज सुबह उक्त मन्त्र की एक माला जपे। साधक के ऐसा करने से उसके व्यापार में वृद्धि होगी।

[व्यापार वृद्धि मन्त्र-३]

श्री लुल्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोमीट तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहीई।

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोलें और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करें तो उस दिन ब्रिकी बढ़ती है और किसी प्रकार का कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती। इस मन्त्र को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला जपना ही पर्याप्त है।

[व्यापार वृद्धि मन्त्र-४]

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासिनी महालक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खावोमीट तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक कोई भी व्यापार का कार्य शुरु करने से पहले उक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार उच्चारण कर ले। यदि साधक ऐसा करता है तो मन्त्र के प्रभाव से उसके व्यापार में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी, अपितु साधक के व्यापार में वृद्धि ही होगी। उक्त मन्त्र स्वत: सिद्ध और अतिशीघ्र असर दिखाने वाला है।

[बंधा व्यापार करने का मन्त्र-१]

ॐ नमो आदेश गुरु को बावन बार चौंसठ सातऊ कलवा पांचऊ वड़वा जिन्न भूत परीत देव दानव दुष्ट मुष्ट मैली मसान इन्हीं को कील कील नजर दीठ मूठ टोना टारे लोना चमारी गाजे या धंधे-दुकान की बरकत को बंधन न छुड़ावै तो माता हिंगलाज की दुहाई ।

यदि साधक की दुकान या व्यापार को किसी ने तंत्र-मन्त्र के प्रयोग द्वारा बाँध दिया हो तो नवरात्र में इस मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। सिद्धि के पश्चात् कुंवारी कन्याओं और छोटे बच्चों को भोजन कराए। फिर पाँच नीबू काले धागे में पिरोकर उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर दुकान में लटका दे। साथ ही सरसों के कुछ दाने भी इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर दुकान में बिखेर दे तो तंत्र-मत्र का प्रयोग दूर हो जाता है।

[बंधा व्यापार करने का मन्त्र-२]

ॐ ह्रीं व्यापार बंधं मोचय मोचय ॐ फट् ।

यदि साधक के व्यापार को किसी ने ईर्ष्यावश तंत्र से बांध दिया हो तो साधक को किसी पवित्र पात्र में लक्ष्मी का प्रिय श्रीयंत्र प्रतिष्ठापित कर कुंकुम, चावल अदि से उसका पूजन करना चाहिए, दीप जलाना चाहिए तथा उक्त मन्त्र का इक्कीस दिन तक अनुष्ठानपूर्वक रोज एक सौ आठ बार जप करना चाहिए। साधक के ऐसा करने से उसके व्यापार से तंत्र का प्रभाव दूर हो जाता है और साधक का व्यापार खुल जाता है।

[रोजगार प्राप्ति के लिए माँ कालिका का पंच वाण]

प्रथम वाण—

ॐ नमः काली कंकाली महा-काली मुख सुन्दर जिए ब्याली चास्वीर भैरो-चौरासी बीततो पूजूँ पान-ए-मिठाई अब बोलो काली की दुहाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीय वाण—

ॐ काली-कंकाली महा-काली, मुख सुन्दर जिए ज्वाला बीर-बीर, भैरू चौरासी बता, तो पूजूँ पान मिठाई।।

तृतीय वाण—

ॐ काली-कंकाली महा-काली सकल सुन्दरी जीहा ब्हालो चार वीर भैरव चौरासी तदा तो पूजूँ पान-मिठाई अब बोलो काली की दुहाई।

चुतर्थ वाण—

ॐ काली-कंकाली महा-काली सर्व-सुन्दरी जिए व्हाली चार-वीर भैरूँ चौरासी तण तो पूँजूँ पान-मिठाई अब राज बोलो काली की दोहाई।

पंचम वाण—

ॐ नमः काली कंकाली-महा-काली मख सुन्दर, जिए काली, चार-बीर भैरूँ चौरासी, तब राज तो पूजूँ पान-मिठाई अब बोलो काली की दोहाई।

इस मन्त्र का, मन एकाग्रचित्त कर नित्य आजीवन ११ बार पूर्व की ओर मुख कर एक नियमित स्थान पर धूप-दीप आदि विधि विधान से जप करें तो रोजगार की अति शीघ्र प्राप्ति होती है।

[धन लाभ मन्त्र]

छिन्नमस्ता ने महल बनाया धन के कारण करम कराया तारा आई बैठकर बोली यह रही दुर्गा मां की टोली गोरखनाथ कहत सुन छिन्नी मैं मछिंदरनाथ की भाषा बोला ।

साधक बृहस्पतिवार को पीले, चमकीले आसन पर बैठकर पीले अकीक की माला से उक्त मन्त्र का जप शुरू करे। साधक को यह जप इकतालीस दिन तक नियमपूर्वक करना चाहिए। साधक के ऐसा करने से उसको धन लाभ होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[महालक्ष्मी मन्त्र]

श्री शुक्ले महा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्ये नमो नमः। लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि खावोगी तो नौनाथ चौरासी की दुहाई।

दीपावली की रात्रि को एकान्त में पवित्रता पूर्वक बैठकर दस हजार बार मन्त्र का जाप कर लें और प्रतिदिन दूकान खोल गद्दी पर बैठ एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ व्यापार करें तो लक्ष्मी वृद्धि होती है।

[प्रगतिकारक मन्त्र]

कालरूप, भैरव सतरूपा कंकड़ बना शंकर देवा जहां जाऊं कामाख्या चौरा बावन वीर चौरासी पूरा गुरु गोरखनाथ कहत सुन बूझा नाम रूप के काम सौ सूझा।

साधक पीला कपड़ा धारण कर पीले आसन पर बैठकर उत्तर की ओर मुख कर उक्त मन्त्र का जप अपनी क्षमतानुसार करे। साधक जप करते समय तेल का दीपक जलाए रखे। साधक अपने सामने एक पात्र में एक नीबू रखकर उस पर सिन्दूर का तिलक लगाकर अक्षत आदि से उसे पूजे तथा उक्त मन्त्र का जप करे। साधक के ऐसा करने से उसके जीवन में प्रगति होगी।

[वाचा सिद्धि मन्त्र]

ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा।

साधक कृत्तिका नक्षत्र में सेंहुड़ वृक्ष का बांदा लाकर उक्त मन्त्र से एक सौ आठ बार सिद्ध करके दाहिने हाथ में बाँध ले ऐसा करने से वाचा सिद्धि होती है यानि साधक जो भी कहता है वही सत्य हो जाता है।

[शत्रु शामक यंत्र]

असगंध का जोता गोरखनाथ का चेला गुरु गोरख ने दांव है खेला अछतर बछतर तीन कमंदर तीन मछंदर तीन कमंदर पांच गुरु का पांच ही चेला एक गोरख का यह सब खेला शब्द सांचा, पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि साधक का कोई शत्रु उसको परेशान करता हो तो साधक को उक्त मन्त्र की साधना करनी चाहिए। मन्त्र साधना के लिए साधक एक नीबू अपने समक्ष रखकर काली धोती धारण कर उत्तराभिमुख होकर उक्त मन्त्र का एक हजार बार जप करे। साधक जप करते समय मिट्टी के बड़े पात्र में तेल का दीप जलाए रखे। साधक उक्त मन्त्र का जप रात में ही करे। साधक यदि यह मन्त्र साधना करता है तो इस मन्त्र के प्रभाव से साधक का शत्रु वैरभाव त्यागकर साधक से मित्रता करने के लिए तैयार हो जाएगा।

[दरिद्रता नाशक मन्त्र]

ॐ ऐं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं हं सः वं आपदुद्धारणाय अजामल बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

उक्त मन्त्र को स्वर्ण आकर्षण भैरव मन्त्र कहा जाता है। साधक को रात में पश्चिमाभिमुख होकर तेल का दीप जलाकर दस हजार बार उक्त मन्त्र का जप करना चाहिए। साधक के ऐसा करने से अवश्य ही उसकी दरिद्रता का नाश हो जाएगा।

[अधिक भूख लगने का मन्त्र]

ॐ नमः सर्वभूताधिपतये हुं फट् स्वाहा ।

यदि साधक भोजन को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके भोजन करता है तो वह भीमसेन की तरह अधिक खा सकता है।

[बन्धनकारी मन्त्र-१]

तेल थांभो तेलाई थांभो अग्नि वैसंदर थांभो पांच पुत्र कुंती के पांचों चले केदार अग्नि चलते हम चले अगिया परौ तुषार ।

साधक तेली के कोल्हू के पास खड़ा होकर उक्त मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करे। यदि साधक उक्त मन्त्र की साधना इस प्रकार करेगा तो कोल्हू से तेल निकलना बन्द हो जाएगा।

[बन्धनकारी मन्त्र-२]

घर बांधौं द्वार बांधौं बांधौं घर के द्वारे सोलहों डाकिनी बांधौं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो लोहे का हारे थाक थाकगे बेटी योगनी मेरे बांधौं परो लरी सहचरी जन भाव चौको बांधौं दोहाय गोरखनाथ महादेव गौरा पारवती की ।

साधक बेर की झाड़ी की टहनी ले और उसकी चार कीलें बनाए और चारों कीलों को चौवन बार उक्त मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे। उसके बाद साधक अभिमन्त्रित कीलों में से एक कील हाथ में लेकर उसे इक्कीस बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आग्नेय कोण में गाड़ दे। ऐसा करने से वह घर बँध जाता है।

[बन्धनकारी मन्त्र-३]

ॐ काली काली महाकाली ब्रह्मा की बेटी इंद्र की साली खावे पान बजावे ताली जा बैठी पीपल की डाली बांध बांध 'अमुक' को बांध परिवार समेत बांध, ना बांधे तो तुझे गोरखनाथ की आन ।

साधक सर्वप्रथम अमावस की रात्रि में काली मन्दिर में महाकाली का पूजन करे। साधक पूजन के समय देसी घी और कच्ची घानी के तेल का दीपक जलाए। तत्पश्चात् साधक काले कम्बल पर बैठकर उक्त मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर ले। तत्पश्चात् साधक को जब कभी भी किसी शत्रु अथवा किसी व्यक्ति को बाँधना हो तो साधक अपने हाथ में जरा-सी मिट्टी लेकर इकत्तीस बार उक्त मन्त्र का उच्चारण करके वह मिट्टी एक फूंक में ही उड़ा दे। ऐसा करने से वह व्यक्ति अथवा शत्रु साधक के बंधन में बँध जाता है। साधक 'अमुक' की जगह उस व्यक्ति या शत्रु के नाम का उच्चारण अवश्य करे जिसे साधक बाँधना चाहता है।

[भूत-प्रेत बोलने का मन्त्र]

ॐ धों धों ध्यान करता, अलखयति हांक देते हांकार तथा लत बोल बोल शब्द सांचा ।

साधक के द्वारा भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त किसी भी व्यक्ति को लहसुन के रस में हींग मिलाकर सुंघा देने से व्यक्ति के अन्दर घुसे भूत-प्रेत बोल पड़ते हैं।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❁ यंत्र प्रयोग ❁

यन्त्रों के प्रति भारतीय जनमानस में ही नहीं, अपितु विश्वमानव के मन में पूर्ण सम्मान और श्रद्धा है। धर्म और देवता में श्रद्धा न रखने वाले लोग भी यन्त्र के रूप में विकसित आकार-प्रकारों की वस्तुओं को अपने पास रखकर अथवा धारण करके प्रसन्न होते हैं। यन्त्रों की महाप्रभावशालिता से मुग्ध मानव ने अपने उपयोग की समस्त वस्तुओं में उनके रूपों को अंकित किया है।

जितने भी सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित धार्मिक देवप्रतिमाएँ हैं, जितने भी धार्मिक भवन-मन्दिर है, सभी के मूल में यन्त्रों की स्थापना हुयी है।

यंत्र लिखने के लिये कुछ आवश्यक नियम होते हैं। जिनका यंत्र लेखन के समय पालन करना अतिआवश्यक होता है। इन नियमों का पालन न करने पर यंत्र निष्फल हो जाते हैं।

यंत्र लेखन हेतु एकान्त स्थान, समय का पालन, ब्रह्मचर्य का पालन करना, शुभ तिथि, मुहूर्त्त, वार, आदि बातों का ध्यान रखने से यन्त्र अति शीघ्र सिद्ध होकर व्यक्ति को आशा के अनुरूप फल प्रदान करते हैं।

अब आगे इस अध्याय में हम यन्त्रों को लिखने की कुछ आवश्यक विधियों को बतलाते हैं—

वर्णभेद से वार का निर्णय

उसमें सबसे पहले वर्णभेद से वारभेद के विषय में कहा जाता है—

ब्राह्मणों को बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार, क्षत्रियों को मंगलवार और रविवार, वैश्यों को सोमवार और शूद्र को बुधवार तथा म्लेच्छों को शनिवार के दिन यदि यन्त्र लिखकर दिया जाय तो शुभ फलदायक होता है।

हस्त नक्षत्र, पुष्य नक्षत्र, मूल नक्षत्र, श्रवण नक्षत्र आदि युक्त रविवार व्यतिपात आदि अशुभ योगों का वर्णन करते हुए राजा के लिये उत्तम कहा गया है।

वर्ण के अनुसार यंत्र लिखे जाने योग्य पत्र

ब्राह्मण को भोजपत्र पर यंत्र लिखना चाहिये। राजा को ताड़पत्र पर यंत्र लिखना चाहिये। वैश्यों को कागज पर यंत्र लिखना चाहिये। शूद्र को भूमि पर यंत्र लिखना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्य के अनुसार कलम प्रयोग

शान्ति के लिये पीपल और वैश्य के लिये जाती (चमेली) की कलम से यन्त्र को लिखना चाहिये। मोहनकर्म हेतु स्वर्ण और सभी आकर्षणों की सिद्धि के लिये चांदी की कलम से यंत्र को लिखना चाहिये। मोहन के लिये कौवे के पंख से यन्त्र लिखना चाहिए। स्तम्भन के लिये हल्दी, तांबे की कलम से लिखना चाहिये। उच्चाटन तथा विद्वेषण आदि में सदा लोहे की कलम से लिखना चाहिये कलम की लम्बाई आठ अंगुल कही गई है।

जहाँ भी यन्त्र लेखन हेतु किसी विशेष प्रकार की लेखनी का उल्लेख न हो, वहाँ सोने की सलाई से यन्त्र को लिखना चाहिए।

कार्य के अनुसार लेखनी प्रयोग

वशीकरण की सिद्धि के लिये लाल लेखनी से लिखना चाहिये। स्वर्णाकर्षण की सिद्धि के लिये कस्तूरी से लिखना चाहिये।

स्तंभन कार्य में हल्दी की लेखनी से लिखना चाहिये। देवता-दर्शन के लिये केसर की लेखनी से लिखना चाहिये।

धतूरा के रस से मारण के लिये लिखना चाहिये। शत्रु के उच्चाटन के लिये सदा श्मशान के कोयले से लिखना चाहिये।

विद्वेषण में बहेड़े के रस से लिखना चाहिये। शांन्ति के लिये चन्दन से लिखना चाहिये।

जहाँ यन्त्र लेखन हेतु किसी विशेष द्रव्य का विधान न हो, वहाँ उसे गोरोचन, कपूर, केशर, कस्तूरी, चन्दन, अगर अथवा गजमद में से किसी एक द्रव्य से यन्त्र को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखन हेतु शुभ नक्षत्र

साधक को ज्ञान प्राप्ति हेतु शतभिषा नक्षत्र, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उत्तराफाल्गुनि, यश प्राप्ति हेतु रोहिणी नक्षत्र, शुभ फल प्राप्ति हेतु मूल नक्षत्र, दुःख दूर करने हेतु अश्विनी, मृगशिरा नक्षत्र, रोग से मुक्ति हेतु पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र तथा शत्रु मारण के लिए मघा नक्षत्र में यन्त्रों का लेखन कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

यन्त्र लेखन हेतु शुभ तिथियाँ

सप्तमी तिथि को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु, द्वादशि तिथि को सर्वसिद्धि के लिए, दशमी तिथि में शत्रु नाश के लिये यंत्र लेखन का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यंत्र को सिद्ध करने के लिये सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण, अमावस्या, दीपावली, होली आदि को शुभ माना जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ सिद्धि प्राप्ति यन्त्र ❀

[सर्वकार्य सिद्धि के लिए यन्त्र-१]

नीचे दिये गये यन्त्र को साधक गंगा तट पर बैठकर सरसों के रस से सवा लाख बार लिखे। इस प्रकार करने से साधक के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

५२	५५	२	४
७	३	५०	६४
१४	५२	५	१
४	९	५४	५१

[सर्वकार्य सिद्धि के लिए यन्त्र-२]

नीचे दिए गए यन्त्र को सफेद कनेर के पेड़ के नीचे बैठकर दो लाख बार लिख ले। ऐसा करने से देवी प्रसन्न होकर साधक को यन्त्र विद्या में सिद्धि होने का आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

हं	सं	चं	कं
बं	दं	पं	जं
नं	मं	मं	चं
नं	पं	मं	नं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्वकार्य सिद्धि के लिए यन्त्र-३]

यदि साधक निम्नलिखित यन्त्र को बांस की लेखनी से लिखने के पश्चात् सवा लाख की गिनती में लिखे तो उसके सभी कार्य अपने आप ही सिद्ध हो जाते हैं।

४	१४	४	४
७	३	१२	११
१४	६	६	१
४	३	१०	३१

[सर्वकार्य सिद्धिदाता यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र या कागज पर सवा लाख की संख्या में लिखे तथा धूप, दीपक आदि से पूजन करे तो साधक के सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

८१	१२	२	८
७	३	८५	८४
८७	८४	९	१
४	६	८४	८७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मनोरथ सिद्धि के लिए यन्त्र-१]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को सरसों के तेल से लिखकर वन में दबा दे। ऐसा करने से उसका मनोरथ पूर्ण होगा।

५२	५५	२	४
७	३	३६	५४
५४	५२	५	१
४	६	५४	५१

[मनोरथ सिद्धि के लिए यन्त्र-२]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को कुत्ते के नाखून से लिखकर बांधे तो उसके सभी मनोरथ सिद्ध होंगे।

४४	६२	२	७
६	४	६२	१
६४	४	६२	१
४	४	६४	४०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मनोरथ सिद्ध करने के लिए यन्त्र-३]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को रविवार के दिन कागज पर हल्दी द्वारा लिखकर नीचे अपना उद्देश्य लिख दे तथा फलीता बनाकर कोरे सकोरे में जला दे तथा सात रविवार तक इस क्रिया को करे। साधक यन्त्र लिखते समय इस मन्त्र को पढ़े—'ॐ हरनेक नमः'। इस तरह प्रयोग करने से साधक की मनोकामना जल्द ही पूरी हो जाती है।

१६	१४	२	४
७	३	१४	१४
२७	१२	५	१
४	३	१६	१६

❀ रक्षा यंत्र ❀

[अमोघ बीसा रक्षा यन्त्र]

अग्रलिखित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर ताबीज बनाकर बालक के गले में पहना दे तो नजर लगना भूत, भूत-प्रेत बाधा और अन्य किसी तरह का डर नहीं रहता है।

७	४	६	३
	४		
१	४	२	५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बाल रक्षा के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को चाँदी के पत्र पर लिखकर बालक के गले में पहना दे तो बालक हर बला से सुरक्षित रहेगा।

१४	१०	४१	१
५	७	६	१२
४	११	११	४
१६	२	३	१३

[आत्मरक्षा बीसा यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को शुक्लपक्ष पुष्य नक्षत्र के दिन अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीपक आदि देकर त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके पहन ले। इससे उसकी आत्म रक्षा होती है।

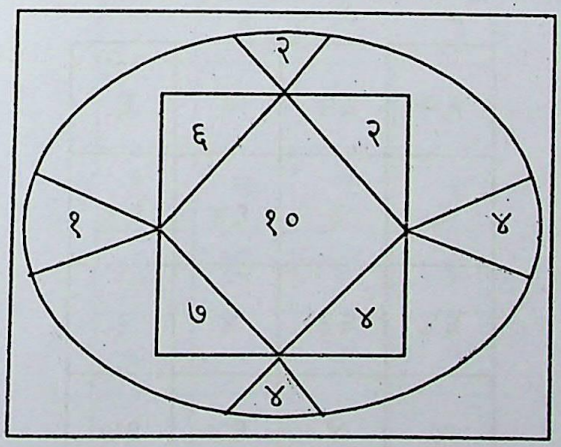

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❁ आकषर्ण यंत्र ❁

[आकर्षण के लिए यन्त्र-१]

यदि साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को रास्ते में रेत पर लिखकर चाबुक मारे तो वह जिस व्यक्ति के लिए चाबुक मारेगा तो व्यक्ति कितनी ही दूर क्यों न हो आकर्षित होकर साधक के पास आ जाएगा।

७२	३७	२	७
३	२	६	७४
७४	७३	४	१
४	४	७४	७७

[आकर्षण के लिए यन्त्र-२]

साधक निम्न यंत्र को अपनी बीच वाली अंगुलि से जल में लिखकर उसे ऊपर कोड़ा मारे तो जो व्यक्ति दूर चला गया है वह आकर्षित होकर लौट आएगा।

६२	६५	२	६
६	३	६४	६४
६४	६३	४	१
४	४	६४	६७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ मोहन यन्त्र ❀

[स्त्री मोहन यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में यदि साधक भोजपत्र पर स्त्री के दूध से लिखकर बाँ ह पर बाँध ले तो स्त्री खुद आकर माफी मांगती है साथ ही वह स्त्री साधक पर मोहित भी हो जाती है।

४४	६६	२	४
७	३	६३	६२
६४	६०	५	१
४	६	६१	६४

[राज्य मोहन यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक अनार की लेखनी से और बारुद की स्याही से लिखे तथा व्याघ्र रोग से बाँध कर पहन ले तो राज्य मोहन होता है।

४	४	४	४
२	२	२	२
दे	व	द	त्त
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
४	४	४	४
२	२	२	२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ वशीकरण यन्त्र ❀

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-१]

निम्नांकित यन्त्र को स्त्री प्याज के रस से रोटी पर लिखना चाहिए। तत्पश्चात् जिस स्त्री को स्त्री अपने वश में करना चाहती है उस पुरुष को वह रोटी खिला दे तो वह पुरुष उसके वश में हो जाता है।

६३	१	२	४
४	३	६५	३७
३५	३४	५	१
४	६	३४	३४

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-२]

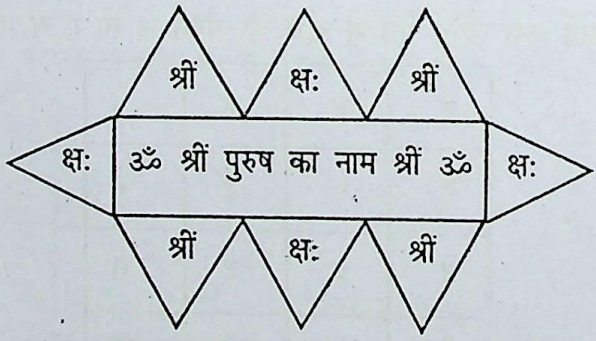

ऊपर दिये गये यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर दो मिट्टी के सकोरों में आग जलाकर पकायें। शीतल होने पर सकोरे निकाल कर यन्त्र की भस्म को पान रखकर किसी पुरुष को खिलाने पर वह वशीभूत हो जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-३]

ॐ

३	६	२१
११	३१	३
ज	२५	६

ॐ ॐ

स्वा स्वा आ स्वा

इच्छित व्यक्ति का नाम.....पिता का नाम.....

ऊपर दिये यन्त्र को शुद्ध केसर, कस्तूरी और श्वेत कपड़े पर बनाकर उस कपड़े की बत्ती बनाकर लौ में जलाएं। तत्पंश्चात् उसकी भस्म को शहद में मिलाकर इच्छित व्यक्ति को खिला देने से वह व्यक्ति हमेशा आपके वश में रहेगा

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-४]

ॐ नमो रूपाय 'अमुक' आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा

१०

ॐ नमो रूपाय 'अमुक' आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा

ऊपर दिये यन्त्र को अष्टगंध से निर्मित स्याही द्वारा छः अंगुल प्रमाण की अनार की कलम से १०८ भोजपत्रों पर किसी माह की पूर्णिमा की रात को अंकित कर पूजा के पश्चात् धूप दिखाकर नदी में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके पश्चात् किसी भी दिन इस यंत्र को पुनः कोरे कागज पर लिखकर, ताबीज में भरकर गले में धारण करने से साध्य व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है। यन्त्र में ऊपर की ओर अमुक के स्थान पर जिसका वशीकरण करना है उसका नाम लिखें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-५]

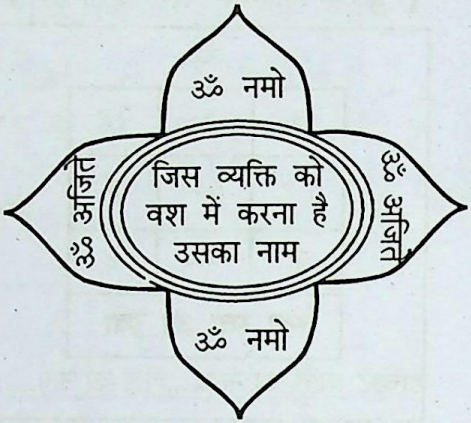

किसी पुरुष को वश में करने की कामना से ऊपर दिये गये यन्त्र को कपूर, कुमकुम, गोरोचन तथा कस्तूरी से भोजपत्र पर लिखकर तीन दिन तक धूप, दीप, पुष्प इत्यादि से पूजा करने के पश्चात् चौथे दिन एक ब्राह्मण को भोजन कराकर सोना या चाँदी से बने हुए ताबीज में भरकर गले या बाँह में धारण से वशीकरण होता है।

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-६]

मं	थं	दं	तं
पं	मं	पं	तं
यं	हं	मं	पं
हं	नं	जं	ह्रं

इस यन्त्र को अष्टगन्ध की स्याही द्वारा अनार की कलम से भोज़पत्र पर सवा लाख बार अंकित कर आटे की गोली में बंद करने के पश्चात् कड़ाही में सरसों के तेल में सुर्ख गोलियाँ तल कर बना लें। एक गोली को अपने पास रख बाकी गोलियों को अर्धरात्रि में नदी में प्रवाहित कर, घर आकर उस गोली की धूप से पूजा कर, ताबीज में पहनने से सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति वशीभूत होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-७]

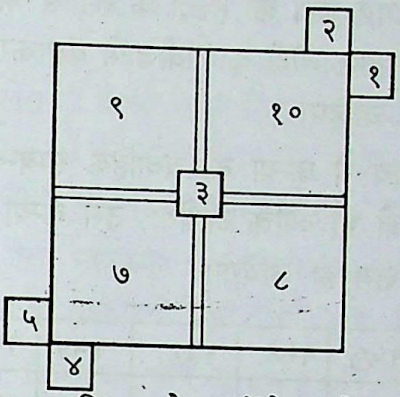

उक्त यन्त्र को बृहस्पतिवार को रात में केसर से १०८ बार कोरे कागज पर लिखकर अगले दिन उन्हें सुबह नदी में प्रवाहित कर दें। इक्कीस दिनों तक लगातार यह प्रयोग करने के पश्चात् २२वें दिन रात में एक यंत्र को विधि-पूर्वक केसर की स्याही और अनार की कलम से कोरे कागज पर लिखकर ताबीज में भरकर गले में पहनने से इच्छित व्यक्ति आपके वश में हो जायेगा।

[पुरुष वशीकरण यन्त्र-८]

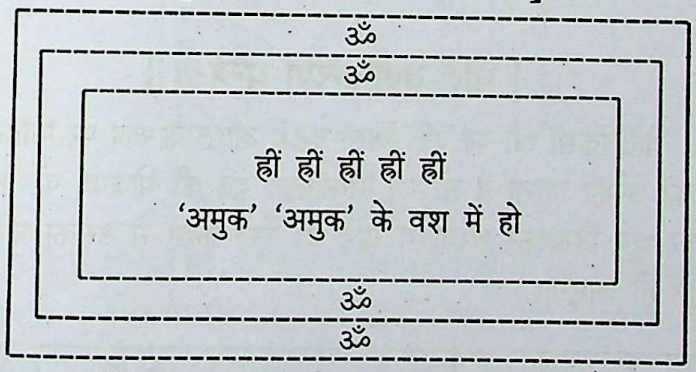

ऊपर दिये गये यन्त्र को अष्टगंध की स्याही द्वारा भोजपत्र पर लिखकर यन्त्र के मध्य में पहले अमुक के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम तथा दूसरे अमुक के स्थान पर साधक का नाम लिखना चाहिए। तत्पश्चात् विधिपूर्वक इक्कीस दिनों तक इस यंत्र का पूजन कर यंत्र को मिट्टी की हांडी में उसका मुख बन्द करके किसी सूनसान जगह पर दबा देने से साध्य व्यक्ति वश में हो जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[वरवशीकरण यन्त्र]

नीचे दिये गये यन्त्र को हल्दी के रस से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर तथा चाँदी के ताबीज में बंद करके कुआरी कन्या के हाथ में बाँध देना चाहिए।

इसके प्रभाव ये कन्या का वैवाहिक सम्बन्ध तय करने अथवा कन्या को देखने जो भी व्यक्ति आयेगा, उसे कन्या पसन्द आएगी तथा वैवाहिक सम्बन्ध तय हो जायेगा।

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१३६
१३९	१४०	१२४	११८	१४१	१४२	१४३
१४४	१२३	१४५	१२९	११९	१४६	१४७
१२२	१४८	१४९	१२८	१५०	१२०	१२१

[पति वशीकरण यन्त्र-१]

यदि किसी स्त्री का पति किसी दूसरी औरत के रूप पर मोहित है और पत्नी की उपेक्षा करता है तो स्त्री निम्नांकित यंत्र को भोजपत्र पर केसर द्वारा लिखकर धूप दिखाकर धरती में गाड़ दे। ऐसा करने से उसका पति स्त्री के वशीभूत हो जाएगा।

८	३	४	अलहुब बन फलां	६	७	२
१	५	९	अलाहुब फलां	१	५	९
६	७	२	बना फलां	८	३	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति वशीकरण यन्त्र-२]

साधिका नीचे दिए गए यंत्र को साफ भोजपत्र पर अनामिका उंगली के खून, हाथी के मद, जावक और गोरोचन को मिलकार चमेली की लेखनी से लिख ले। तत्पश्चात् खेत की स्वच्छ काली मिट्टी से गणपति जी की मूर्ति बनाकर मूर्ति के पेट में भोजपत्र को बंद करके धूप-दीया, फल आदि से गणेश जी की मूर्ति का पूजन कर नैवेद्य चढ़ाये। निम्न मंत्र को तीन बार बोले—

देव देव गणाध्यक्षः सुरासुर नमस्कृतः।
देव दक्षे महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो।।

साधिका मंत्र को बोलकर मूर्ति को एक हाथ के बराबर गहरे गड्ढे में दबा दे तो गणेश जी की कृपा से उस स्त्री का पति आजीवन उसका दास बना रहता है। यह यंत्र कई बार प्रयोग किया हुआ है।

गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं			
	क्लौं	ह्रीं	औं	गं	अमुकः	गं				
	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	ह्रीं				
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं					
	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं

[पति वशीकरण यन्त्र-३]

यदि किसी स्त्री का पति उससे रूठा रहता हो तो वह स्त्री निम्नांकित यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर धूप दिखाये तथा ताँबे के ताबीज में भरकर अपने कंठ अथवा बांह में पहन ले। ऐसा करने से उसका पति वश में जो जाएगा।

६	७	२
१	५	९
८	३	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति वशीकरण यन्त्र-४]

यदि किसी औरत का पति उससे नफरत करने लगा हो तो वह स्त्री निम्नांकित यन्त्र को भोजपत्र पर केसर द्वारा लिखकर ताँबे अथवा चाँदी के ताबीज में भरकर कंठ या भुजा में पहन ले। ऐसा करने से स्त्री का पति उसे पहले की तरह चाहने लगेगा।

६	८	५
३	४	१
७	६	५

[पति वशीकरण यन्त्र-५]

साधिक नीचे दिए गए यंत्र को गुरुवार के दिन प्याज के अर्क (रस) से रोटी पर लिखे। अपनी तर्जनी से रोटी के बीच में लिखकर रोटी पर घी अथवा मक्खन इत्यादि लगाकर वह रोटी अपने पति को खाने के लिए दे। कुछ दिन तक साधिका इस क्रिया को प्रत्येक रोटी पर करे।

यदि स्त्री को मासिक धर्म हो रहा हो तो उन दिनों में यह प्रयोग बहुत प्रभावशाली हो जाता है।

पति का नाम				
पति का नाम	७	२१	२	७	पति का नाम
	६	३	१९	५१	
	२५	२७	८	१	
	४	५	७०	२४	
पति का नाम				

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति वशीकरण यन्त्र-६]

स्वयं का नाम	२३	बिन	१२	पति का नाम
२५	१५	१३	२०	१८
२४	१४	१६	१९	२१
स्वयं का नाम	२२	बिन	१७	पति का नाम

उक्त यन्त्र को भोजपत्र पर केसर द्वारा लिखकर कमर अथवा गले में धारण करने से उस स्त्री का पति उसके वश में होता है।

[पति वशीकरण यन्त्र-७]

लाल चन्दन या अष्टगन्ध व कस्तूरी, कुमकुम से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुरू करके इस यन्त्र की सात दिनों तक धूप आदि से पूजा करें। पूजन करने के सात दिन पश्चात् सात स्त्रियों को भोजन करा कर यन्त्र को अपने गले में धारण करने से आपका पति आपके वश में हो जायेगा।

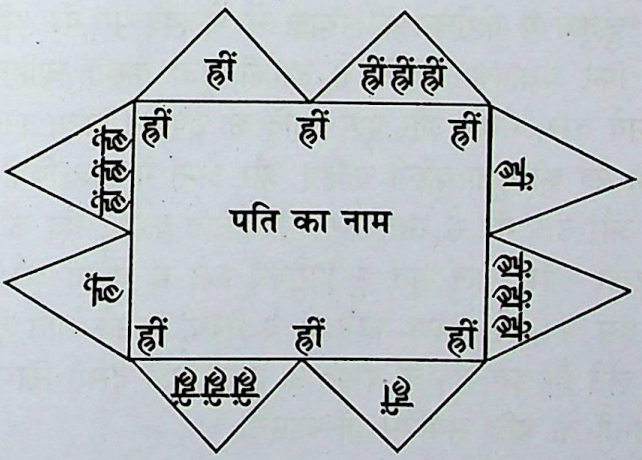

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति वशीकरण यंत्र-८]

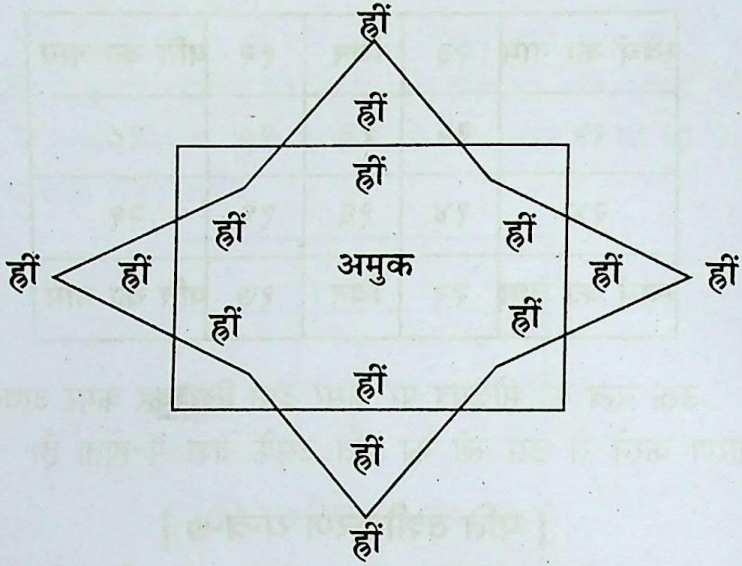

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।

उपर्युक्त यंत्र की रचना शुक्लपक्ष की त्रयोदशी की रात्रि में करनी चाहिए। अर्थात् किसी भी महीने की शुक्ल त्रयोदशी की रात में उत्तर की तरफ मुँह करके इसका निर्माण करना चाहिए। अनार की कलम और कस्तूरी, कुंकुम व गोरोचन की स्याही से भोजपत्र पर यंत्र अंकित करना चाहिए। फिर पंचोपचार विधि से उसकी पूजा करनी चाहिए। पूजा में स्वच्छ नये वस्त्र, नैवेद्य और पुष्प आदि का उपयोग किया जाता है। सात दिन तक यंत्र की पूजा करनी चाहिए और अन्त में सात विप्रों को भोजन कराकर और उक्त मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित करके, यंत्र को लाल वस्त्र में लपेटकर और लाल सूत में पिरोकर गले में धारण करें।

इस यंत्र को धारण करने से वे स्त्रियाँ जिनके पति दूसरी स्त्रियों में रुचि लेते हैं। इस यंत्र के प्रभाव से उनके पति दूसरी स्त्रियों से विरक्त होकर उन्हीं के प्रति समर्पित हो जाएंगे।

यन्त्र में अमुक के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति वशीकरण यन्त्र-९]

गोरोचन से इस यन्त्र को भोजपत्र पर अंकित कर तीन रात्रि गन्ध और पुष्प से कामदेव के नाम से पूजन कर चौथे दिन तीन सुहागिन औरतों को भोजन कराने से आपका पति आपके वश में हो जायेगा।

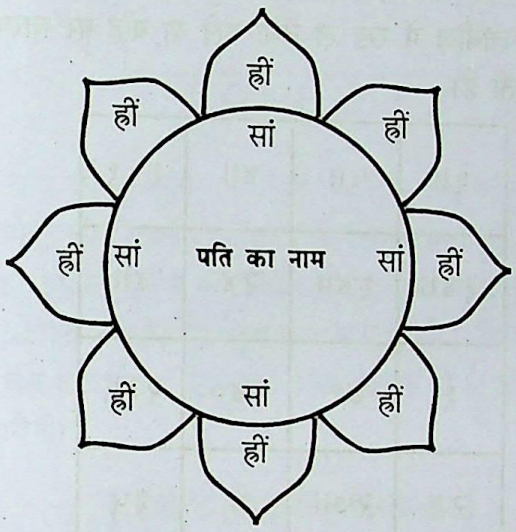

[स्त्री-पुरुष वशीकरण]

नीचे लिखे गए यंत्र को एक ओर से सिकी रोटी पर लिखकर काले कुत्ते को खिला देने से पति का वशीकरण होता है और कुतिया को खिलाने से पत्नी का वशीकरण होता है।

३३	८०	२	८
७	६	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ स्त्री वशीकरण यन्त्र ❀

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक रविपुष्य नक्षत्र के दिन पाठशानि की जड़ से लपेट कर ताबीज में रख ले तथा गले या बाँह पर धारण कर ले तो स्त्री वश में हो जाती है।

१॥	५॥	४॥	१५१
१४॥	१४॥	२४	४॥
१	४१	२४०	२३५
२१	२७॥	४	३५

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-२]

साधक को नीचे दिए गए यन्त्र की बत्ती बनाकर तिल के तेल में जलाना चाहिए। इससे कुछ ही दिनों में साधक जिस स्त्री को चाहता है, वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जायेगी

४	६	१४	१
१५	१	१५	११
४	१२	१४	७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-३]

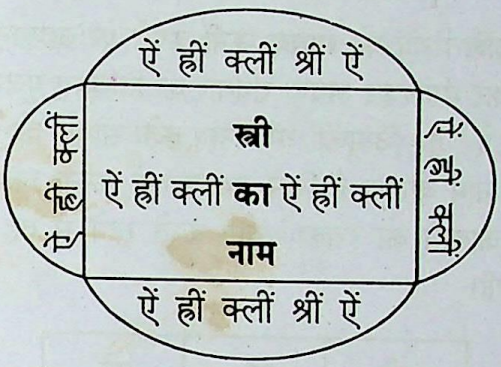

इस यन्त्र को कुमकुम, गोरोचन, कस्तूरी, लाल चन्दन इन चारों को मिश्रित कर चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखें। तत्पश्चात् राई से कामदेव की मूर्ति निर्मित कर उसके हृदय में यन्त्र स्थापित करें। इसके बाद धूप, दीप, फूल और नैवेद्य से शाम को मन्त्र '**कामोऽर्नगः पुष्पशरः कन्दर्पो मीन-केतनः। श्रीविष्णुतनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो।।**' से कामदेव का पूजा करने से इच्छित युवती आपके वश में हो जायेगी।

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-४]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को लाल चंदन के द्वारा भोजपत्र पर लिखे तथा वांछित स्त्री के समीप जाकर दिखाए तथा प्रेम का इजहार करे। ऐसा करने से वह स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

९	२७	८८	२७
११	५६	५८	३३
३३	१५	३	१
३२	७२	६४	११

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-५]

नीचे प्रदर्शित यंत्र को साधक ऊनी कपड़े पर अष्टगन्ध से कमल की लेखनी से लिखकर मंगलवार अथवा रविवार को विधिवत् पूजन कर पायस की ग्यारह आहुतियाँ देते हुए 'अमुकी' वशमनाय कहे। साधक को अमुकी के स्थान पर उस स्त्री का नाम बोलना है जिसे वह वश में करना चाहता है। तत्पश्चात् मंगलवासरीय एकादशी को इसका प्रयोग करते रहने से वह स्त्री साधक की दीवानी हो जाएगी।

ओं	ओं	ओं
ओं	अमुकीं	ओं
ओं	वश	ओं
ओं	मानाय	ओं

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-६]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र पर कुमकुम और गोरोचन से लिखे और बीच में वांछित स्त्री का नाम लिखकर चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाहिने बांह में पहन ले तो वह स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

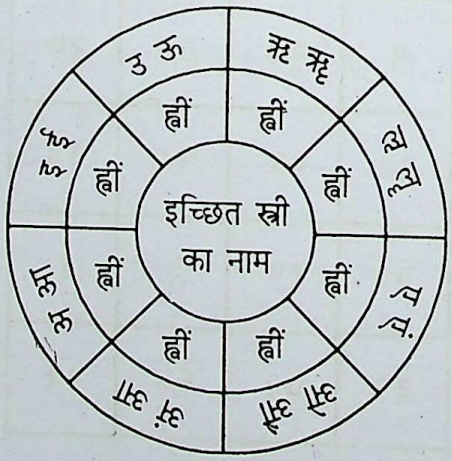

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-७]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन द्वारा लिखकर बीच में खाली जगह पर उस स्त्री का नाम लिखे जिस वह वश में करना चाहता है तथा ताबीज में भरकर कंठ में पहन ले और उस स्त्री के समक्ष जाए तो वह स्त्री निश्चय ही साधक के वश में हो जाएगी।

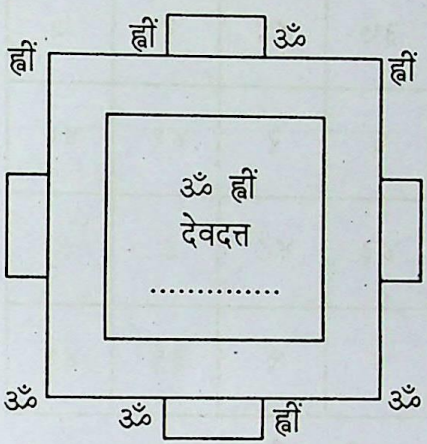

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-८]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को केसर की स्याही से जिस किसी भी स्त्री के बाएं पैर के तलवे पर बना देगा वह स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

९८	९९	२	८
७	३	६२	९१
९४	९९	९	१
४	६	९०	६३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-९]

साधक को निम्नांकित यंत्र को रविवासरीय पुष्य नक्षत्र में इक्कीस सौ बार लिखकर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् पान के पत्ते पर गुलाब जल से लिखकर किसी भी स्त्री को खिला दे तो वह स्त्री निश्चय ही साधक के वश में हो जाएगी।

३७	४४	२	७
६	२	४१	४०
४३	४८	८	९
४	९	३९	४१

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१०]

साधक नीचे दिए गये यन्त्र को भोजपत्र पर चमेली के फूल और आक (मदार) के दूध से लिखे और खाली जगह पर इच्छित स्त्री कानाम लिखे। तत्पश्चात् उसे ताबीज में भरकर कंठ में पहनकर इच्छित स्त्री के समीप जाए। ऐसा करने से निश्चय ही वह स्त्री साधक के वश में हो जाएगी।

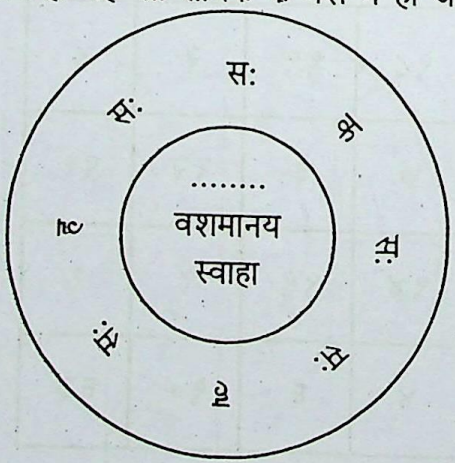

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-११]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर खाली स्थान पर इच्छित स्त्री का नाम लिखे। तत्पश्चात् फूल वाले किसी पेड़ के नीचे प्रतिस्थापित कर दे। तत्पश्चात् इक्कीस दिन तक रोज पूजा करके इक्कीसवें दिन रात को यंत्र को नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दे। ऐसा करने से अवश्य ही स्त्री वश में हो जाती है।

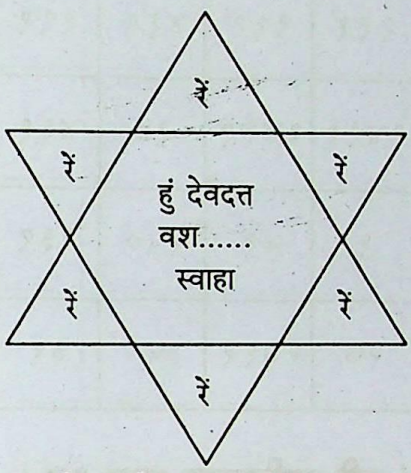

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१२]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को किसी भी ग्रहण के समय पान के अर्क से भोजपत्र पर लिखे और पूजन करने के पश्चात् चाँदी के ताबीज में डालकर गले में पहन ले तो इच्छित स्त्री का वशीकरण हो जाता है।

२३	३०	२	८
७	२	२७	२६
२८	२४	२	१
४	६	२९	२९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१३]

नीचे दिए गए यंत्र को साधक शनिवार को पड़ने वाले पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर पलाश की जड़ में लपेट कर धूनी दे तो स्त्री पुरुष के वश में हो जाती है।

१११	९११	४११	१९१
१४११	१४११	२४	४११
१	५१	२५०	२३९
२७	२७११	५	३९

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१४]

नीचे दिए गए यंत को साधक रविवार के पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर अपनी दाहिने भुजा में बाँध ले। ऐसा करने से स्त्री साधक के वश में हो जाती है। यह सिद्ध यंत्र है।

२२	३५	३२	२९
३३	२८	२३	३४
२७	३०	३७	२४
३६	२५	२६	३१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१५]

साधक को जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसकी योनि का रक्त किसी तरह से प्राप्त करके उस रक्त से नीचे निम्नांकित यंत्र को अपने बायीं हथेली पर लिखकर उस स्त्री को दिखाए तो वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी।

७	३०	६१	६०
४०	६	६९	६२
५७	५	२	८
६३	५८	९	१०

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१६]

साधक जिस स्त्री को वश में करना चाहता है, उस स्त्री के स्तन के दूध से नीचे प्रदर्शित यंत्र को शनिवार को पड़ने वाले पुष्य नक्षत्र में लिख तो वह स्त्री उस पुरुष के वशीभूत हो जाती है और उसकी आज्ञा का पालन करती है।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१७]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को पान के पत्ते पर लिखकर जिस किसी भी स्त्री को खिला देगा वह उसके वश में हो जाएगी।

३७	४४	२	७
६	२	४१	४०
४३	३४	४	४
४	४	३५	४१

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१८]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को गोरोचन और लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर बीच में 'देवदत्त' की जगह उस युवती का नाम लिखे जिसे वश में करना है। तत्पश्चात् यंत्र को घी रखने के बर्तन के बीच में डाल दे तो वह युवती साधक के वश में हो जाएगी। साधक को इस यन्त्र का प्रयोग विवाहित स्त्री पर कभी नहीं करना चाहिए।

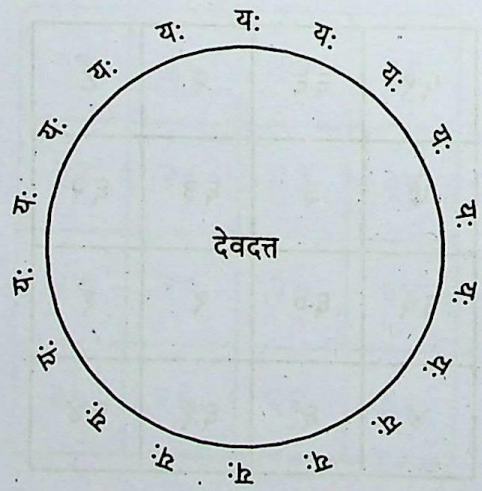

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-१९]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक अपने दाहिने हाथ की हथेली पर केसर द्वारा लिखकर सात दिन तक स्त्री को दिखाये तो वह स्त्री उसके वश में हो जाती है।

४७	४३	२	४
७	३	६१	६०
६३	४४	५	१
४	६	६३	६२

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-२०]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक केसर से अपने दाहिने हाथ की हथेली पर लिखकर प्रतिदिन सात दिनों तक साध्य स्त्री को दिखाता रहे तो वह स्त्री उसके वश में हो जाती है।

५७	६४	२	८
७	३	६१	१०
६३	५८	९	१
४	६	६९	६१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्त्री वशीकरण यन्त्र-२१]

जिस स्त्री को अपने वश में करना हो, तो इस यन्त्र को शनिवार के दिन पड़ने वाले पुष्य नक्षत्र में उस स्त्री के स्तन के दूध से लिख देने पर वह स्त्री साधक के वश में होकर उसकी आज्ञा का पालन करने लगती है।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

[मनचाही स्त्री प्राप्त करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे लिखित यंत्र को लिखकर बत्ती (रूई) बनाकर दीया जलाकर, प्रेमिका के घर की दिशा में मुख करे तो उसे मनचाही स्त्री प्राप्त होती है। लेकिन साधक के मन में भी उस स्त्री के प्रति सच्चा प्रेम होना आवश्य है।

१	८	१	११
७	१२	१२	७
६	३	३	९
५	१०	१५	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ सर्वजन वशीकरण यन्त्र ❀

[सर्वजन वशीकरण यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को लज्जालु के रस से भोजपत्र पर लिखकर पगड़ी में धारण करने अथवा टोपी में रख लेने से देखने वाले सब लोग वश में जा जाएंगे।

५२	५४	२	५
७	३	५२	५४
५७	५७	५	१
४	६	५४	५६

[सर्वजन वशीकरण यन्त्र-२]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक नागबेल के रस से भोजपत्र पर लिखे और लोबान की धुनी देकर किसी भी स्त्री-पुरुष को दिखा दे तो वही उसके वश में हो जाएगा।

२३	३०	२	४
७	२	२७	२३
२४	२४	२	४
४	६	२४	२४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्वजन वशीकरण यंत्र-३]

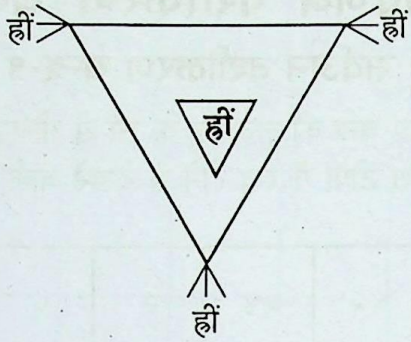

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलां स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्द्रस्तनयुगां।

उपर्युक्त यंत्र को अनार की कलम द्वारा अष्टंगध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर और ग्यारह सौ की संख्या में मंत्र का जाप करके तथा यंत्र को मंत्र से अभिमंत्रित करने के बाद चाँदी के ताबीज में भरकर व गुग्गुल की धूनी देकर अपने बाजू में बांध ले तो द्वारा राजा, स्त्री, पुरुष यहाँ तक कि जिसके सामने भी जाया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

[सर्वजन वशीकरण यन्त्र-४]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र का कांसे की कटोरी में लिखकर उस कटोरी में तेल भरकर जिस किसी व्यक्ति को दिखाएगा वही उसके वश में हो जाएगा।

३	७३	४	३
७	३	६४	६६
६६	६१	६	३
४	०	६२	६४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सर्वजन वशीकरण यन्त्र-५]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को अष्टगन्ध की स्याही से अनार की लेखनी द्वारा भोजपत्र पर इक्कीस दिन तक रोज इक्यावन बार लिखे। फिर बाईसवें दिन सब यंत्रों को जलाकर भस्म बना ले। उस भस्म का तिलक लगा लेने से सब लोग साधक के वश में जाएंगे।

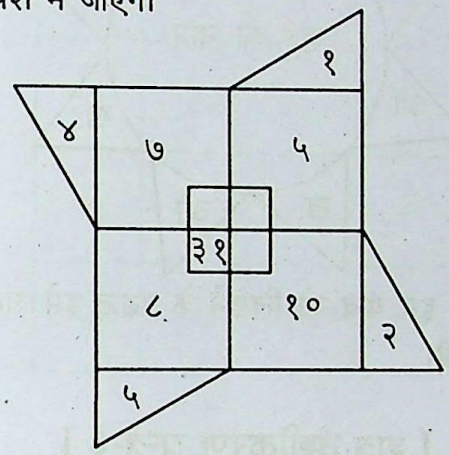

❁ शत्रु वशीकरण, मारण यन्त्र ❁

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-१]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को ताँबे के पत्र पर लोहे की लेखनी से लिखे तो उसके शत्रु का वशीकरण होता है।

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-२]

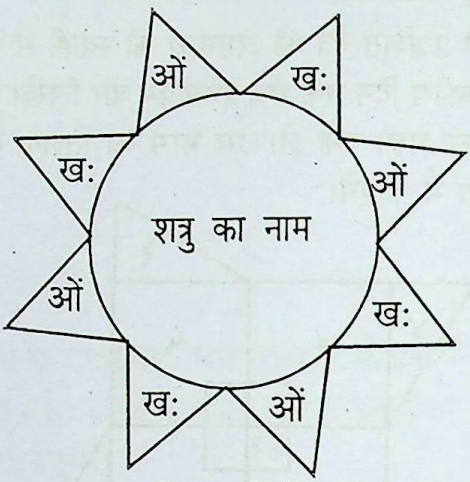

भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखने के पश्चात् इसे शहद में डालने से शत्रु वश में होता है।

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-३]

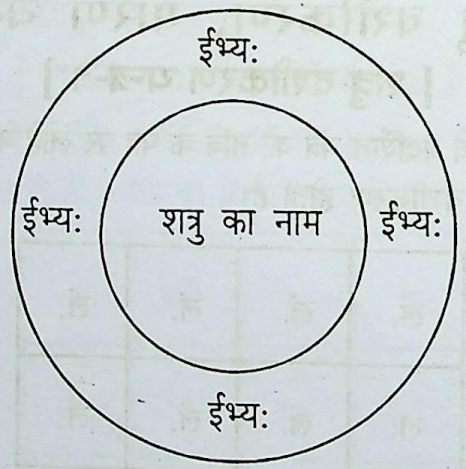

उपर्युक्त यन्त्र को कृष्णपक्ष में धतूरों के दो पत्तों पर श्मशान की राख द्वारा लिखें। दोनों पत्तों को मिलाकर लपेट कर काटों से उनमें छेद कर उसका पूजन करें। इसके पश्चात् श्मशान की भूमि में दबाकर भूतादि बलि प्रदान करें, तो शत्रु वश में हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-४]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को हल्दी से नगाड़े पर लिखे और उस नगाड़े को शत्रु का नाम लेकर बजाये तो शत्रु साधक के वश में हो जाता है।

२७	३४	२	४
७	३	३१	३०
३३	२४	९	१
४	६६	२४	२३

[शत्रु वशीरकण यन्त्र-५]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर विधिवत् लाल स्याही द्वारा नगाड़े पर लिखकर नगाड़ा बजाये। ऐसा करने से शत्रु साधक के वशीभूत हो जाता है।

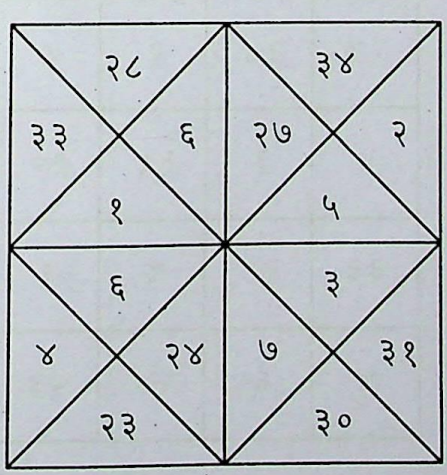

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-६]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक नगाड़े पर लाल स्याही से लिखकर नगाड़े को बजाये। ऐसा करने से शत्रु वश में हो जाएगा।

३३	२४	५	१
२७	३४	२	४
४	६	२४	२३
७	३	३१	३०

[शत्रु वशीकरण यन्त्र-७]

नीचे लिखे यन्त्र को साधक हल्दी से नगाड़े पर लिखकर नगाड़े को शत्रु का नाम लेकर बजाए तो शत्रु उसके वश में हो जाएगा।

२७	३४	२	८
७	३	३१	१०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु नाशक यन्त्र-१]

यदि साधक शनिवार के दिन अनुराधा नक्षत्र में नीचे दिए गए यन्त्र को आक के दूध से कागज के ऊपर लिखकर अपने पास रखे तो उसके शत्रु का नाश होगा।

६	३	४७	४६
४३	६०	२	७
४५	४४	४	१
४	४	४४	४४

[शत्रु नाशक यन्त्र-२]

शनिवार को अनुराधा नक्षत्र में साधक निम्नांकित यन्त्र को आक के दूध से कागज पर लिखकर यन्त्र को अपने कण्ठ अथवा बाँह में धारण कर ले तो उसके शत्रुओं का नाश होता है।

६	३	४७	३४
४३	६०	२	७
४९	४४	४	१
४	४	४४	४४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु के घर में झगड़ने के लिए यन्त्र]

यदि साधक कुम्हार के चाक की मिट्टी पर लाल चन्दन के द्वारा नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखकर अपने शत्रुओं के घर में डाल दे तो उनमें आपस में ही झगड़ा होने लगेगा।

७५	७६	२	७
६	३	४३	४४
४४	४०	४	१
४	५	४१	४४

[शत्रु के घर क्लेश के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे दिए गए यंत्र को कागज पर लिखकर शत्रु के घर के मुख्य द्वार पर दबा दे तो शत्रु के घर में कलेश हो जाएगा।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ विविध रोगनाशक यन्त्र ❀

[शीतला दूर करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर रोगी के सिर के नीचे रख दे तो शीतला की शान्ति हो जाती है।

४२०००	४५०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४४०००
४०००	४॥०००	४४०००	४॥०००
१०००	७०	१६	६२४

[सर्वरोग निवारण के लिए यन्त्र]

नीचे दिए गए यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केसर द्वारा लिखकर गूगल की धूनी देकर रोगी गले में धार कर ले तो असाध्य रोग दूर होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

७	२	७७	७०
७	७४	३	६
१	४	७१	७६
१४	७२	४	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[वायु गोला नाशक यन्त्र-१]

साधक नीच दिए गए यन्त्र को कागज के ऊपर स्याही द्वारा लिखे और रविवार के दिन सूर्य के समक्ष पानी में धोकर पी ले तो उसका वायु गोला शान्त होता है।

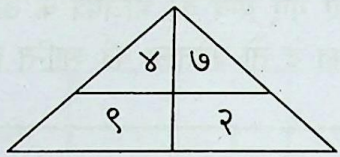

[वायु गोला नाशक यन्त्र-२]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को रविवार के दिन स्याही से भोजपत्र के ऊपर लिखकर तथा सूर्य के सामने जल में धोकर पी ले तो वायुगोला खत्म हो जाता है।

७	४
५	१

[ज्वर नाश के लिए यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को मंगलवार के दिन भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध की द्वारा लिखकर धूप-दीप आदि देकर रोगी को बाँधने से ज्वर खत्म हो जाता है।

७	२	९
४	६	४
३	१०	४

[स्त्री का दूध बढ़ाने के लिए यन्त्र]

यदि नीचे दिए गए यन्त्र को लिखकर स्त्री के छाती पर बाँधे तो दूध बहुत अधिक होगा।

११३	१२००	१२४व
४	१२४र	२१त
१३०	१२४	१६३
स्त्री का नाम		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सिर दर्द दूर करने के लिए यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर स्याही द्वारा लिखकर सिर पर बाँधने से दर्द खत्म हो जाता है।

४३	४२
३११	७०

[कर्ण पीड़ा दूर करने के लिए यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखकर कान पर बाँधने से कान का दर्द नष्ट हो जाता है।

भ	ज	व
क	ग	ज:
छ:	छ:	द:

[कर्ण पीड़ा दूर करने के लिए यन्त्र-२]

निम्नांकित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अनार के रस से लिखकर कान पर बाँधने से कान का दर्द नष्ट हो जाता है।

२२	२९	२	५
७	३	४३	१४
२४	१६	५	१
४	६	२२	११

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मसान रोग नाशक यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को केसर की स्याही द्वारा भोजपत्र पर लिखकर ताबीज में भरकर धारण कर ले तो उसका मसान रोग दूर हो जाता है।

१३	१६	७९	६
१४	७	१२	१७
४	२१	१४	१२
१४	१०	९	१०

[कांच न निकलने का यन्त्र]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखकर बालक के कंठ में बाँधे तो कांच नहीं निकलता है।

७६	८२	२	८
७	१	७०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बवासीर नाशक यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक लाल चन्दन एवं केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर और ताबीज में भरकर धारण कर ले तो खूनी और वादी दोनों तरह के बवासीर रोग दूर हो जाते हैं।

१	४	४४	८
४५	७	५	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

[बवासीर नाशक यन्त्र-२]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को अष्टधातु के पत्र पर खुदवा कर अपनी दायीं भुजा में बाँध ले तो दोनों प्रकार की बवासीर दूर हो जाती है।

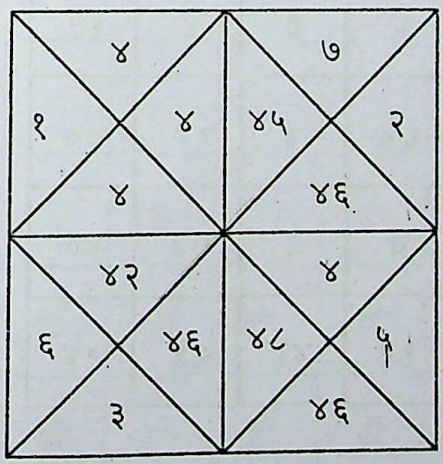

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बवासीर नाशक यन्त्र-३]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक नींबू के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर गले में पहन ले तो अर्श रोग खत्म हो जाता है।

५	३	४	१३
६४	४	१०	१३
७	६	१४	४०
१२	४२	११	१४

[बवासीर नाशक यन्त्र-४]

यदि रोगी रविवार पुष्य नक्षत्र में नींबू के रस से निम्नांकित यंत्र को लिखकर अपने गले में धारण कर ले तो उसका बवासीर रोग दूर हो जाता है।

५	३	४	१३
६४	४	१०	७७
७	६	७४	४०
१२	४२	११	१४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बवासीर नाशक यन्त्र-५]

यदि कोई व्यक्ति बवासीर रोग से अत्यधिक परेशान हो गया हो और सारे मन्त्र और द्वारा उसे कोई लाभ न हो रहा हो, तोअधोलिखित् यन्त्र को अष्टधातु के पत्र पर खुदवा कर दाहिनी भुजा में धारण कर लेने से बवासीर की बीमारी अवश्य दूर हो जाती है।

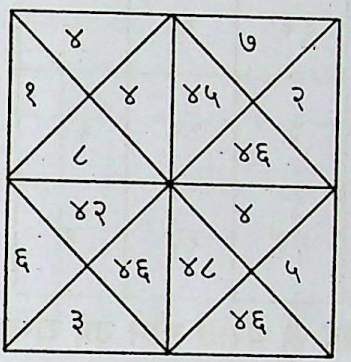

[गर्भ स्तम्भन के लिए यन्त्र]

यदि किसी स्त्री को गर्भ न ठहरता हो अथवा कुछ ही महीनों में गिर जाता हो, तो साधक रविवार को मूल नक्षत्र में नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर स्त्री की बांयी बाँह में बाँध दे तो स्त्री का गर्भ ठहर जाता है और वह स्थिर भी रहता है।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सुख से प्रसव होने का यन्त्र-१]

यदि निम्नांकित यन्त्र को साधक भोजपत्र पर लिखकर गर्भवती स्त्री को दिखाये तो स्त्री का आसानी से प्रसव हो जाता है अर्थात् उसे प्रसव में पीड़ा कम होती है।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

[सुख से प्रसव होने का यन्त्र-२]

गर्भस्थ शिशु में दोष आने के कारण अथवा अधिक उम्र में शादी आदि होने के बाद गर्भ का प्रसव कई बार बहुत दु:खदायी होता है। दर्द होने पर भी बच्चा नहीं हो पाता है। आपरेशन तक करवाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्रों को कांसे की थाली में अष्टगंध अथवा चन्दन से लिखकर धूप देकर घोलकर गर्भवती स्त्री को पिला देना चाहिए। ऐसा करने से प्रसव के समय होने वाला कष्ट दूर हो जाता है और बच्चा सुख से जन्म लेता है।

९	४६	२	७
६	३	१३	१३
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सन्तान प्रदायक यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर कुंकुम, गोराचन, कस्तूरी, कपूर के सम्मिश्रण से चमेली की कलम द्वारा लिखकर विधिवत् पूजा करनी चाहिए।

तत्पश्चात् यन्त्र को त्रिलोह धातु के ताबीज में रखकर स्त्री के कण्ठ अथवा बायीं बाँह में बाँधने से संतान की प्राप्ति होती है। यन्त्र में देवदत्त की जगह स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

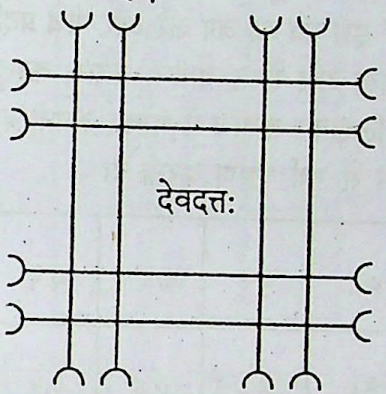

[सन्तान प्रदायक यन्त्र-२]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को शुक्रवार के दिन से गेहूँ के आटे की रोटी पर लिखकर उस रोटी को काले कुत्ते को खिलाये। भगवान की इच्छा से आपकी मनोकामना अतिशीघ्र पूर्ण हो जायेगी। लेकिन जब तक सन्तान न हो जाये तब तक इस क्रिया को प्रतिदिन करना चाहिए।

२३	४०	२	४
७	३०	३७	७
३	३४	५	१
४	६	३४	३४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पुत्रदाता यन्त्र]

जिस स्त्री को कोई भी सन्तान न हो तो वह स्त्री सर्पाक्षी के पुष्प और पत्तों से भरी डाली लाकर उसे किसी अविवाहित लड़की के हाथ से एक रंग की गाय के दूध में पिसवा कर, अपने पास रख ले। मासिक धर्म होने पर चौथे दिन से छठे दिन तक रोज १० ग्राम की मात्रा में खुराक गौर के दूध से ले और '**ॐ नमो भगवते देवाय। देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते वे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गताः।**' इस मंत्र का जप करे और नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगन्ध (लाल और श्वेत चन्दन, केसर, कस्तूरी, गोरोचन, कपूर, अम्बर तथा अगर) से लिखकर ताबीज में भरकर अपनी बायीं भुजा अथवा कंठ में बांध ले। ऐसा करने से गर्भ धारण करती है।

०८	०१	३१	३९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

[पीलिया नाशक यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को अष्टगन्ध की स्याही बनाकर, अनार की लेखनी से भोजपत्र अथवा कागज पर लिखकर अपनी दायीं भुजा में धारण कर ले तो इससे पीलिया रोग दूर हो जाता है।

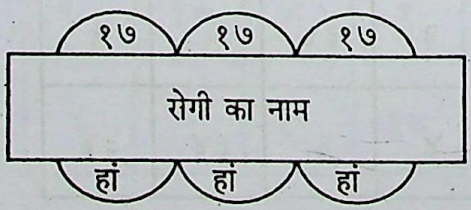

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आधा शीशी की पीड़ा दूर करने का यन्त्र-१]

यदि साधक रेवती नक्षत्र के तीसरे चरण में निम्नांकित मन्त्र को लिखकर सिर पर बांधे तो उसके आधे सिर की पीड़ा दूर हो जाती है।

१५	१०	६४
७	२६	६२
२२	७१	५
९	३	४

[आधा शीशी की पीड़ा दूर करने का यन्त्र-२]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को रविवार के दिन चन्दन द्वारा लिखकर अपने ललाट पर बांधे। ऐसा करने से साधक का आधाशीशी का दर्द दूर हो जाता है।

३४	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आधा शीशी की पीड़ा दूर करने का यन्त्र-३]

साधक निम्नांकित यनत्र को रविवार अथवा मंगलवार के दिन लिखकर धारण करे तो उसके आधा शीशी पीड़ा दूर हो जाएगी।

	(ω
(ω	(ω
(ω	(ω

[उदर शूल नाशक यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर जल में धोकर पी ले तो उसका पेट दर्द ठीक हो जाता है।

१६	२	मुवार
२	४।१	हे
अज	कुंन	मलमा

[गर्भ रक्षा के लिय यन्त्र]

केशर की स्याही से भोजपत्र पर लिखे। मौली या कच्चा सूत लेकर गर्भवती स्त्री के कमर में बाँध दे। ऐसा करने से गर्भ की रक्षा होगी।

ॐ	बृहत्साम	क्षत्रमृद्वृद्ध
वृष्णियं	त्रिष्टुभौजा	शुभितमुग्रीरम्
इंद्रस्तोमेन	पंचदेशन	मध्यमिदं
वातेन	सगरेण	रक्ष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[हैजा रोग दूर करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध द्वारा लिखे तथा यन्त्र को जल में घोलकर रोगी को पिला दे तो उसका हैजा रोग नष्ट हो जाएगा।

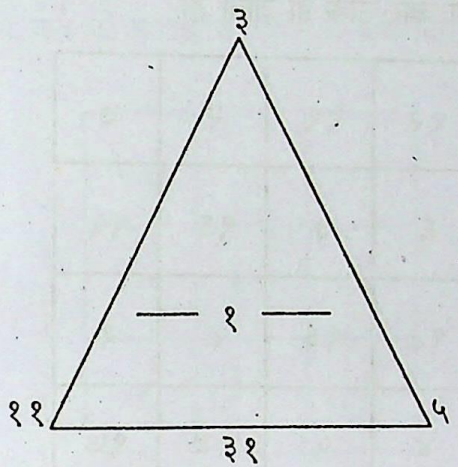

[एकान्तर ज्वर दूर करने के लिएं मन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को हल्दी से पान के पत्ते पर बबूल के काँटे से लिखे। तत्पश्चात् इस यन्त्र का पूजन करके रोगी को खिला दे। ऐसा करने से एकान्तर ज्वर दूर हो जाता है।

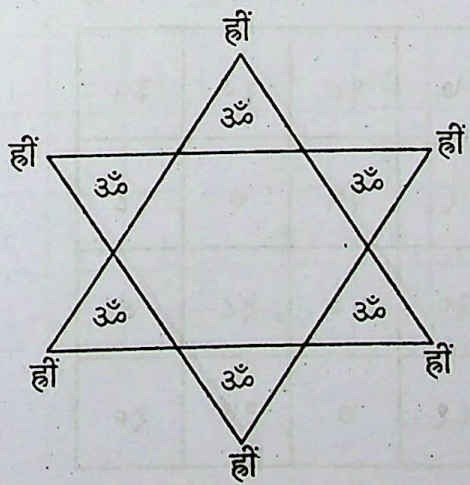

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[इकतारा ज्वर नाशक यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक एक ठीकरी के ऊपर लाल चन्दन द्वारा लिखकर रोगी की बांह में बांध दे तो उसका इकतारा ज्वर अर्थात् एक दिन के अन्तर पर आने वाला ज्वर ठीक हो जाता है।

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

[शीत ज्वर नाशक यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक किसी भी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप देकर रोगी के गले में बाँध दे तो रोगी का शीत से आने वाला बुखार दूर हो जाता है।

७	१८	१०	३५
१	३५	७	१८
३५	५०	१८	७
११	७	३७	१०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बाल ज्वर नाशक यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को श्मशान की ठीकरी पर धतूरे के रस द्वारा लिखकर कृष्णपक्षीय अष्टमी या चतुर्दशी के दिन पजन करके श्मशान में गाड़ दिया जाय तो बालकों का बुखार तुरन्त उतर जाता है।

यदि इस यन्त्र को बालक के कण्ठ में बाँध दिया जाय तो भी बुखार उतर जाता है।

५६	१	४४
२०	३८	४९
२८	६२	१४

[मिरगी, मूर्छा निवारक यन्त्र]

साधक निम्नांकित यंत्र को अष्टगन्ध द्वारा लिखकर धूपादि देकर मृगी रोग से पीड़ित रोगी को पिलाये तो रोगी कुछ दिनों में ठीक हो जाता है।

		रोगी का नाम लिखे						
	१	४	३	१	६	६	४	
नाम	४	२	१	९	९	३	९	४
	६	१८	१	१	१५		१	४
	२	२	॥	॥६२	५१	१७८	४	

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शीतला साधक यन्त्र]

नीचे दिए गए यंत्र को यदि लाल अथवा सफेद चन्दन और केसर से भोजपत्र पर लिखकर उस व्यक्ति की भुजा में बाँध दिया जाय जिसको शीतला (चेचक) निकली हो तो शीतला रोग अधिक नहीं बढ़ता है, यानि रोगी के कष्ट में कमी आ जाती है।

१	२१६९	११	८
१२	७	२	१२६८
६	९	३१७१	३
३१७	४	५	१०

[सर्वरोग निवारक यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखकर धारण कर ले। इससे साधक के रोग दूर हो जाएंगे।

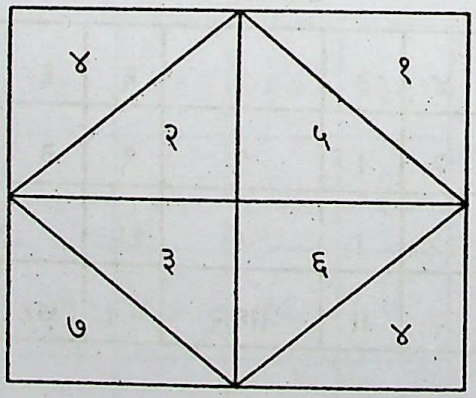

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ विविध कार्य साधक यन्त्र ❀

[देवता को प्रसन्न करने का मन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक आक की लकड़ी से भोजपत्र पर लिखकर शीश झुकाये। ऐसा करने से इष्टदेवता प्रसन्न होकर साधक के सभी कार्य सिद्ध करते हैं।

६४	७२	२	४
७	३	५	६४
७१	६६	५	१
४	६	६७	७०

[प्रेत बाधा नाशक यन्त्र]

नये खपरैल पर निम्नांकित यंत्र को लिखकर जिस व्यक्ति को प्रेत लगा हो उस दिखाकर यन्त्र को अग्नि में जला देने से प्रेत बाधा नष्ट हो जाती है।

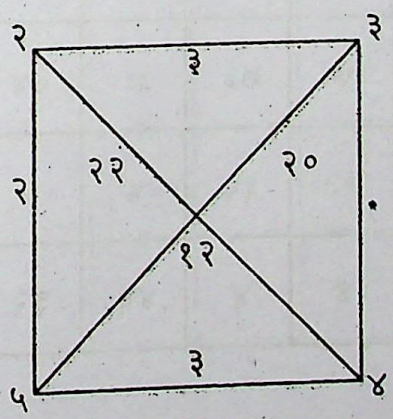

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भूत भय नाशक यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा लिखकर गूगल की धूप देकर कंठ में बाँधने से भूत-पिशाच का डर नहीं रहता है।

१४	७	४	३
६	३	६	४
७	३	४	१४
४	१४	२	७

[भूत दूर करने के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को चमड़े पर कोयले से लिखकर अपने पास रख ले तो भूत आदि भाग जाएंगे।

७	७४	२	७
७	७३	७	७४
७३	१७	४	४
४	४	४६	३२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[स्वप्न में भूत देखने के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को गिलोय के रस से लिखकर रात में सोते वक्त सिर के नीचे रख कर सोये तो उसे स्वप्न में भूत दिखाई देंगे।

१	२	३	४
४	३	२	१
१	२	३	४
४	३	२	१

[भूत न लगने का मन्त्र]

यदि साधक नीचें लिखे गए यन्त्र को दूध से लिखकर धारण कर ले तो उसे भूत-प्रेत नहीं लगता है।

८६	९६	२	८
७	३	९५	१२
४२	३७	९	१
४	६	९१	९४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भूत-प्रेत भगाने के लिए यन्त्र]

साधक रूई की बत्ती को कोरे दीपक में डालकर, उसमें सरसों का तेल डालकर निम्नांकित यन्त्र को लौ से जलाये। ऐसा करने से भूत-प्रेत दूर हो जाएंगे।

६	७	२
१	४	५
४	३	४

[रूठे व्यक्ति अथवा अधिकारी को वश में करने का यन्त्र]

साधक दो भोजपत्र के टुकड़ों पर लोह की कील से दो निम्नांकित यंत्र लिखकर उन्हें आपस में जोड़ दे। पृथ्वी पर इसी प्रकार जुड़ी हुई स्थिति में रखकर उस पर कोई भारी पत्थर रखकर साधक चार कदम चले। यंत्र के प्रभाव से रूठा हुआ व्यक्ति अथवा जिस अधिकारी को अपने अनुकूल बनाना हो अथवा परिवार का कोई सदस्य रूष्ट हो गया हो और उसे मनाना हो तो यह एक कारगर प्रयोग है। लेकिन साधक को ध्यान रखना चाहिए कि उक्त सभी कार्य उत्तराभिमुख होकर करना है।

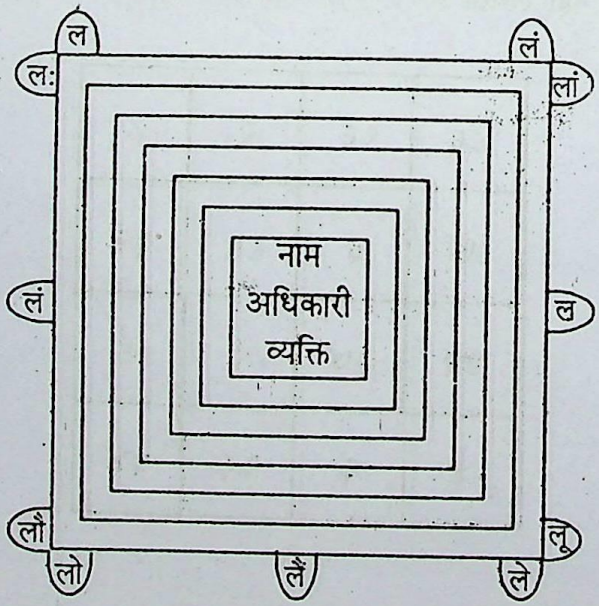

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भूत-प्रेत निवारण के लिए यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को मैनसिल और गोरोचन द्वारा आक के पत्ते पर लिखकर धारण कर ले तो उपद्रव दूर हो जाते हैं।

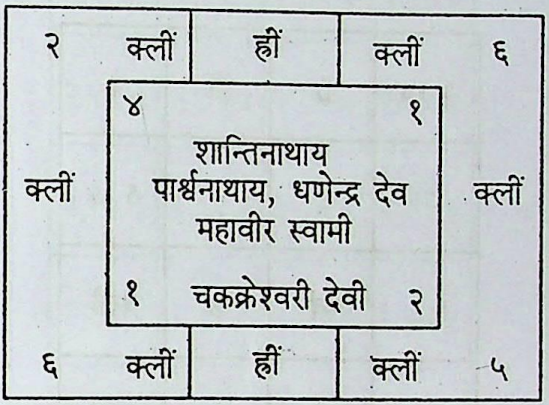

[प्रेत बाधा नाशक यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को खपरैल पर लिखकर प्रेत लगे व्यक्ति को दिखाकर अग्नि में जला दे तो प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

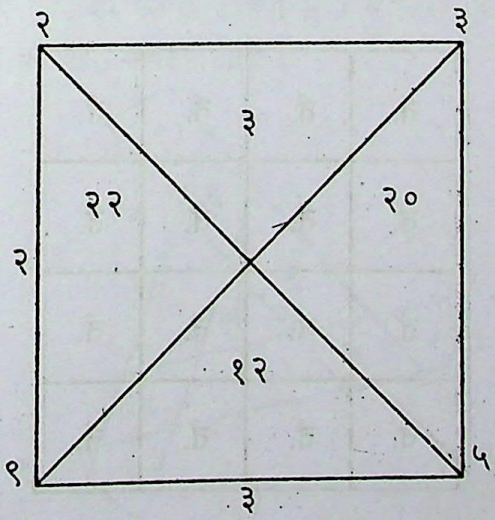

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[प्रेत दूरीकरण यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को कुंकुम, केसर और चन्दन से विदाल की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर पूजन करने के बाद उस व्यक्ति के गले में बाँध दे जो प्रेतबाधा से ग्रस्त हो। ऐसा करने से प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति ठीक हो जाता है।

२०५	ॐ	ह्रीं	२
ऽ।	६	३	ऽ ७
१८	स्वं	क्र	क्लीं
९	यं	८	१

[देशाटन करने का यन्त्र]

साधक नीचे दिये गये यन्त्र को मशान के कोयले से शत्रु के कपड़े पर लिखे। ऐसा करने से शत्रु का देशाटन होता है।

तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[गुप्त रूप से धन प्राप्ति के लिए यन्त्र]

कोई भी व्यक्ति निम्नांकित यन्त्र को ईश्वर के नाम के साथ लिकर अपने पास रख लेगा, उसे गुप्त रूप से धन प्राप्त होगा।

२४४४	२२६२	२२४७	२२५४
२२२३	२२४४	२२५४	२२४२
३२५३	२३४४	२२५२	२२४२
२२२४	२२२४	२२४४	२२५२

[लक्ष्मी प्राप्ति के लिए यन्त्र]

अधोलिखित यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन अथवा केसर से चमेली के पेड़ की कलम द्वारा लिख कर पूजा करनी चाहिए। इसके पश्चात् मंत्र 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' की माला का जाप करना चाहिए। इस प्रकार नौ दिन में ग्यारह हजार जप को करने के पश्चात् यन्त्र को सोने अथवा चाँदी के ताबीज में भर कर उसे धूप दिखाकर अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर ले तो यंत्र के प्रभाववश लक्ष्मी की कृपा अवश्य होती है।

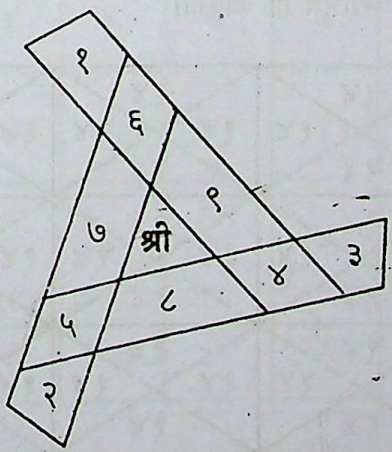

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[धन की प्राप्ति के लिए यन्त्र]

कोई भी व्यक्ति नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखकर अपने पास रखेगा उसे गुप्त रूप से धन प्राप्त होगा तथा वह नित्य उन्नति की ओर बढ़ता जायेगा।

७६	४१	४२	६५
४१	७६	७४	४१
७१	७४	७४	७४
७३	७२	७२	७४

[बहत्तरिया वशीकरण यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को रविवार के दिन दोपहर के समय चिड़िया की बीट जल में घोलकर उससे भोजपत्र पर लिखे। साधक यन्त्र के नीचे जिसको वशीभूत करना है, उसका नाम और नाम के आगे (वश्य थाप वश्य थाप) लिखे तत्पश्चात् कबूतर की बीट का धूप देकर जला दे। ऐसा करने से वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाएगा।

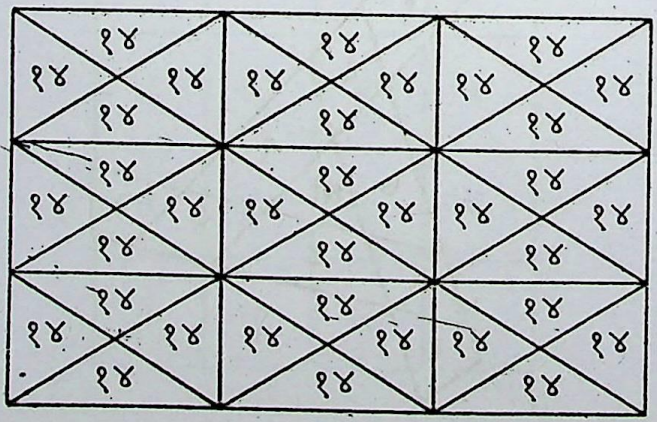

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[पति-पत्नी में प्रेम के लिए यन्त्र]

यदि किसी स्त्री का पति उससे रूठा या नाराज रहता हो, तो वह स्त्री नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही से लिखकर अपने पति को घोलकर पिला दे। ऐसा करने से उसका पति प्रसन्न हो जाएगा।

२४	३२	२	७
४	२	३२	३१
३४	२५	५	१
४	३	३०	३३

[गृह दोष दूर करने का यन्त्र]

इस यन्त्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर अपने घर में किसी शुद्ध स्थान पर रखो से सभी गृह दोष दूर हो जाते है।

३	४	५	७
६	२	१	४
९	६	४	२
५	२	१०	८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[हनुमान जी को प्रसन्न करने का यन्त्र]

यदि नीचे लिखे गए यन्त्र को सिन्दूर से सवा लाख बार लिखे तो हनुमानजी प्रसन्न हो जाते हैं।

नं.	छं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	छं.	जं.	०
छं.	नं.	जं.	हं.

[भूत-प्रेत देवी-यक्षं प्रसन्न करने का यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को सिरस के पेड़ के नीचे बैठकर लिखे। ऐसा करने से भूत-प्रेत, देवी-यक्ष प्रसन्न होकर उसकी इच्छानुसार कार्य करने लगते हैं।

तं.	तं.	तं.	तं.
पं.	पं.	पं.	पं.
दं.	दं.	दं.	दं.
लं.	लं.	लं.	लं.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अलिगंधा यक्षिणी प्रसन्न करने का यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को आंवले के रस से सवा लाख लिखे तो अलिगंधा यक्षिणी प्रसन्न होकर कार्य करने लगती हैं।

लं.	पं.	दं.	लं.
लं.	तं.	पं.	दं.
सं.	पं.	दं.	लं.
पं.	दं.	मं.	नं.

[सास या ससुर के लिए यन्त्र]

नीचे दिए गए यंत्र को पेन, पेंसिल, स्केच पेन आदि से गेहूँ की सिकी रोटी के एक तरफ लिखकर काले कुत्ते (ससुर के लिए) को अथवा काली कुतिया (सास के लिए) को नित्य खिलाये।

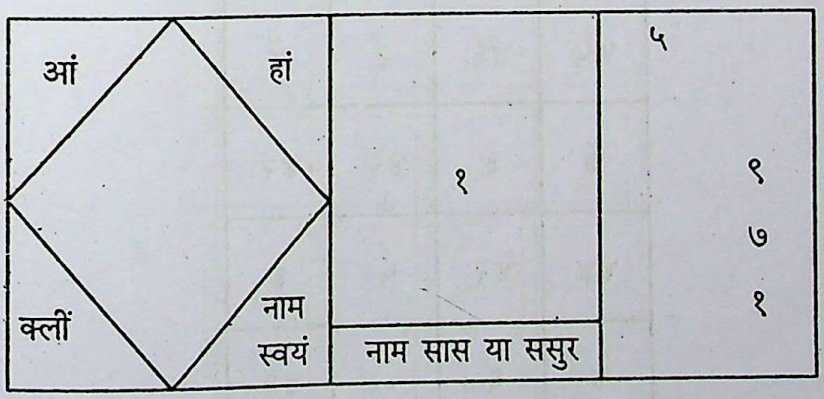

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[लोकप्रिय होने के लिए यन्त्र-१]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लिखकर उपने पास रखे तो उसे लोकप्रियता प्राप्त होगी।

४४	४१	२	७
३	३	४४	४७
४०	८४	४	१
४३	४	४६	४५

[लोकप्रिय होने के लिए यन्त्र-२]

साधक नीचे दिए यन्त्र को धतूरे के अर्क से भोजपत्र पर लिखकर अपने कंठ में धारण कर ले तो वह लोकप्रिय होगा अर्थात् वह जहाँ जाएगा लोग उसका सम्मान करेंगे।

७५	४६	२	४
७	३	४२	४२
४४	४२	५	१
४	६	०	४२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अधिक अनाज के लिए यन्त्र]

यदि साधक निम्नांकित यन्त्र को लिखकर खेत में गाड़ दे तो अनाज की उपज अधिक होगी।

२	२०	२	४
७	३	४४	२१
२६	४१	५	१
७	७	४	११

[अनाज खराब न होने का यन्त्र]

यदि साधक निम्नांकित यन्त्र को लिखकर अनाज के भण्डार गृह में रख दे तो अनाज नहीं बिगड़ता है।

४४	६२	२	७
५	३	४४	१
४६	४	४	१
४	४०	४	१
४	४	५४	४०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आम के वृक्ष पर फल अधिक लगने का यन्त्र-१]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को आम के रस से लिखकर आम के वृक्ष पर बाँध दे। ऐसा करने से पेड़ पर बहुत आम लगेंगे।

७४	६४	२	४
७	३	६२	१
५४	५६	५	५
४	६	३१	३१

[आम के वृक्ष पर फल अधिक लगने का यन्त्र-२]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को आम के रस से लिखकर आम के वृक्ष पर बाँध दे तो वृक्ष से फल बहुत अधिक मिलेंगे।

४४	५४	२	१
७	३	२३	१
४४	५५	५	१
४	६	५०	१०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बाग में फल अधिक होने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लिखकर बगीचे में दबा दे। ऐसा करने से वृक्ष पर बहुत अधिक फल लगेंगे।

५२	५३	२	४
७	०	५४	१४
३६	६३	५	४
४	६६	१५	५

[जुए में विजय दिलाने का यन्त्र-१]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक अष्टगन्ध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीया, फूल आदि द्वारा पूजन करे। फिर इसे ताबीज में भरकर अपने दाहिने हाथ की बांह में धारण कर ले तथा जुआ खेले। साधक के ऐसा करने से जुआ में उसकी निश्चय ही जीत होती है।

१	२५।	२३।	२३।
३२।।।	२७।।	३५।।	३६।।
१।।	९।।	२४।।	१९।।
२६।	९।।।	५।।।	४।।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[जुए में विजय दिलाने का यन्त्र-२]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को स्वाती नक्षत्र में भोजपत्र पर गोरोचन, असगन्ध तथा केसर द्वारा लिखे तत्पश्चात् दीवाली की रात को विधिवत् इस यन्त्र का पूजन करके अपने दाएं बांह में बाँध ले तो जुए में उसे जीत प्राप्त होगी।

४४	३७	२	७
३	३	६४	६३
६३	६१	४	१
४	४	३२	६४

[सौभाग्य वृद्धि कारक यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को अष्टगन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर अपने ललाट पर धारण करने से सौभाग्य वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अमोघ बीसा यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को भोजपत्र पर लखकर ताबीज बना ले तथा उस ताबीज को बालक के गले में बांध दे तो नजर लगना, भूत-प्रेत बाधा आदि सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

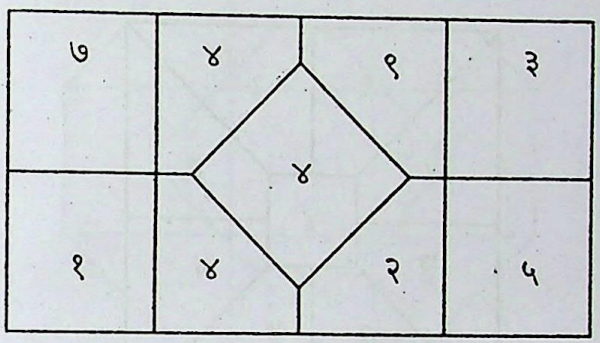

[जलाशय निर्माण के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को भोजपत्र पर केसर से ४१००० की गिनती में लिखकर धूप-दीपक देकर नदी के बहते पानी में बहा दे। ऐसा करने से साधक के जलाशय निर्माण के सभी मनोरथ पूरे हो जाएंगे।

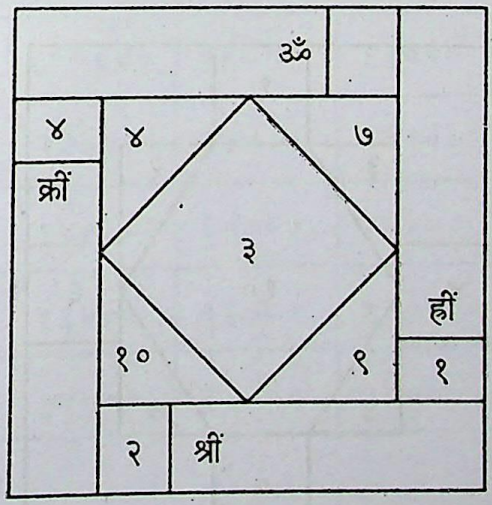

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कलह निवारण बीसा यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को यक्षकर्दम की स्याही द्वारा भोजपत्र पर अनार की लेखनी से लिखकर घर में प्रतिस्थापित कर दे। इससे घर की कलह दूर हो जाएगी।

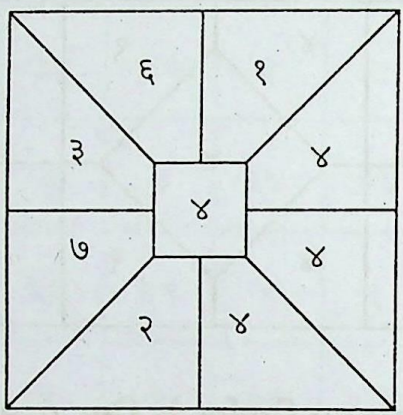

[वाहन प्राप्ति के लिए यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र पर मंगलवार के दिन सात हजार की गिनती में लिखकर पूजन करके नदी के पानी में बहा दे। साधक इस प्रयोग को इकतालीस दिन तक करे। इससे साधक को वाहन आदि प्राप्त होगा।

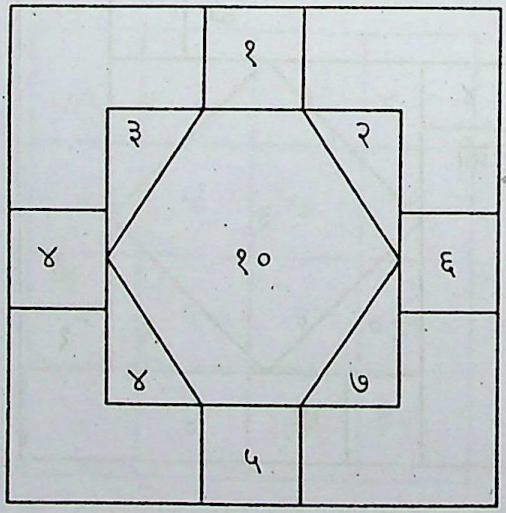

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मनोकामना पूर्ण करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर धारण कर ले। इससे उसकी सभी मनोकामना पूरी हो जाती है।

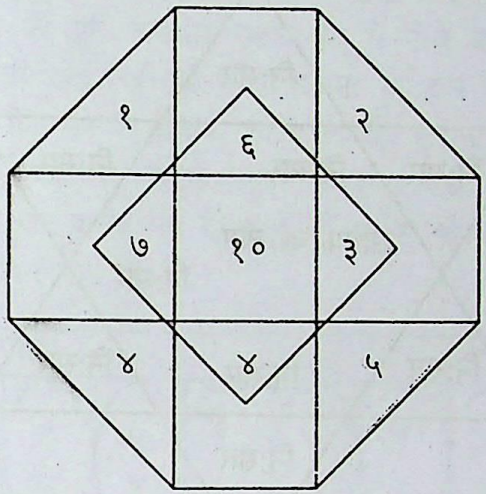

[आग न लगने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यंत्र को मकान की दीवार पर लिखे तो घर में कहीं भी आग नहीं लगती है।

२६०००	१०००००	१६०००	२२०००	२३०००
२१०००	२७०००	२४०००	५००००	१४०००
४०००	१४०००	२०००००	२६०००	३२०००
२४०००	३१०००	१२०००	१३०००	१५०००
१७०००	१४०००	२४०००	३००००	११०००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[वैराग्योत्पत्ति धारण यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर लोहे के ताबीज में मढ़ाकर अपने माथे पर धारण कर ले। इससे वैराग्य की प्राप्ति होती है।

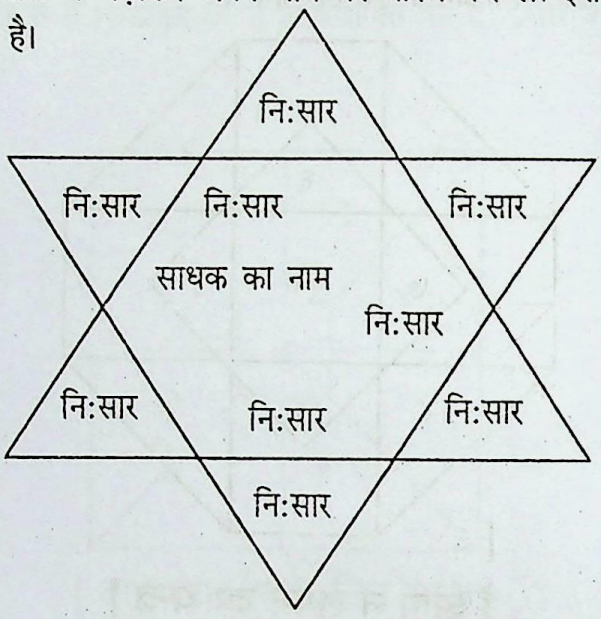

[वशीकरण के लिए यन्त्र]

यदि साधक किसी व्यक्ति को अपने वश में करना चाहता है तो नीचे दिए गए यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर उसकी विधिवत् पूजा कर अपने कंठ अथवा बाँह में धारण करे तो वह व्यक्ति साधक के वशीभूत होता है।

औ	बं	जै	ऽ ।
दें	डं	ही	ऽ =
तं	डं	जगत	ऽ ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[दुर्भाग्य नाशक यन्त्र]

निम्नांकित दुर्भाग्य नाशक अथवा वशीकरण यंत्र को साधक भोजपत्र पर गोरोचन तथा कुंकुम से लिखे। फिर नदी के दोनों ओर के तट की मिट्टी लाकर गणेश जी की मूर्ति बनाकर उसके पेट में नीचे प्रदर्शित यंत्र को प्रतिस्थापित करे। जब तक मिट्टी की गणेश प्रतिमा पूर्ण रूप से सूख न जाये 'गणेश प्रियताम' बीज मंत्र का साधक जप करता रहे। सूखने के बाद साधक गाय के दूध से मूर्ति को स्नान कराके लड्डुओं का प्रसार चढ़ाए तथा 'अधोरति अधोरति' मन्त्र का जप करता रहे। दो प्यालों में गणेश जी की मूर्ति रखकर धरती में गड्ढा खोदकर गाड़ दे।

ॐ अजिते स्वाहा								
दे दु	व भ	द गो	त्त भ	दे व	व द	द भ	त्त गो	भ व
ॐ अपराज़िते स्वाहा								

[स्वप्न भय नाशक यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धारण करे। ऐसा करने से उसके डरावने सपने दूर हो जाते हैं।

याफता	याफता	याफता	याफता
याफता	याफता	याफता	याफता
याफता	याफता	याफता	याफता
याफता	याफता	याफता	याफता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[डाकिनी का यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गये यन्त्र को खैर की लकड़ी के कोयले से चमड़े के टुकड़े पर लिखे। इस प्रकार करने से समस्त डाकिनियाँ यन्त्र साधक के पास आती है।

७०	७७	२	७
६	७३	७६	७४
७६	७४	४	१
४	४	६६	७६

[सर्पभय नाशक यन्त्र]

यदि साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर मालकांगनी के रस से लिखकर घर में रख ले तो घर से सांप का डर नहीं रहता है।

३२	२७	२	४
७	३	३४	३३
३६	३१	५	१
४	४	३३	३४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अकाल मृत्यु दूर करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को चन्दन की लेखनी से भोजपत्र पर लिखे और सिर में बाँध ले। ऐसा करने से उसकी अकाल मृत्यु दूर हो जाती है।

—	=	≡	‖
‖	=	‖	|
≡	‖‖		|
‖‖	—	≡	=

[चोरी गया पशु वापस लाने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को सेंही के काँटे से कागज पर लिखकर पशु के खूंटे के नीचे दबा दे तो चोरी किया गया पशु लौट आता है।

१५	२३	२	४
७	२	२३	२२
२४	२०	५	१
४	३	२१	२३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[डाकिनी का यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गये यन्त्र को खैर की लकड़ी के कोयले से चमड़े के टुकड़े पर लिखे। इस प्रकार करने से समस्त डाकिनियाँ यन्त्र साधक के पास आती है।

७०	७७	२	७
६	७३	७६	७४
७६	७४	४	१
४	४	६६	७६

[सर्पभय नाशक यन्त्र]

यदि साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर मालकांगनी के रस से लिखकर घर में रख ले तो घर से सांप का डर नहीं रहता है।

३२	२७	२	४
७	३	३४	३३
३६	३१	५	१
४	४	३३	३४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[अकाल मृत्यु दूर करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे लिखे गए यन्त्र को चन्दन की लेखनी से भोजपत्र पर लिखे और सिर में बाँध ले। ऐसा करने से उसकी अकाल मृत्यु दूर हो जाती है।

—	=	≡	‖
‖	=	‖	|
≡	‖‖		|
‖‖	—	≡	=

[चोरी गया पशु वापस लाने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को सेंही के काँटे से कागज पर लिखकर पशु के खूंटे के नीचे दबा दे तो चोरी किया गया पशु लौट आता है।

१५	२३	२	४
७	२	२३	२२
२४	२०	५	१
४	३	२१	२३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बुरी नजर दूर करने के लिए यन्त्र]

यदि किसी को बुरी नजर लगी हो तो नीचे दिए गए यन्त्र को छोटे ताँबे के टुकड़े पर लिखवा कर पहनने से नजर दोष दूर होता है।

७२	४२	३३	४५
५१	४२	५	११
२४	३७	४५	४०
४४	२७	५	१

[घर से गये मनुष्य को लौटाने का यन्त्र]

नीचे दिए गए यन्त्र को साधक अपनी मध्यमा यानि बीच की अंगुलि से जल में लिखकर जल के ऊपर चाबुक मारे तो घर से रूठ कर भागा हुआ व्यक्ति जल्द ही घर वापस आ जाता है।

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[रोजगार पाने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को शुक्लपक्ष में कांसे के पत्र पर लाल चन्दन द्वारा लिखकर अपने पास रख ले तो इससे साधक को रोजगार की प्राप्ति होती है।

६	७	२
१	४	५
४	३	४

[व्यापार वृद्धि के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लाल चन्दन से दिवाली के दिन दुकान पर लिखे तो उसके व्यापार में वृद्धि होती है।

७३	४०	२	७
६	३	७७	३७
७५	४	४	१
४	४	४४	७४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[व्यापार में लाभ के यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लिखकर दुकान की चौखट में दबा दे। ऐसा करने से उसका व्यापार खूब चेलगा और उसे आजीवन अत्यधिक धन की प्राप्ति होगी।

४७	४७	२०	७
६	३	४७	४
६४	४७	४	१
४	४	४४	१

[कामना सिद्ध करने के लिए यन्त्र]

यदि साधक नीचे प्रदर्शित यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में लिखकर अपने पास रख ले तो उसकी सभी कामना सिद्ध होगी।

४७	४२	२	४
७	३	७६	५०
४१	४४	५	१
४	३	७६	४०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[बुद्धि बढ़ाने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को शुक्लपक्ष में थाली पर लिखकर पायस (खीर) का भोजन करे तो उसकी बुद्धि बढ़ेगी।

३७	५१	२४	४
७	३	५३	५६
५४	३४	५	१
४	९	७४	७५

[विद्या और बुद्धि बढ़ाने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को प्रतिदिन लिखे। ऐसा करने से उसकी विद्या और बुद्धि में वृद्ध होगी।

४	११	१२	१३
१	२	७	६
१६	१६	५	४
१०	५	४	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भय दूर करने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर घर के मुख्य द्वार लगा दे। इस प्रकार करने से उसका डर दूर होगा।

२१	३४	२	४
७	३	३४	३४
३	३७	३७	३७
४	०	३६	३०

[सर्वग्रहबाधा दूर करने के लिए यन्त्र]

यदि साधक निम्नांकित यन्त्र को धारण कर ले तो उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

३	४	४	७
६	२	१	४
५	६	४	२
४	२	१०	४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[शत्रु भगाने का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को धतूरे के रस से रविवार केदिन शत्रु के नाम के ाथ लिखे। ऐसा करने से उसका शत्रु भाग जायेगा।

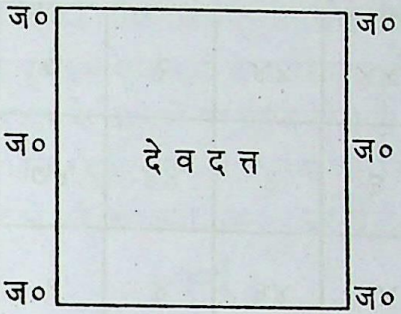

[मित्रता के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को लिखकर जलाये तथा उसकी राख को भोजन में मिलाकर जिस किसी को भी खिला देगा उससे मित्रता बहुत बढ़ेगी।

४	१	२
३	५	७
२	५	२

[भागे हुए को बुलाने का यन्त्र]

यदि किसी भागे हुए या गुम हुए व्यक्ति का पता लगाना हो कि वह कहा है? तो साधक नीचे प्रदर्शित यंत्र को केसर की स्यांही से लिखकर अपनी भुजा पर बांधकर सो जाये। इससे साधक के स्वप्न में उस गुम व्यक्ति का पता चल जाएगा।

०	४	५	२
०	३	४	७
०	४	१	६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[राजसभा में आदर पाने के लिए यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर अपने पास रख ले। ऐसा करने से राजसभा में उसका आदर होगा।

४४	४४	२	७
६	३	४४	४७
४०	४६	४	१
४	४	३	४५

[राज सम्मान प्राप्ति का यन्त्र]

साधक नीचे दिए गए यन्त्र को भोजपत्र क ऊपर अष्टगन्ध या केसर द्वारा लिखकर धूप, दीपक दिखाये और पूजन करके उसे ताबीज में भरकर अपने गले या भुजा में धारण कर ले। ऐसा करने से वह राजसभी में जायेगा तो वहाँ उसे सम्मान की प्राप्ति होगी।

४४	५१	२	७
६	३	४०	४७
५०	४५	८	१
४७	४	४६	४९

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ नवग्रह दोष शांति के यंत्र-मंत्रादि ❀

नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के मन्त्र

इस जन्म तथा पूर्वजन्म कृत कर्मों के फलस्वरूप नौ ग्रहों की अशुभ दृष्टि से व्यक्ति को विविध प्रकार के अनिष्टों की प्राप्ति होती है। इन सभी अनिष्टों का निवारण नवग्रहों की शान्ति (दान, रत्न धारण तथा पाठ) करने से दूर हो सकती है।। नवग्रहों के मन्त्रादिकों की जानकारी निम्न प्रकार से हैं—

[सूर्य]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

सिंह राशि का स्वामी सूर्य है। इसके कुप्रभाव को दूर करने के लिए माणिक्य, सोना, ताँबा धातु की अंगूठी बनाकर धारण करना चाहिए तथा गेहूँ, घी, गुड़, लाल फूल, केशर, मूँगा, लाल गऊ, लाल चन्दन का सूर्योदय के समय दान देना चाहिए।

इसका धारण करने का रत्न माणिक्य है। यदि रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो जड़ी बिल्व पेड़ (बेल) की जड़ को गले अथवा भुजा में धारण करने के साथ-साथ नित्य आदित्य स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

सूर्य यन्त्र मन्त्रादि

४	१	२
३	५	७
२	५	२

रसेंदुनागा नगबाणरामा युग्मांववेदा नवकोष्ठमध्ये ।
विलिख्य धार्ये गदनाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीद्राः ।।

पुराणोक्तत रवि मन्त्र

ह्रीं जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैदिक रवि मन्त्र

ॐ आकृष्टोनेत्यस्य मन्त्रस्य हिरण्यस्तुः सविता।
त्रिष्टुप् सूर्य प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।
ॐ आकृष्णेनन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्य च।
हिरण्ययेन सविसार थेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन्।।

तन्त्रोक्त रवि मन्त्र

१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
२. ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

सूर्य गायत्री मन्त्र

१. ॐ सप्त तुरंगाय विद्यमहे सहस्राय किरणाय धीमहि तन्नोरविः प्रचोदयात्।

२. ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

अथ आदित्यस्तोत्रम्

विनियोगः-अस्य श्रीआदित्यस्तोत्रस्य आङ्गिरसऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता, सूर्यप्रीत्यर्थ विनियोगः जपे।

नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक्।
पीडा च दुःसहा राजन् जायते सततं नृणाम्।।१।।
पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि शृणु भास्वतः।
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीडा नश्यति शृण्वतः।।२।।
आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः।
भगस्त्वष्टाऽर्यमाहंसो हेलिस्तेजोनिधिर्हरिः।।३।।
दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः।
विभावसुर्वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः।।४।।
हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः।
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः।।५।।
द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहिताङ्गस्तमोनुदः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः।।६।।
भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
जपाकुसुमसंकाशो भावानदितिनन्दनः।।७।।
ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः।
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकपावनः।।८।।
जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः।
सहस्ररश्मिस्तरणिर्भगवन् भक्तवत्सलः।।९।।
विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः।
धन्वन्तरिर्व्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशनः।।१०।।
चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः।
लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः।।११।।
नारायणो महादेवो रुद्रः पुरुष ईश्वरः।
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः।।१२।।
इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणोऽनिलः।
श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः।।१३।।
शौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः।
सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः।।१४।।
य एतैर्नामर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।।१५।।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते स न संशयः।
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः।।१६।।
पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः।
सद्यः सुखमवाप्नोति चायुर्दीर्घं च नीरुजम्।।१७।।

[चन्द्र]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

चन्द्र ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए मोती, सोना, चाँदी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन का सन्ध्या अर्थात् गोधूलि बेला में करना चाहिए।

इसका धारण करने का रत्न-मोती या चन्द्रकान्त मणि (मूनस्टोन) है। यदि रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो सीप, जड़ी-खिरनी वृक्ष की जड़ को सफेद कपड़े में सीकर अपने कण्ठ अथवा बाँह में धारण करना चाहिए।

चन्द्र का यन्त्र-मन्त्रादि

४०	३९	२४	३८	२३	
४१	६	५३	९	८	२२
१५	३७	१६	४५	१	
१४	४३	५	४४	४६	२५
३६	१७	५२	१८	२८	
२६	१३	४	१९	२	२७
७	३४	३३	२०	२९	
६०	३५	३२	३	५९	३०
४२	१२	२१	३१	११	
५१	५४	५०	१०	४७	४९
५७	५५	५८	५६	४८	

नगाद्विनंदा गजषट् समुद्रा शिवाक्षदिग्बाण विलिख्यकोष्ठे।
चंद्रकृतारिष्टविनाशयनाय धार्य मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र

दधि, शंख, तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

वैदिक चन्द्र मन्त्र

ॐ आप्याय गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आप्यावस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णम्। भवा वाजस्य सगथे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन्त्रोक्त मन्त्र

१. श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

२. ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।

सोम गायत्री मन्त्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

अथ चन्द्रकवचम्

विनियोगः–

अस्य श्रीचन्द्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य गौतम ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, चन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

समं चतुर्भुजं वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं शङ्कस्य च भूषणम्।।१।।
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः।।२।।
चक्षुषी चन्द्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः।।३।।
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कन्धौ जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः।।४।।
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शङ्करभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः।।५।।
ऊरू तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा।।६।।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्।।७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मंगल]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

चन्द्र ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिएं मूँगा, सोना, ताँबा को धारण को करना चाहिए। मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन सबेरे दो घटी तक दान करना चाहिए

इसका धारण रत्न मूँगा है। रत्न धारण करने में असमर्थ होने पर जड़ी-अनन्त मूल, नागजिह्वा की जड़, लाल डोरा व कपड़े में सिलकर धारण करना चाहिये साथ ही नित्य ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि

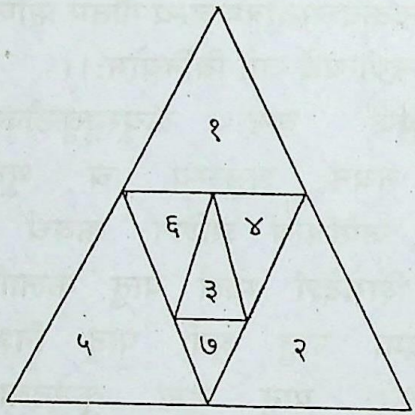

गजग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणा पातालरुद्रारससंविलख्य ।
भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः ।।

पुराणोक्तत भौम जप मन्त्र

ह्रीं धरणीगर्भसभूतं विद्युत-कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।

वैदिक जप मन्त्र

१. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः रूपोऽङ्गारको गायत्री, अङ्गारक-प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

२. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपार्ठ रेतार्ठसि जिन्वसि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन्त्रोक्तत भौम मन्त्र

१. क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

२. ॐ हूँ श्रीं मंगलाय नमः।

भौम गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धिमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थितसनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।
धरणीगर्भ-संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।
अङ्गारक महाभाग! भगवन्! भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।
ऋण-रोगादि-दारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अतिवक्त्र दुराराध्यं भोग-मुक्त-जितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
विरञ्चि शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुत्रन् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋण-दारिद्रय-दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तोति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनो युवा ।।

ऋणमोचकमंगलस्तोत्र

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायो सर्वकर्मावरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।२।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेःकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।३।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।४।।
एकविंशति नामानि पठित्वा तु तदन्तिके।
रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः।।५।।
एककालं द्विकालं च यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न संदेहो ऋणं हत्वा सुखीं भवेत्।।६।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिं हस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।७।।

[बुध]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

बुध ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए पन्ना, सोना, काँसी, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सफेद फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र, फल आदि का दान करना चाहिए।

इसका धारण करने का रत्न पन्ना है। रत्न धारण करने में असमर्थ होने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर जड़ी-विधारा (वृद्ध मूल)। हरे रंग के डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करने के साथ-साथ नित्य अथ बुधपञ्चविंशतिनाम स्तोत्र और बुधकवच का पाठ करना चाहिए।

बुध का यन्त्र-मन्त्रादि

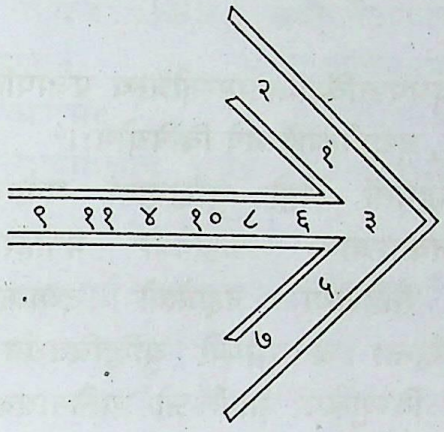

नवब्धिरुद्रा दशनागषट्का बाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे।
विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः।।

पुराणोक्त बुध जप मन्त्र

ह्रीं प्रियङ्ग कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

वैदिक बुध मन्त्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टासूर्ते सर्ठं सृजेयायमं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्ष्यत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।
ॐ उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, बुधप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहवः सनीलाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावती वसे निह्वये वः।।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र

१. ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।
२. ॐ ऐं श्रीं श्री बुधाय नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुध गायत्री मन्त्र

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

अथ बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग–

अस्य श्रीबुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः।।१।।
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः।।२।।
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः।।३।।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्।।४।।
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्।।५।।

अथ बुधकवचम्

विनियोग–

अस्य श्रीबुधकवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुङ्कुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः।।१।।
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोत्रे पातु निशाप्रियः।।२।।
घ्राणं गन्धप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजौ पुस्तकभूषणः।।३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः।।४।।
जानुनी रौहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः।।५।।
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम्।।६।।
आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्।।७।।

[गुरु]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

बृहस्पति ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खाँड़ घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल आदि का दान सन्ध्या के समय करना चाहिए।

इसके धारण करने का रत्न पुरखराज है। पुखराज नग धारण करने में असमर्थ हों तो भारंगी की जड़ को पीले धागे अथवा कपड़े में दाहिनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने के साथ नित्य बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

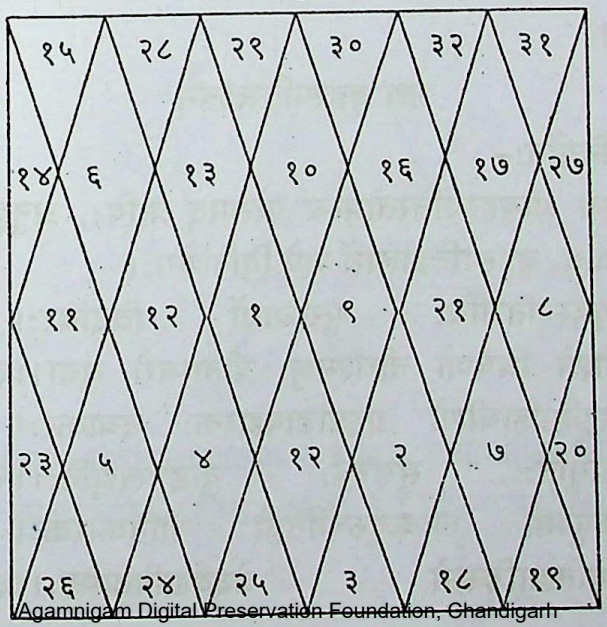

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बृहस्पति का यन्त्र-मन्त्रादि

दिग्बाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षड्विश्वनागाः क्रमतोंऽककोष्ठे ।
विलिख्य धार्य गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदंति तद्बहुधाः ।।

पुराणोक्त गुरु जप मन्त्र

ह्रीं देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।

वेदोक्त गुरु मन्त्र

ॐ बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्,
बृहस्पतिप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः ।
ॐ बृहस्पति अतियदर्यो अहर्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र

१. ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।
२. ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

अथ बृहस्पतिस्तोत्रम्

विनियोगः–

अस्य श्रीबृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

गुरुबृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांबरः।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा।।१।।
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः दयाकरः।
सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः।।२।।
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवैद्यपितामहः।।३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः।।४।।
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति तत्क्षणात्।
यः पूजयेद् गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः।।५।।
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद् गुरोः।।६।।

[शुक्र]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

शुक्र ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन का सूर्योदय काल में दान करना चाहिए।

इसके धारण करने का रत्न हीरा है। रत्न के अभाव में मंजीठ की जड़ को सफेद कपड़े अथवा धागे में दाहिनी बाँह या कण्ठ में धारण करने के साथ नित्य शुक्रस्तोत्र और शुक्रकवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि

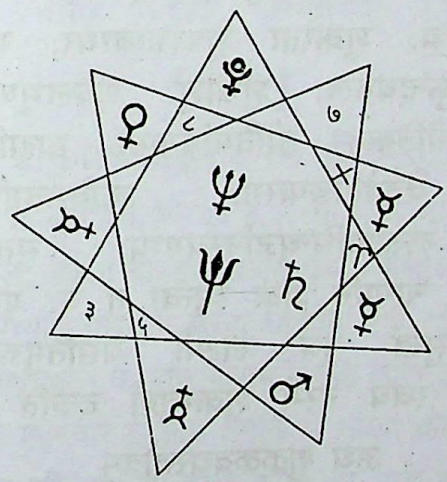

रुद्रांगविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्वांकक्रमाद्विलेख्या ।
भृगोः कृतरिष्टनिवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तिता ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुराणोक्त शुक्र मन्त्र

ह्रीं हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।

वेदोक्त शुक्र मन्त्र

ॐ शुक्रं त इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवतास्त्रिष्टु, छन्दः, शुक्रप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ शुक्र ते अन्यद्यजनं ते अन्यद्विषुरुपे अहनीद्यौरिवासि। विश्वादि माया अवसिस्वधावोघद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र

१. द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

शुक्र गायत्री मन्त्र

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्येदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

अथ शुक्रस्तोत्रम्

शुक्रः काव्यः शुक्ररेता शुक्लाम्बरधरः सुधीः।
हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः।।१।।
नीतिज्ञो नीतिकृत् नीतिर्मार्गगामी ग्राहाधिपः।
उशना वेदवेदाङ्गपारगः कविरात्मवित्।।२।।
भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञानस्यगम्यः सुतप्रदः।
शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत्।।३।।
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीं वसतिमुत्तमाम्।
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति च।।४।।

अथ शुक्रकवचस्तोत्रम्

विनियोगः–

अस्य श्रीशुक्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य भारद्वाज ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

मृणालकुन्देन्दुपयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम्।
समस्तशास्त्रार्थनिधिं महान्तं ध्यायेत्कविं तु वाञ्छितमर्थसिद्धये।।१।।
ॐ शिरो मे भार्गवः पातु भालं पातु ग्रहाधिपः।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः।।२।।
पातु मे नासिकां काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः।
वचनं चोशनाः पातु कण्ठं श्रीकण्ठभक्तिमान्।।३।।
भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनोव्रजः।
नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः।।४।।
कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरू मे सुरपूजितः।
जानुं जाड्यहरः पातु जङ्घे ज्ञानवतां वरः।।५।।
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वाराम्बरः।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु स्वर्णमालापरिष्कृतः।।६।।
य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः।।७।।

[शनि]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

शुक्र ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फल, कस्तूरी, काली गौ, भैंस, खड़ाऊँ का दान मध्याह्न काल में करना चाहिए।

इसके धारण करने का रत्न नीलम अथवा काले घोड़े के पैर की नाल की अँगूठी है। इसे शनिवार के दिन उँगली में धारण करना चाहिये। रत्न के अभाव में अम्लवेत की जड़ को काले कपड़े या धागे में लपेट कर दाहिनी भुजा या कण्ठ में धारण करने के साथ नित्य शनैश्चरस्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शनि का यन्त्र-मन्त्रादि

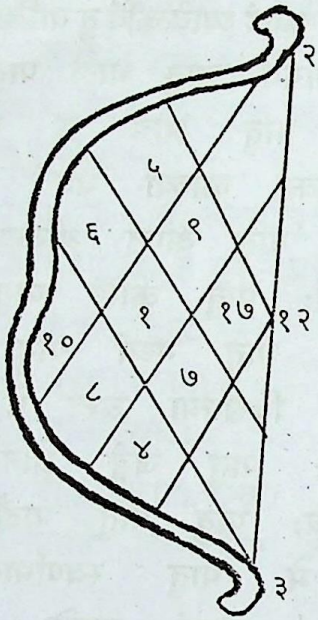

अर्काद्रिमन्वास्मररुद्रअंका नगाख्य-तिथ्या दश मन्दयन्त्रम् ।
विलिख्य भूर्जोपरि धार्य-विद्वच्छनेः कृ तारिष्टनिवारणाय ।।

पुराणोक्त शनि जप मन्त्र

ह्रीं नीलञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यामग्रजम् ।
छायामार्ताण्ड-संभूतं तं नमामि शनश्चरम् ।।

वैदिक शनि मन्त्र

ॐ शमग्निरित्यस्यरिंविठिः ऋषिः, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र

१. प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शनि गायत्री मन्त्र

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्

विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः शनैश्चरोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिङ्गल मन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।१।।
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।२।।
नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतङ्गभृङ्गा।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।३।।
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्ययन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मैः।।४।।
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहिन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।५।।
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुपयजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।६।।
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।७।।
स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।८।।
शन्यष्टके यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते।।९।।
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।१०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतानि दशनामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद्भविष्यति।।११।।

[राहु]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

राहु ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला फूल, तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप का रात के समय दान करना चाहिए।

इसके धारण करने का रत्नं गोमेद है। रत्न के अभाव में सफेद चन्दन को धारण करने के साथ नित्य राहुस्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

राहु का यन्त्र-मन्त्रादि

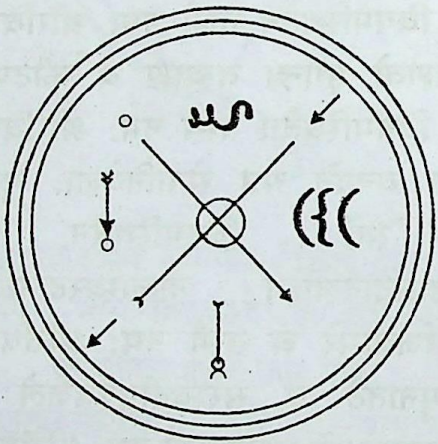

विश्वाष्टतिथ्या मनुसूर्यदिश्या खगमहीद्रैकदशांककोष्ठे ।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्य राहोः कृतरिष्टनिवारणाय ।।

पुराणोक्त राहु मन्त्र

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहूं प्रणामाम्यहम् ।।

वैदिक राहु मन्त्र

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहु गायत्री, राहुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदसावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।।

तंत्रोक्त मन्त्र

१. भ्रां भ्रीं सौं सः राहवे नमः।

२. ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

राहु गायत्री मन्त्र

ॐ शिरो रूपाय विद्महे, अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

अथ राहुस्तोत्रम्

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः।।१।।
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः।।२।।
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुंतुदः सैंहिकेयो धोररूपो महाबलः।।३।।
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः।।४।।
यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रिय धान्यं पशूंस्तथा।।५।।
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः।।६।।

[केतु]

दान एवं धारण करने की वस्तुएँ

ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए लहसुनियाँ, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, शस्त्र का दान रात्रि के समय करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके धारण करने का रत्न लहसुनियाँ नग या लाजवर्त नग है। रत्न के अभाव में असगन्ध की जड़ को काले कपड़े या धागे में गले अथवा दाहिनी बाँह में धारण करने के साथ नित्य केतुकवचस्तोत्र का पाठ करना चाहिए

केतु का यन्त्र-मन्त्रादि

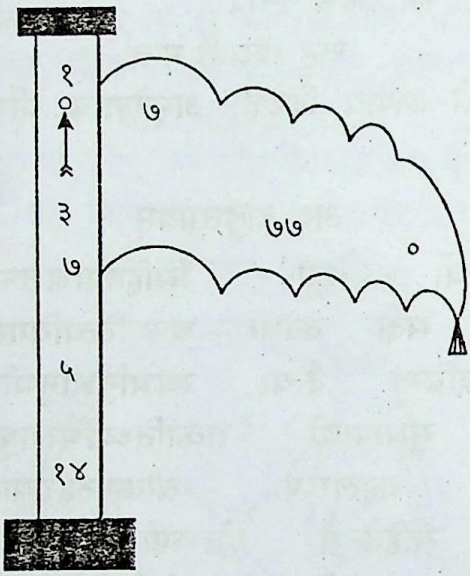

मनुखेचर-भूपातिथि-विश्व-शिवा दिग्सप्तादशसूर्यमिता ।
क्रमतो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्य नरा दुःखनाशकराः ।।

पुराणोक्त केतु मन्त्र

ह्रीं पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह-मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

वैदिक केतु मन्त्र

ॐ केतु कृण्वन्नित्यस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः, केतुर्देवता गायत्रीछन्दः, केतुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिर-जायथाः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन्त्रोक्त मन्त्र

१. स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

२. ॐ ह्रीं केतवे नमः।

केतु गायत्री मन्त्र

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

अथ केतुकवच स्तोत्रम्

विनियोगः–

अस्य श्रीकेतुकवचस्तोत्रमन्त्रस्य त्र्यम्बकः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, केतुर्देवता, कं बीजम्, नमः शक्तिः, केतुरिति कीलकम् केतुप्रीत्यर्थे जये विनियोगः।

केतुं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम्।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम्।।१।।
चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्रसमद्युतिः।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्तलोचनः।।२।।
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः।।३।।
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः।।४।।
ऊरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽतिकोपनः।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गं नरपिङ्गलः।।५।।
य इदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम्।
सर्वशत्रुविनाशं च धारणाद्विजयी भवेत्।।६।।

अथ सर्वग्रहशान्तिकरं नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।२।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।३।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।४।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।५।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।६।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।७।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।८।।
पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।९।।
इति व्यासमुखोद्गीतं पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।१०।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।११।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।१२।।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ विविध रोग दोषादि निवारक तन्त्र ❀

[ज्वर नाशक तन्त्र]

○ शनिवार को प्रातःकाल बबूल की सफेद जड़ को सफेद धागे में लपेट कर हाथ पर बाँधने से ज्वर उतर जाता है।

○ मकोय की जड़ को कान में बाँधने से भी ज्वर में आराम मिलता है।

○ जिस व्यक्ति को केवल रात्रि में ही ज्वर होता हो उसके सिर पर कमल की जड़ रख देने से शीघ्र आराम मिलता है।

○ सफेद जयंती की जड़ को सिर पर धारण करने से किसी भी प्रकार का ज्वर नष्ट हो जाता है।

○ सात दिनों तक काली तुलसी की पत्तियों की माला गले में धारण करने से ज्वर उतर जाता है।

○ रोगी के पैर के नाखून से सिर बराबर लाल सूती धागा नाप कर उसमें नील की जड़ लपेट कर कमर में बाँधने से तिजारी ज्वर उतर जाता है।

○ ऐसी कन्या जिसको माहवारी प्रारम्भ न हुई हो यदि रोगी के दाहिने हाथ में सफेद सूत में लिपटी सहदेई की जड़ बाँध दें तो भूत के भय से उत्पन्न ज्वर नष्ट हो जाता है।

○ लहसुन की एक गाँठ को पीसकर काले कपड़े में बाँध लें। वह कपड़ा रोगी के बाएँ पैर के अंगूठे में बाँध दें। इससे ज्वर उतर जाता है। ज्वर उतरने के बाद लहसुन बँधा कपड़ा खोलकर किसी चौराहे पर फेंक देना चाहिए।

○ कमल की टहनी के छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी धागे में पिरो लें। उसे माला की तरह गले में पहनने से सन्निपात ज्वर ठीक हो जाता है।

[सिर दर्द निवारक तन्त्र]

○ रविवार को कच्चे नारियल का पानी निकालकर खड़े होकर मात्र चार घूँट पीयें। नारियल का थोड़ा पानी चुल्लू में लेकर अपने सिर पर डालें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बचे हुए नारियल पानी को नाक के दोनों नथुनों से ऊपर खीचें। किसी भी तरह का सिरदर्द हो ठीक हो जाएगा।

○ देशी घी में निर्मित गरम जलेबियाँ और उसकी चाशनी प्रतिदिन प्रात:काल कुछ दिन खाने से आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है।

○ प्रात:काल किसी चौराहे पर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके गुड़ की डली दाँतों से काटकर फेंकने से आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है।

○ संगे-पन्ना रत्न को चाँदी की अँगूठी में बनाकर दाएँ हाथ की कनिष्ठिका में पहनने से आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है।

○ बुधवार के दिन गाय को हरी सब्जी खिलाएं। इससे आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है।

○ घुंघची (सफेद चिरमिटी) की जड़ को रोगी के कान में बाँध दें। उसे ताजे पानी में पीसकर सुंघाए। इससे सिरदर्द में आराम मिलता है।

[हिचकी आना]

○ रीठे के फल को धागे में गूँथकर बच्चे के गले में बाँध देने से बच्चे को हिचकी नहीं आती और उसे नजर भी नहीं लगती।

○ दूध पिलाने वाली माँ या धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा काटकर पानी में भिगोकर बालक के सिर पर रख देने से हिचकी दूर हो जाती है।

[पतले दस्त अर्थात् अतिसार]

○ गुरु यन्त्र के समक्ष गुरु के मन्त्र का जप करें। इससे अतिसार ठीक हो जाता है।

○ काले अकीक को चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर मध्यमा में पहनें। इससे अतिसार ठीक हो जाता है।

[चेचक का इलाज एवं सुरक्षा]

○ साफ कोरे सूत में बहेड़े की गुठली बाँधकर भुजा में धारण करने से शीतला के प्रकोप का भय नहीं रहता।

○ शाम के समय नीम के सूखे पत्तों को कण्डों की आग पर डालकर उसकी धूनी पूरे घर में दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ नीम की टहनियों को कलावे में बाँधकर बन्दनवार बनाएं और उन्हें घर के सभी दरवाजों पर बाँध दें।

[चर्म रोग निवारक तन्त्र]

○ लाल चन्दन की माला पर सूर्य मन्त्र का जप करने से चर्म रोग ठीक हो जाता है।

○ ताँबे की अँगूठी में गारनेट पहनने से भी चर्म रोग ठीक हो जाता है।

[बवासीर नाशक तन्त्र]

○ शनिवार को बबूल के पेड़ पर उगे बंदा बूटी को निमन्त्रण देकर रविवार को प्रातः ले आएं। एक काले कपड़े में बूटी को सिलकर लाल धागे में रोगी के कमर में बाँध दें। इसके बंधे रहने से पुरानी बवासीर ठीक होगी और फिर कभी नहीं होगी।

○ काले धतूरे की जड़ (लगभग छह माशा) कमर में बाँधने बवासीर ठीक हो जाता है।

○ जवासे के काँटों का आसन बनाकर उस पर सफेद सूती वस्त्र बिछा दें। उन काँटों को पत्थर के टुकड़े से दबा दें जिससे बैठने पर काँटे चुभे नहीं। उस आसन पर कुछ देर रोगी को रोज बैठाने से बवासीर ठीक हो जाता है।

○ सीसे (रांगा) की अँगूठी पैर के अंगूठे में पहनने से बवासीर रोग में आराम मिलता है।

[मिरगी रोग निवारक तन्त्र]

○ रेशम के धागे में जायफल को पिरोकर बनाई गई माला पहनाने से मिरगी रोग ठीक हो जाता है।

○ ब्रह्मबूटी जड़ी को उखाड़ कर उसे कच्चे सूत में बाँध लें। उसकी माला गले में धारण करने से मिरगी का दौरा ठीक हो जाएगा।

○ एक जायफल को लाल धागे में गले में पहनने से मिरगी रोग ठीक हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ सूर्ययन्त्र धारण करने से भी मिरगी रोग ठीक हो जाता है।

○ जूता सुंघाने से भी मिरगी का दौरा शान्त हो जाता है।

○ एक तोले असली हींग को कपड़े में बाँधकर गले में पहनाने से मिरगी का रोग ठीक हो जाता है।

[जिगर-तिल्ली और अफारा]

○ नागफनी की जड़ को गले में गंडे या ताबीज के रूप में पहनाने से अफारा, जिगर एवं तिल्ली का रोग ठीक हो जाएगा।

[फोते छिटकना]

○ पूर्व दिशा में उत्पन्न संभालू की जड़ को बच्चे के गले में पहनाने से फोते अपने स्थान पर बैठ जाते हैं और किसी प्रकार की पीड़ा भी नहीं होती है।

[हृदय रोग निवारक तन्त्र]

○ सायंकाल किसी ताम्रपात्र में जल भरकर उसमें एक पंचमुखी रुद्राक्ष डाल कर रख दें। सुबह खाली पेट उस जल को पी लें। यह कार्य प्रतिदिन करें। इससे हृदय रोग में आराम मिलता है।

○ प्रत्येक शनिवार को गाय को गेहूँ और गुड़ खिलाएं। इससे हृदय रोग में लाभ मिलता है।

○ नियमित रूप से ४३ दिन ताँबे के चौकोर टुकड़े को नदी में प्रवाहित करें। इससे किसी भी तरह के हृदय रोग में आराम होता है।

○ पंचमुखी रुद्राक्ष को इतने लंबे धागे में पिरोकर पहनें कि वह हृदय तक पहुँच जाए। इससे हृदय रोग ठीक हो जाता है।

[दमा रोग निवारक तन्त्र]

○ शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से तीन सोमवार तक लगातार सफेद रुमाल में मिश्री और एक चाँदी का टुकड़ा बाँध कर किसी नदी में प्रवाहित करें। शिवजी के समक्ष के आटे का दीपक कपूर मिश्रित घी में जलाएं। ऐसा करने से दमा एवं समस्त श्वास सम्बन्धी रोग ठीक हो जाएंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ रविवार को एक पात्र में जल भरकर उसमें एक चाँदी की अँगूठी डाल दें। सोमवार को उस जल को खाली पेट पियें। इससे दमा ठीक हो जाता है।

[पथरी रोग निवारक तन्त्र]

○ केले के वृक्ष की छाल का रस निकाल लें। इसका गाय के दूध के घी के साथ सेवन करें। इससे पथरी रोग में आराम मिलता है।

○ वरुण वृक्ष के नीचे दिन में सोने से पथरी धीरे-धीरे गल जाती है।

[पीलिया निवारक तन्त्र]

○ रविवार से शनिवार तक एक सप्ताह दिन में तीन बार एक बड़ी तोरई के छोटे-छोटे टुकड़े करके उसे सूँघे और सिर के ऊपर से पीछे फेंक दें। बाद में ये टुकड़े किसी तालाब के किनारे फेंक दें। इससे पीलिया ठीक हो जाता है।

○ पीलिया के साथ तपेदिक और संग्रहणी के लक्षण भी प्रकट हो गये हों तो लोहे की कड़ाही में उपले की आग से धीरे-धीरे औटाया हुआ बकरी का दूध रोगी को पिलायें। इससे उसके स्वास्थ्य में सुधार होता है।

○ कच्ची लाल प्याज की माला को पहनने से पीलिया रोग ठीक हो जाता है।

○ रविवार को बाँस के ककौड़े की गाँठ को रोगी के समीप जलते चूल्हे पर बाँध दें। जैसे-जैसे गाँठ सूखती जाएगी रोगी को आराम मिलेगा।

[रक्तचाप निवारक तन्त्र]

○ रुद्राक्ष के पाँच दाने लाल धागे में गले में पहनने से रक्तचाप ठीक रहता है।

○ सोने से पहले फिटकिरी से दाँत साफ करने से रक्तचाप में अराम मिलता है।

○ चाँदी की अँगूठी में पन्ना जड़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में पहनें। इससे रक्तचाप में आराम मिलता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कामशक्ति वर्धक तन्त्र]

○ कमलगट्टे को पीसकर नाभि के ऊपर लेप करके सहवास करें तो जब तक लेप रहेगा तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

○ फिटकिरी की डली को सफेद सूत में कमर में बाँधकर सहवास करने से अधिक देर तक स्तम्भन होता है।

○ सफेद आम के वृक्ष की जड़ को कमर में बाँधकर सहवास करने से बहुत देर तक स्तम्भन होता है।

○ तुलसी के बीज का चूर्ण पान रखकर खाने के बाद सहवास करने से सात घड़ी तक वीर्य स्खलित नहीं होता है।

[लकवा रोग निवारक तन्त्र]

○ नीलम को लोहे की अँगूठी में मध्यमा में एवं लहसुनिया को चाँदी की अँगूठी में कनिष्ठिका में पहनें। इससे लकवा के रोग में आराम मिलता है।

○ पीपल की जड़ के टुकड़े को काले कपड़े में बाँधकर लकवा पीड़ित व्यक्ति के सिर के नीचे रख दें। इससे लकवा रोग से आसानी से मुक्ति मिल जाती है।

[दाँत दर्द निवारक तन्त्र]

○ किसी छोटे लड़के का दूध का दाँत टूटे तो उसे ताबीज में भर लें। उसे गले में पहनने से दाँत का दर्द ठीक हो जाता है।

○ गाय के सूखे गोबर को दाँतों और मसूड़ों पर मलने से दाँत दर्द ठीक हो जाता है।

○ हरड़ के चूर्ण को शहद में मिलाकर भूनें। इसे गुटके की तरह दाँतों के नीचे रखने से दाँतों के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

○ दाँतला नामक रत्न को चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर अनामिका में धारण करें। इससे दाँत का दर्द ठीक हो जाता है।

[सर्प विषनाशक तन्त्र]

○ हीरा अथवा फिरोजा पहनने वाले व्यक्तियों को विषैले जन्तुओं से खतरा नहीं होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ घर में निर्गुण्डी की जड़ रखने से सर्प का भय नहीं होता।

○ रात को सोने से पहले 'आस्तीक' नामक सर्प को नित्य प्रणाम करने से सर्प का भय नहीं रहता।

○ मोर के पंखों को घर में रखें। इससे सर्प का भय समाप्त हो जाता है।

○ नीम के पत्तों को बिछाकर उस पर साँप काटे व्यक्ति को सुला देने से विष उतर जाता है।

[मधुमेह नाशक तन्त्र]

○ रात्रि में कुश की चटाई पर सोने से मधुमेह रोग में आराम मिलता है।

○ पिसी हल्दी में आँवले का रस और शहद मिलाकर चाटने से मधुमेह रोग में लाभ मिलता है।

○ अनामिका में सफेद मूँगा और तर्जनी में सफेद पुखराज पहनने से मधुमेह ठीक हो जाता है।

[कुष्ठ रोग निवारक तन्त्र]

○ शनि के यन्त्र को धारण करने से भी कुष्ठ रोग में आराम मिलता है।

○ शनिवार को पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर शनि स्तवराज का पाठ करें। इससे कुष्ठ रोग में आराम मिलता है।

[सन्तान प्राप्ति के तन्त्र]

○ यदि कन्या के बाद पुत्र की कामना हो तो उत्पन्न हुई कन्या की विधिवत् पूजा करें। उसे नमस्कार करके बन्धु-बान्धवों को खीर, जलेबी का भोजन करायें। इससे पुत्र अवश्य प्राप्त होता है।

○ नीबू की जड़ को दूध में पीसकर उसमें शुद्ध देसी घी मिला लें। इसके सेवन से पुत्र प्राप्ति होती है।

○ काली अपराजिता की जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीस लें और रजोधर्म के पश्चात् निरन्तर तीन दिन तक पियें तो गर्भधारण होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ जिस स्त्री के पहली सन्तान लड़का हो, उस लड़के की नाल जो नि:सन्तान स्त्री खोलेगी उसे सन्तान की प्राप्ति अवश्य होगी।

[पीड़ा रहित प्रसव कराने के तन्त्र]

○ चकमक पत्थर को कपड़े में लपेट कर गर्भवती स्त्री की जंघा पर बाँध दें। इससे सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

○ केले की जड़ या हुलहुल की जड़ को गर्भिणी स्त्री की बाँह में बाँध देने से उसे प्रसव के समय कष्ट नहीं होता है।

○ सूर्यमुखी और पाटल की जड़ में सूती धागे की पाँच गाँठ देकर निर्मित गंडे को स्त्री के गले में पहनाने से उसे बिना कष्ट के प्रसव होता है।

○ स्त्री की कमर में नीम या बाँस की जड़ बाँध देने से प्रसव सुख से हो जाएगा।

[हिचकी रोकने के तन्त्र]

○ कोई तनाव देने वाली झूठी बात बताने से भी हिचकी ठीक हो जाती है।

○ रोगी के मुँह पर अचानक ठंडे पानी का छींटा मारे। इससे हिचकी ठीक हो जाती है।

○ अचानक डराने से भी हिचकी ठीक हो जाती है।

[पेट के विविध रोग निवारक तन्त्र]

○ लगातार ४३ दिनों तक किसी नदी में गुड़ प्रवाहित करें। इससे अजीर्ण एवं अम्लता रोग से मुक्ति मिलती है।

○ ताँबे में लाल जैस्पर मंगलवार को अनामिका में पहनें। इससे अजीर्ण एवं अम्लता रोग में लाभ मिलता है।

[घबराहट रोकने का तन्त्र]

○ यशव का ताबीज गले में पहनें। इससे भ्रम, बैचेनी और घबराहट ठीक हो जाती है।

[गर्भ न ठहरने के तन्त्र]

○ राई के दाने बराबर पुरुष के कान का मैल और बाकले का एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाना छोटे पश्मीने के टुकड़े में डालकर गले में पहनने पर स्त्री के गर्भ नहीं ठहरेगा।

○ बच्चे का दूध का टूटा हुआ दाँत जमीन पर गिरने से पहले ही ताबीज में धारण करने वाली स्त्री कभी गर्भवती नहीं होगी।

○ मासिक धर्म के पश्चात् पाँच दिनों तक लगातार पान की जड़ का रस पीने से गर्भ नहीं ठहरता।

[मूत्र बंदी निवारक तन्त्र]

○ यदि किसी का मूत्र रुक जाए तो हत्थाजोड़ी को पानी के साथ घिसकर वस्ति पर लेप करें। इससे शीघ्र ही मूत्र हो जाएगा।

○ सेंधा नमक मलमार्ग पर रखकर कसकर लंगोट से बाँधें। इससे मूत्र रुकना ठीक हो जाता है।

[गर्भपात रोकने के तन्त्र]

○ जिस स्त्री का बार-बार गर्भपात हो जाता है उसे कुसुम के पुष्प में रंगे सूती कपड़े में एक साबूत करंजवे को बाँधकर सुखपूर्वक प्रसव होने तक धारण करना चाहिए। तत्पश्चात् इस गंडे को किसी जलाशय के किनारे छोड़ आना चाहिए।

○ जिस स्त्री का गर्भ बार-बार समय से पूर्व गिर जाता है उसे गर्भवती होने पर ढाक के सात नए और साफ पत्ते प्रतिमाह के क्रम से (प्रथम माह सात पत्ते, दूसरे माह छह पत्ते, तीसरे माह पाँच पत्ते, चौथे माह चार पत्ते, पाँचवे माह ३ पत्ते, इसी प्रकार हर माह एक पत्ता घटाकर) गाय के दूध के साथ सेवन करने से गर्भपात नहीं होगा।

[मोटापा बढ़ाने के तन्त्र]

○ सम्हालू की जड़ को पीसकर शुद्ध घी के साथ नित्य सेवन करें। इससे दुबला व्यक्ति शीघ्र मोटा और स्वस्थ हो जाता है।

○ चार जौ के बराबर गोरोचन बादाम के साथ खायें। इससे शीघ्र ही मोटापा बढ़ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[आँख का जाला ठीक करने का तन्त्र]

○ काली कौड़ी को गुलाबजल में घिसकर आँखों में लगाने से आँखों का जाला ठीक हो जाता है। इससे आँखों की रोशनी भी ठीक हो जाती है।

[घाव ठीक करने का तन्त्र]

○ हुक्के के बासी पानी से नासूर को एक सप्ताह तक धोयें। घाव धोया हुआ पानी किसी चौराहे पर छोड़ आयें। इससे नासूर सूख जाता है।

○ काली कौड़ी को पीसकर घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

[बालक का कम बोलना ठीक करने वाला तन्त्र]

○ कौए की जूठन खिलाने से कम बोलने वाला बालक धाराप्रवाह बोलने लगता है।

[बिच्छू विषनाशक तन्त्र]

○ बेर, पलाश और पावड़ा को महीन पीस लें। इनको आक के दूध में मिलाकर छोटी-छोटी गोली बना लें। बिच्छू के काटे हुए स्थान पर गोली घिसकर लगाने से विष उतर जाता है।

○ कड़वे नीम के पत्तों या कसोंदी के पत्तों को चबाकर कान में फूँकने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

[चोर भय से मुक्ति के तन्त्र]

○ भरणी नक्षत्र काल में पान का पत्ता लाएं। सुपारी एवं कत्था डालकर बीड़ा बनायें। बीड़े को चोरी वाले स्थान पर रख दें। इससे चोरी की गई वस्तु मिल जाती है।

○ शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र काल में श्वेत गुंजा की जड़ लाकर बिस्तर पर रख दें। इससे चोर का भय नहीं रहता।

[दुर्घटना से रक्षा करने वाले तन्त्र]

○ शनिवार को काले रंग की पोटली में काले तिल, उड़द, सुपारी एवं सिंदूर रखकर उसे अपने वाहन के आगे बाँध दें। इससे दुर्घटना से रक्षा होती है।

○ कटैला से निर्मित कुत्ते को वाहन में रखने से दुर्घटना से बचाव होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[विपत्ति नाशक तन्त्र]

○ एक भोजपत्र पर 'टं' बीज मन्त्र लिखकर उसे ताबीज में भर लें। उसे दाहिने हाथ में बाँधें। यह सभी विघ्नों एवं विपत्तियों को समाप्त करता है।

○ घर या ऑफिस में नौ मोरपंख लगायें। ये विपत्तियों से रक्षा करते हैं।

[भूत बाधा एवं जादू टोना नाशक तन्त्र]

○ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र काल में बहेड़े का पत्ता लाकर घर में रखें। इससे किसी भी प्रकार के टोटके का असर नहीं होता।

○ लहसुन के रस में हींग घोलकर सुंघाने से भूत-प्रेत का प्रकोप समाप्त हो जाता है।

[शस्त्राघात से बचाने वाला तन्त्र]

○ सुदर्शन की जड़ अथवा सफेद घुंघची की जड़ अथवा अपामार्ग की जड़ को धागे से बाँधकर हाथ में पहनें। इससे शस्त्राघात से रक्षा होती है।

[आयुवर्धक तन्त्र]

○ घर में बाँस का पौधा लगाने से परिवार के सदस्यों की आयु बढ़ती है।

○ काले धतूरे के पौधे पर जल चढ़ाने से अकाल मृत्यु नहीं होती है और आयु बढ़ती है।

[धन लाभ के तन्त्र]

○ पुष्यार्क योग में सफेद मदार (आक) की जड़ को ले आएं। उसे द्रव्य के साथ पूजाघर में रखने से लाभ होता है।

○ त्रिगुण्डी और सफेद सरसों घर या दुकान के मुख्य द्वार पर रखने से व्यापार में लाभ होता है।

[कुत्ता काटने पर तन्त्र]

○ कुत्ता काटने पर काटने वाले कुत्ते के बाल जलाकर घाव पर लगा देने से विष का प्रभाव कम हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[भोजन को नजर से बचाने का तन्त्र]

○ खाना खाने से पहले भूमि, मेज या चौकी पर जल से त्रिकोण बनाकर उस पर थाली रखें। ऐसा करने से किसी के सामने भोजन करने पर नजर नहीं लगती।

[खाना कम न पड़ने का तन्त्र]

○ खाना बनाने के बाद भोजन को कपड़े से ढककर रख दिया जाए और अंत तक कपड़ा न हटाया जाए तो भोजन कम नहीं पड़ता।

[बर्रे, मधुमक्खी काटने पर तन्त्र]

○ बर्रे या मधुमक्खी काटने पर चूने का पानी लगाने से जलन, सूजन और विष का प्रभाव नहीं रहता।

○ बर्रे काटने पर पीड़ित व्यक्ति को शहद खिलाएं। इससे जलन, सूजन और विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

[अफीम एवं शराब का नशा उतारने के तन्त्र]

○ नारियल की गिरी खिलाकर दूध पिलाने से शराब का नशा उतर जाता है।

○ मूली और फिटकरी को पानी में घिसकर पिलाने से शराब का नशा उतर जाता है।

○ सीताफल के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का नशा उतर जाता है।

[गंजापन दूर करने के तन्त्र]

○ शहद और चिरचिटी के बीजों को पीसकर सात दिन तक लगायें। इससे गंजापन दूर हो जाता है।

○ खुरासानी, अफीम और अजवाइन आधा ग्राम लेकर सिरके में पीस लें। इसे पाँच-सात बार लगायें। इससे गंजापन दूर हो जाता है।

[स्त्री रोग संबंधी तन्त्र]

○ शुक्रवार को एरंड की जड़ सफेद धागे में बाँधकर कमर में पहनें। इससे प्रदर रोग ठीक होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में व्याघ्रनखी की जड़ उखाड़ लें। इसे सफेद धागे से बाँधकर प्रदर रोग से पीड़ित स्त्री की कमर में बाँध दें। इससे प्रदर रोग ठीक हो जाता है।

○ चाँदी की अँगूठी में हीरा जड़वा कर पहनें। इससे भी प्रदर रोग में आराम होता है।

[मिचली रोकने के तन्त्र]

○ बुध यन्त्र को धारण करें। बुध के मन्त्र का जप करें। इससे भी मिचली ठीक हो जाती है।

○ बड़ी सुपारी के बराबर सोनाग्रेस्न के सात टुकड़ों को कंडों पर तपाकर सात कटोरी पानी में बुझाकर पीने से लाभ होता है।

[खांसी ठीक करने का तन्त्र]

○ लोबान के पौधे की जड़ को धागे में बाँधकर गले में धारण करें। इससे खांसी ठीक हो जाती है।

○ सफेद सरसों (शरपुंखा) की जड़ को चिलम में रखकर पीने से खांसी ठीक हो जाती है।

[रक्तदोष निवारक तन्त्र]

○ प्रतिदिन स्नान करने के बाद कटसरैया (पियावांसा) के पीले फूलों की माला रोगी गले में धारण करें। इससे रक्तदोष दूर हो जाता है।

○ सम्हालू की जड़ को पीसकर उसमें शहद मिला लें। उसका सेवन करने से रक्तदोष ठीक हो जाता है।

[अनिद्रा रोग निवारक तन्त्र]

○ बकरी का दूध हाथ पैर पर मलें। इससे अनिद्रा रोग ठीक हो जाता है।

○ कौंच की जड़ पीसकर माथे पर लेप करने से अनिद्रा रोग ठीक हो जाता है।

○ श्वेत गुंजा की जड़ को सिरहाने रखकर सोयें। इससे अच्छी नींद आती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कमर दर्द निवारक तन्त्र]

○ तकिये के नीचे काले कपड़े में लपेटकर पीपल की जड़ रख लें। इससे कमरदर्द ठीक होता है।

○ उल्टी पैदा होने वाली स्त्री दर्द वाले स्थान पर हाथ या पैर से ७बार मार दे तो दर्द ठीक हो जाता है।

[स्वप्नदोष निवारक तन्त्र]

○ शुक्र यन्त्र का नियमित दर्शन करें और शुक्र मन्त्र का जप करें। फिरोजा धारण करें। इससे स्वप्नदोष नहीं होता।

○ काले धतूरे की जड़ को ताबीज में भरकर धागे से कमर में बाँधने से स्वप्नदोष ठीक हो जाता है।

[कान दर्द निवारक तन्त्र]

○ मंडूर के टुकड़े को कमल की डंठल से बाँधकर कान पर लटका दें। इससे कान दर्द ठीक हो जाता है।

[होंठों के रोगनाशक तन्त्र]

○ लोबान, गुग्गुल, मुलहठी और देवदारु को पीसकर होंठों पर लगायें। इससे वायु के कारण होने वाले होंठों के रोग ठीक हो जायेंगे।

[सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति के तन्त्र]

○ रोगी के पलंग के पाये में अभिमन्त्रित गोमती चक्र को चाँदी के तार से बाँध दें। इससे सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।

○ कोई भी रोग हो उसकी दवा को पहले शिव मंदिर में चढ़ाकर भगवान से शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करें। इसके बाद उस औषधि का सेवन करें। इससे औषधि रामबाण का कार्य करती है।

○ रोगी के पीने वाले जल में थोड़ा-सा गंगाजल मिला लें। इस जल को पीने से उसके सभी रोग ठीक हो जायेंगे।

○ चुटकी भर हींग अपने ऊपर से ७बार उतारकर उत्तर दिशा में फेंकें। इससे सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ श्वेत आक की जड़ को गले में पहनने से सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।

[डर समाप्त करने का तन्त्र]

○ ताँबे के लोटे में जल भरकर उसमें गुड़हल का पुष्प डाल दें। इस लोटे को ढककर सिरहाने चारपाई के नीचे रख दें। प्रातः उठकर गुड़हल का पुष्प सूर्य देवता को चढ़ायें। इससे डर लगना बंद हो जाता है।

○ सात सफेद धागे को मिलाकर बटें। उसे धागे में चन्द्रमा डालकर गले में धारण करें। इससे डर नहीं लगता।

○ कभी-कभी अकारण ही भय लगने लगता है। ऐसा हो तो शनिवार को सवा पाव काला तिल काले कपड़े में बाँधकर सात बार पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से उतार लें। इसे किसी नदी में प्रवाहित करें। इससे डर लगना बंद हो जाएगा।

[दुर्भाग्य को दूर करने का तन्त्र]

○ शनिवार को कटोरी में सरसों का तेल और सिक्का डालकर उसमें अपनी परछाई देखें और तेल दान कर दें।

○ चीटियों को भुने हुए आटे में चीनी का बूरा मिलाकर बनाई गयी पंजीरी खिलाएं।

○ भगवान शिव पर नित्य प्रातः जल चढ़ाने, प्रत्येक सोमवार को दीपक जलाने और प्रदोष का व्रत करने से ऋण से शीघ्र मुक्ति मिल जाती है।

○ प्रत्येक शुक्रवार को निर्धनों में चना एवं गुड़ बाँटने से रोजगार की बाधा दूर होगी।

○ घर, दुकान अथवा कार्यालय में गाय के आगे खड़े होकर वंशी बजाते हुए भगवान् कृष्ण का चित्र रखने पर कर्जा नहीं चढ़ता और धन डूबने की सम्भावना भी कम रहती है।

[व्यवसायिक सफलता का तन्त्र]

○ दुकान खोलने से पहले मुख्य द्वार पर गंगाजल छिड़कें। इससे व्यवसाय में लाभ मिलता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ कपूर और रोली को जलाएं। उसकी राख को गल्ले में रखें। इससे व्यापार में दिनोदिन उन्नति होती है।

○ नारियल को लाल वस्त्र में लपेट कर दुकान में रखें। इससे व्यवसाय में प्रगति होती है।

○ काले तिल और सफेद सरसों को दुकान के मुख्य द्वार पर रखने से व्यवसाय में सफलता मिलती है।

○ श्रीयन्त्र को कमलगट्टे की माला पर रखने से व्यवसाय में उन्नति होती है।

[पारिवारिक सुख-शान्ति के लिए तन्त्र]

○ शनिवार को उड़द, सरसों का तेल, लोहे का बर्तन एवं काला वस्त्र दान करें। इससे दाम्पत्य जीवन का तनाव समाप्त हो जाएगा।

○ बुधवार को कुछ देर मौन व्रत रहने से पति-पत्नी में विवाद नहीं होता है।

○ शयन कक्ष में मोर पंख लगाने से पति पत्नी के मन में एक-दूसरे के लिए शंका नहीं होती है।

○ घर में इत्र की शीशी खरीद कर रखने से पति पत्नी में विवाद नहीं होता है।

○ डबल बेड पर कभी दो गद्दे न बिछाएं। एक ही बड़ा गद्दा बिछाएं। इससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

[अभिचार कर्म निवारक तन्त्र]

○ श्वेत अपामार्ग की जड़ को पीस कर उससे माथे पर तिलक करें। इससे सम्मोहन का असर समाप्त हो जाता है।

○ महीने के प्रथम शनिवार को काले कपड़े में चावल बाँधकर घर के चारों कोनों में रखने से किसी भी तांत्रिक क्रिया का असर नहीं होता।

○ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में बहेड़े का पत्ता लाकर अपने घर में रखें। इससे अभिचार कर्मों का कोई असर नहीं होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मनोकामना पूर्ति के तन्त्र]

○ प्रात:काल किसी मन्दिर में पाँच लाल फूल हनुमानजी को चढ़ाने से सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

○ प्रात:काल पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाकर प्रार्थना करने से मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है।

○ बरगद के पत्ते पर अपनी मनोकामना लिखकर किसी नदी में प्रवाहित करें। इससे मनोकामना शीघ्र पूर्ण हो जाती है।

○ तुलसी के पौधे में जल अर्पित करने से मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

[भयनाशक तन्त्र]

○ सूर्य की पूजा करके सूर्य को जल चढ़ाएं। इससे सभी प्रकार के अनिष्टों का भय समाप्त हो जाता है।

○ रविवार को पुष्य नक्षत्र काल में काले धतूरे की जड़ उखाड़े लें। उसे गले में पहनने से अनिष्ट का भय समाप्त हो जाता है।

○ प्रात:काल लौंग डालकर सरसों के तेल का दीपक जलाएं। उसे किसी निर्जन स्थान में रख दें। इससे सभी प्रकार के भय दूर हो जाएंगे।

○ नियमित रूप से ७ शनिवार सायंकाल पीपल की जड़ में जल चढ़ाएं। इससे अस्त्र-शस्त्र का भय नहीं रहता है।

○ आश्लेषा नक्षत्र में आँवले की जड़ उखाड़ लें। उसे दाहिने हाथ में पहनें। इससे सभी प्रकार का भय समाप्त हो जाता है।

[बुरी नजर से बचाने वाले तन्त्र]

○ काले भांगरे की जड़ को बच्चे के गले में पहनाने से भी बुरी नजर से बच्चे की रक्षा होती है।

○ लहसुन, बाक, राई, नमक, प्याज के छिलके एवं सूखी लाल मिर्च को नजर लगे व्यक्ति पर से सात बार उतारकर अंगारों में डाल दें। जलने पर बदबू न आए तो समझें नजर लगी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ बच्चे को नजर लगने से बचाने के लिए उसके पालने के किसी भाग में एक साबूत लालमिर्च, सिन्दूर, लोहे की एक नुकीली कील तथा साबूत उड़द के कुछ दानें, इन सबको सफेद सूती कपड़े में पोटली बनाकर बाँध देना चाहिए। फिर किसी की कुदृष्टि उसे परेशान न कर पाएगी।

○ रविवार के दिन बच्चे के सिर से तीन बार दूध उतारकर मिट्टी के पात्र में भर दें और दूध कुत्ते को पिला दें।

○ बच्चे को सफेद मदार के फूलों की माला पहनाने से भी नजर लगने का भय समाप्त हो जाता है।

○ एक साबुत नीबू लें। हनुमानजी का स्मरण करते हुए उसे नजर लगे व्यक्ति के सिर से पैर तक उतार लें। फिर किसी चौराहे पर उस नीबू को काटकर चारों ओर फेंक दें। छुरी भी चौराहे पर ही छोड़ दें। इससे किसी भी प्रकार की नजर लगी हो उतर जाएगी।

○ नये वाहन या मशीन पर काले रंग का फीता या चुटिया बाँध देना चाहिए। इससे नजर नहीं लगती।

○ शनिवार के दिन हनुमानजी के मन्दिर से हनुमानजी के कंधों का सिन्दूर लाकर नजर लगे व्यक्ति के मस्तक पर लगा देना चाहिए।

○ दुकान को नजर लगी हो तो रविवार अथवा मंगलवार के दिन सात लाल मिर्च धागे में पिरोएं और बीच में नीबू पिरो दें। इन्हें दुकान के प्रवेश द्वार पर माला की तरह बाँध दें। इससे नजर उतर जाएगी।

○ नजर लगे व्यक्ति के ऊपर से फिटकिरी उतार कर उसे बाएँ हाथ से कूट लें। उस चूर्ण को कुएँ में डाल दें। नजर उतर जाएगी।

[घर के वास्तुदोष निवारक तन्त्र]

○ टायलेट के दरवाजे हमेशा बंद रखने चाहिये।

○ कैक्टस के पौधे घर अथवा ऑफिस में नहीं लगाना चाहिये। इससे रोग, दुर्भाग्य और हानि की संभावना बढ़ती है। कैक्टस के पौधे हमेशा घर एवं ऑफिस के बाहर लॉन में लगाने चाहिये। यह रक्षक की भूमिका निभाता है और बुरी बलाओं से रक्षा करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

○ विवाह के प्रारंभिक वर्षों में शयनकक्ष की दीवारों को गुलाबी अथवा पीच रंग से सजायें।

○ विवाहित जोड़ों को कमरे में रसदार फलों एवं बच्चों के चित्र टाँगने चाहिये।

○ बेडरूम में दर्पण नहीं लगाना चाहिये। यहाँ दर्पण की मौजूदगी विवाहित जोड़े के विवाह और प्रेम को बाधित कर देती है। यदि बेडरूम में दर्पण रखना ही है तो उसे सोते समय ढक देना चाहिये।

○ बैठने के स्थान के पीछे दीवार हो तो इससे स्थायित्व का वातावरण निर्मित होता है।

○ शयनकक्ष में नीले रंग की चादर, वालपेपर अथवा कालीन का प्रयोग कभी न करें।

○ बेडरूम के सामने ही ड्राइंग रूम हो तो ध्यान दें कि फर्नीचर के कोने एक दूसरे के सामने बैठे लोगों की तरफ न हों।

○ शयनकक्ष में डबलबेड का एक ही बड़ा गद्दा बिछाना चाहिये। दो गद्दे बिछाना अनुचित है। इसका दुष्प्रभाव इस पर सोने वाले युगल पर पड़ता है और उनके मधुर संबंधों में कटुता आ जाती है।

✪✪✪

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh